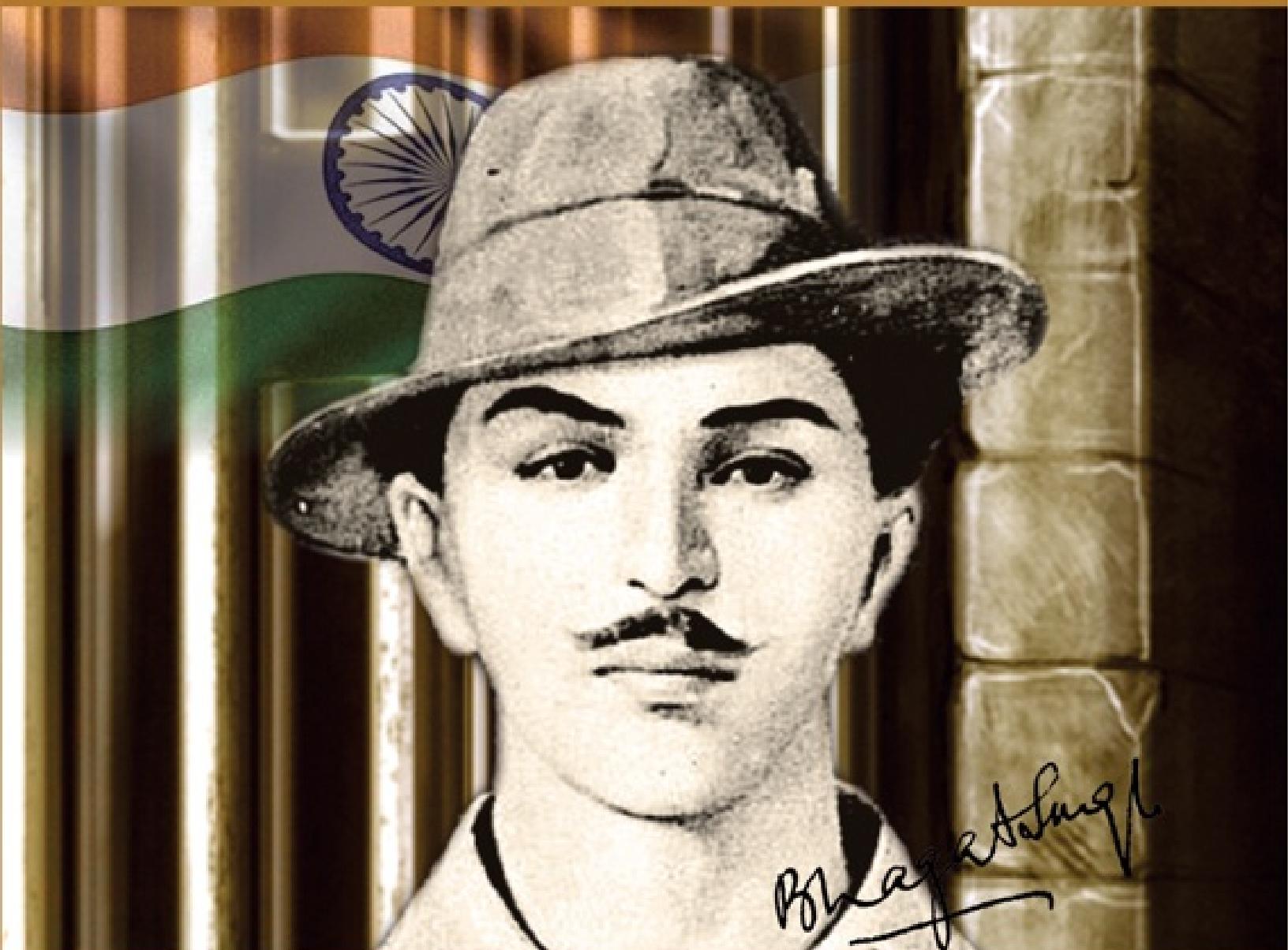


# ਮਗਤ ਸਿੰਹ

## ਜੇਲ ਢਾਈਰੀ



ਪ੍ਰਸ਼ੰਸਨ  
ਧਾਰਵਿੰਦਰ ਸਿੰਹ ਸਂਥੁ  
(ਸ਼ਹੀਦ ਭਗਤਸਿੰਹ ਕੇ ਸੁਪੌਤਰ)

# भगत सिंह

## जेल डायरी

जेल डायरी की मूल प्रति शहीद-ए-आजम भगतसिंह

“वे मुझे मार सकते हैं, मेरे विचारों को नहीं”

प्रस्तुति  
यादविंदर सिंह संधु

(शहीद भगतसिंह के सुपौत्र)

 प्रभात प्रकाशन, दिल्ली  
ISO 9001:2008 प्रकाशक



## स्वर्गीय श्री बाबर सिंह संधु

(शहीद भगतसिंह के भतीजे और श्री कुलबीर सिंह के पुत्र)

“मेरे पिताजी श्री बाबर सिंह संधु की मधुर स्मृति में। शहीद भगतसिंह के बलिदान को जेल में लिखे शहीद ए आजम के विचारों को सामने लाना, उनका सपना था। मेरी कामना है कि उनके बलिदान की यादें लोगों के दिल में फिर से ताजा हो जाएँ।”

## प्रस्तावना

भगतसिंह के बारे में हम जब भी पढ़ते हैं, तो एक प्रश्न हमेशा मन में उठता है कि जो कुछ भी उन्होंने किया, उसकी प्रेरणा, हिम्मत और ताकत उन्हें कहाँ से मिली? उनकी उम्र 24 वर्ष भी नहीं हुई थी और उन्हें फाँसी पर चढ़ा दिया गया। इस पुस्तक से हमें इस प्रश्न का उत्तर पाने में काफी हद तक मदद मिल सकेगी।

लाहौर (पंजाब) सेंट्रल जेल में आखिरी बार कैदी रहने के दौरान (1929-1931) भगतसिंह ने आजादी, इनसाफ, खुदारी और इज्जत के संबंध में महान् दर्शनिकों, विचारकों, लेखकों तथा नेताओं के विचारों को खूब पढ़ा और आत्मसात् किया। इसी के आधार पर उन्होंने जेल में जो टिप्पणियाँ लिखीं, यह पुस्तक उन्हीं का संकलन है। भगतसिंह ने यह सब भारतीयों को यह बताने के लिए लिखा कि आजादी क्या है, मुक्ति क्या है और इन अनमोल चीजों को बेरहम तथा बेदर्द अंग्रेजों से कैसे छीना जा सकता है, जिन्होंने भारतवासियों को बदहाल और मजलूम बना दिया था।

‘जेल टिप्पणियाँ’ एक सुंदर (लाल) कपड़े के आवरण वाली नोटबुक में लिखी गई हैं। इसके 206 लीव्स (404 पृष्ठ) हैं, जिनका आकार 21 से.मी.×16 से.मी. है।

यह एक लंबे टैग से बँधे हुए हैं। प्रत्येक पृष्ठ पर पृष्ठ संख्या काले रंग से ऊपर के दाएँ कोने पर अंकित है। मौसम, धूल आदि के प्रभाव से बचाने के लिए पृष्ठों को लेमिनेट किया गया है। दुर्भाग्य से इसके कारण स्केनिंग की गुणवत्ता प्रभावित हुई है। नोटबुक के पृष्ठ-1 पर निम्न प्रविष्टि से पता चलता है कि यह जेल के अधिकारियों द्वारा भगतसिंह को 12 सितंबर, 1929 को दी गई थी।

यह नोटबुक भगतसिंह की अन्य वस्तुओं के साथ उनके पिता सरदार किशन सिंह को भगतसिंह की फाँसी के बाद सौंपी गई थी। सरदार किशन सिंह की मृत्यु के बाद यह नोटबुक (भगतसिंह के अन्य दस्तावेजों के साथ) उनके (सरदार किशन सिंह) पुत्र श्री कुलबीर सिंह और उनकी मृत्यु के पश्चात् उनके पुत्र श्री बाबर सिंह के पास आ गई। श्री बाबर सिंह का सपना था कि भारत के लोग भी इस जेल डायरी के बारे में जानें। उन्हें पता चले कि भगतसिंह के वास्तविक विचार क्या थे। भारत के आम लोग भगतसिंह की मूल लिखावट को देख सकें। आखिर वे प्रत्येक जाति, धर्म के लोगों, गरीबों, अमीरों, किसानों, मजदूरों, सभी के हीरो हैं।

भगतसिंह के चिंतन की गहराई और दृष्टि तथा मानवता के प्रति उनके प्रेम को उनके इन शब्दों से समझा जा सकता है कि “हमारे सियासी दलों में ऐसे लोग हैं, जिनके पास सिर्फ एक विचार है कि विदेशी हुक्मरानों से लड़ना है। यह विचार बहुत काबिले तारीफ है, लेकिन इसे ‘क्रांतिकारी विचार’ नहीं कहा जा सकता। हमें यह स्पष्ट करना होगा कि क्रांति का मतलब सिर्फ उथल-पुथल या खूनी संघर्ष नहीं है। क्रांति का सही मतलब ऐसा कार्यक्रम है, जिससे नई और बेहतर बुनियाद पर समाज का व्यवस्थित पुनर्निर्माण किया जा सके। यह कार्य मौजूदा हालात (यानी शासन) को पूरी तरह खत्म करके किया जाना चाहिए।”

जेल डायरी के पृष्ठ-43 पर मनुष्य और मानव जाति के विषय में उन्होंने लिखा है कि “मैं एक इनसान हूँ और मानव जाति को प्रभावित करनेवाली हर चीज से मेरा सरोकार है।”

भगतसिंह जोशो-खरोश से लबरेज क्रांतिकारी थे और उनकी सोच तथा नजरिया एकदम साफ था। वे भविष्य की ओर देखते थे। वास्तव में भविष्य उनकी रण-रण में बसा था।

पूछा जा सकता है कि भगतसिंह ने किस तरह के भविष्य का सपना देखा था? वे इसे किस तरह हकीकत में बदलना चाहते थे? मौजूदा हालात में भगतसिंह की जेल नोटबुक की टिप्पणियाँ ही इन सवालों का जवाब दे सकती हैं।

यह पुस्तक अखिल भारतीय खत्री सभा के अध्यक्ष श्री जितेंद्र मेहराजी (बाबाजी), मेरी माताजी श्रीमती सुर्दिंदर कौर, मेरी बहन श्रीमती मंजुला तूर तथा मेरे जीजाजी श्री भूपेंदर सिंह तूर के आशीर्वाद के बिना पूरी नहीं हो सकती थी।

मैं इस पुस्तक को साकार रूप देने की प्रेरणा और सहयोग के लिए एडवोकेट तरिषि महाजन का अत्यंत आभारी हूँ।

निरंतर सहयोग के लिए मैं सर्वश्री एस.के. शर्मा, उमेद सिंह, शरीफ चौधरी, विपिन झा, दीपक शर्मा, (वरिष्ठ पत्रकार), ओमप्रकाश (वरिष्ठ संपाददाता) व अनीता भाटी (वरिष्ठ संवाददाता) का आभारी हूँ।

— यादविंदर सिंह संधु

## जिंदगी का मकसद

“जिंदगी का मकसद अब मन पर काबू करना नहीं, बल्कि इसका समरसतापूर्ण विकास है। मौत के बाद मुक्ति पाना नहीं, बल्कि दुनिया में जो है, उसका सर्वश्रेष्ठ उपयोग करना है। सत्य, सुंदर और शिव की खोज ध्यान से नहीं, बल्कि रोजर्मर्ग की जिंदगी के वास्तविक अनुभवों से करना भी है। सामाजिक प्रगति सिर्फ कुछ लोगों की नेकी से नहीं, बल्कि अधिक लोगों के नेक बनने से होगी। आध्यात्मिक लोकतंत्र अथवा सार्वभौम भार्इचारा तभी संभव है, जब सामाजिक, राजनीतिक और औद्योगिक जीवन में अवसरों की समानता हो।”



(भगतसिंह)

# भूमिका



**अमर शहीद भगतसिंह** की जेल डायरी का हिंदी में प्रकाशन एक ऐतिहासिक घटना है। भारत के लोग 20वीं शती के अपने जिन महान् वीर सपूतों और सुपुत्रियों को गहरे प्यार एवं आत्मीय भाव से गौरवपूर्वक याद करते हैं, उनमें से एक मुख्य सपूत हैं ‘शहीद-ए-आजम भगतसिंह’।

ब्रिटिश राज्य ने लगभग आधे भारत में सन् 1858 में सीधे शासन संभाला। जैसा ब्रिटिश कूटनीति का स्वभाव था और है, पहले तो वे लोग ‘ईस्ट इंडिया कंपनी’ की लानत-मलामत करते रहे, उसकी असत्यपूर्ण और बिनौनी करतूतों को ‘अन ब्रिटिश’ अनैतिक तथा असत्य से भरी बताकर उसके अफसरों पर अभियोग लगाते रहे। क्लाइव, हेस्टिंग आदि पर आपराधिक मुकदमे चलाए, जिसके बचाव में उन्हें कहना पड़ा कि हम वहाँ ब्रिटिश आचरण का पालन न कर, मुनाफे के लिए जो कुछ जरूरी है, वह सब कर रहे हैं, इसमें बिना कानून पढ़े हुए लोगों को जाली जज बनाना भी शामिल है तथा फर्जी मुकदमे चलाकर भारत के धनियों एवं राजपुरुषों को दंडित करने का प्रयास भी शामिल है। परंतु बाद में जब कंपनी की काली करतूतों के कारण भारतीय लोग उन्हें मार भगाने लगे तो एक झूठी अफवाह उड़ाकर कि भारत में निर्दोष अंग्रेजों स्थियों-बच्चों का अकारण कल्पना किया जा रहा है, उनकी रक्षा की आड़ लेकर सन् 1857 में ब्रिटिश फौज की एक टुकड़ी पहली बार भारत के उस हिस्से पर कब्जा करने आ गई, जिस पर कंपनी छलपूर्ण दावे कर रही थी। उन दिनों ब्रिटेन एक पूर्ण नेशन-स्टेट बनने की प्रक्रिया में था, पर बना नहीं था। उसके पास बहुत व्यवस्थित और बड़ी सेना नहीं थी। इसलिए उसने भारत के उन राजाओं और नवाबों से संधियाँ की थीं, जो इस बीच इंग्लैंड के मैत्रीपूर्ण संपर्क में आ गए थे। इन संधियों के बाद ब्रिटिश राज्य सन् 1858 में कलकत्ता को मुख्यालय बनाकर आ तो गया, परंतु तब भी अगले 50 वर्षों तक उसे दिल्ली में राजधानी बनाने की हिम्मत नहीं हुई।

लगभग आधे भारत में ब्रिटिश राज्य होने के 50वें वर्ष में सन् 1907 में भारत के इस भाग्यवान सपूत का जन्म हुआ। उसी दिन उनके पिता किशन सिंहजी और चाचा अजीत सिंहजी जेल से छूटकर घर आए थे। इसलिए दादी ने बच्चे को भाग्यवान कहकर उसका नाम भगतसिंह किया। वे सचमुच भाग्यवान थे। देश के लिए जीवन अपित कर 24 वर्ष की आयु में ही वे अमर हो गए। इससे बड़ा सौभाग्य क्या होगा?

सन् 1905 में कर्जन ने बंगाल को बॉन्टने की घोषणा की, जबकि बंगाल के भी अनेक राजाओं एवं राजियों से ब्रिटेन ने संधि की थी। उस कुचाल के विरोध में भारतीय देशभक्ति एवं वीरता की प्रचंड ज्योति जल उठी। श्री अरविंदजी एवं श्री रासबिहारी घोषजी आदि ने उस ज्योति को निरंतर तीव्र बनाए रखा। स्वदेशी सत्याग्रह एवं देशभक्ति का विराट् राष्ट्रीय परिवेश बन गया। भगतसिंहजी के चाचा अजीत सिंहजी भी महान् क्रांतिकारी थे, जिन्हें अंग्रेजी शासन ने देश-निकाला दे दिया था।

**वस्तुतः:** 18वीं शती का भारत समस्त यूरोप के बराबर था। स्वयं भगतसिंहजी ने पृष्ठ 277 (जेल नोट्स 287) पर नोट किया है कि भारत ग्रेट ब्रिटेन से 20 गुना बड़ा है (इंग्लैंड से भारत लगभग 36 गुना बड़ा था)। इसलिए इस विशाल क्षेत्र में अनेक राजनैतिक कार्य साथ-साथ हो रहे थे। भगतसिंह ने इसी जेल नोट्स 287 (पुस्तक के पृष्ठ 277) में यह भी स्मरण दिलाया है कि भारत में 600 राज्य हैं। बंबई और मद्रास जैसे राज्य इटली से बड़े राज्य हैं। बर्मा भी उन दिनों भारत का एक राज्य था, जो फ्रांस नेशन-स्टेट से अधिक बड़े आकार का था। वे यह भी स्मरण दिलाते हैं कि भारतीय लोग समस्त मानव जाति का पंचमांश हैं। अतः यहाँ ब्रिटिश भारत क्षेत्र में स्वशासन की आशा जागते ही अंग्रेजी पढ़े-लिखे ठंडे लोग राजनैतिक जोड़-तोड़ में जुट गए, वहाँ देश के बीर युवक-युवती इन बाहरी अजनबी फिरंगियों को मार भगाने में जुट गए। ठंडी धारा के सबसे बड़े नेता हैं गांधीजी, जिन्होंने सन् 1908 में ही ‘हिंद स्वराज’ लिखी, जो वस्तुतः भारतीयों को अहिंसा के मार्ग पर चलने की प्रेरणा देती है, वहाँ लोकमान्य तिलकजी, रामप्रसाद बिस्मिलजी, जोगेशचंद्रजी, शर्चन्द्रनाथ सान्यालजी, श्री अरविंदजी, चित्तरंजनदासजी, वीर सावरकरजी, राजगुरुजी आदि ने वीरतापूर्ण देशभक्ति की प्रेरणा देने वाला साहित्य रचा। वस्तुतः ये दोनों धाराएँ एक गहरे अर्थ में परस्पर पूरक थीं, परंतु कई स्तरों पर इनमें परस्पर विरोध भी था।

अंग्रेजों ने स्वयं के न्यायप्रिय, शांतिप्रिय होने का प्रचार ऐसी खूबी से किया कि लोकमान्य तिलकजी के नेतृत्व में भारत के बीर एवं तेजस्वी युवक-युवतियाँ भी कांग्रेस से जुटने लगे। आज लोग भूल जाते हैं कि चित्तरंजनदासजी, सूर्यसेनजी, जतिनदासजी, जोगेशचंद्र चटर्जीजी, शर्चन्द्रनाथ सान्यालजी, चंद्रशेखर आजादजी, भगतसिंहजी, सुखदेवजी, भगवतीचरण बोहराजी, शिव वर्माजी, जयदेव कपूरजी आदि सभी ने कांग्रेस के सत्याग्रह आंदोलन में सक्रिय भाग लिया था। जब चौरी-चौरा की एक मामूली घटना का बहाना लेकर अंग्रेजों की मित्रता के प्रभाव में आए गांधीजी ने आंदोलन स्थगित कर दिया, तब क्रांतिकारियों ने क्रांतिकारी दल गठित किया।

भाई परमानंदजी, रामप्रसाद बिस्मिलजी, ठा. रोशनसिंहजी आदि आर्यसमाज के सक्रिय सदस्य थे, स्वयं भगतसिंह पंजाब के समाज-सुधार आंदोलन से जुड़े परिवार के थे। जब गांधीजी ने अचानक 'सत्याग्रह बंद करो' की घोषणा की, तब पहली बार 'हिंदुस्तान रिपब्लिक संघ' बनाकर क्रांतिकारियों ने काम प्रारंभ किया। सन् 1924 में शर्चींद्रनाथ सान्याल ने इस संघ की रूपरेखा तैयार कर काम शुरू किया। बाद में यह 'हिंदुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिकन एसोसिएशन' बना। इस एसोसिएशन की स्थापना सन् 1928 में चंद्रशेखर आजादजी, भगतसिंहजी आदि ने की। इन तथ्यों का स्मरण आवश्यक है।

लाला लाजपत रायजी पर लाठियाँ बरसाने वाले क्रूर अंग्रेज पिशाच का बदला लेने के लिए सांडर्स का वध किया गया। अगले वर्ष असेंबली में परचा फेंककर भारत का पक्ष प्रस्तुत किया गया। स्पष्ट रूप से यह एक सामान्य घटना थी। बटुकेश्वर दत्तजी एवं भगतसिंहजी ने केवल ध्यान खींचने के लिए मामूली विस्फोट किया था, न कोई मरा, न बुरी तरह घायल हुआ। पर इतने से काम को भीषण अपराध बताकर फाँसी दे दी गई। यह है पापपूर्ण ब्रिटिश न्याय का एक उदाहरण। दुर्भाग्यवश भारत में आज वही गलत न्यायिक एवं कानूनी ढाँचा कायम है।

सन् 1948 के बाद कांग्रेस ने अपने दोषों को छिपाने के लिए हिंसा-अहिंसा की झूठी बहस खड़ी की, जो इस विषय में निरर्थक है। मुख्य बात यह है कि तेजस्वी वीर युवक-युवतियों को अंग्रेज एक बाहरी आततायी दिखते थे, ठंडी धारा के नेता उनसे मधुर संबंध बनाकर धीरे से स्वशासन का सूत्र स्वयं संभाल लेना चाहते थे। इस प्रकार वे भारत के नए राजा बनने की कृतनीति कर रहे थे। यही कारण है कि उन्होंने अकारण भारतीय राजाओं की निंदा शुरू कर दी थी। क्रांतिकारियों के लिए यह भारतमाता की आन-बान-शान का प्रश्न था। ठंडी धारा के नेताओं के लिए समस्त स्वाधीनता आंदोलन राजनीतिक चालों का अंग था। ये दो नितांत भिन्न प्रवृत्तियाँ हैं। इनकी तुलना असंभव है और इसमें परस्पर विरोध दिखाना भी व्यर्थ है। क्योंकि ये दोनों धाराएँ परस्पर विजातीय हैं। दोनों की प्रेरणाएँ भी अलग हैं। पहली की प्रेरणा है, शुद्ध देशभक्ति तो दूसरी की प्रेरणा है राजनीतिक राष्ट्रवाद की आड़ में सत्ता पर कब्जा करना। हिंसा-अहिंसा आदि राजनीति के लिए केवल नारे होते हैं। क्योंकि हम सभी जानते हैं कि अहिंसावादी धारा ने भी लाखों भारतीयों को मरवाया है, जेलों में सड़ाया है, घायल किया है। विभाजन की जिम्मेदारी अहिंसावादी धारा की ही थी और उसमें लाखों भारतीयों की हत्या हुई, इसकी जिम्मेदारी भी इसी धारा की बनती है।

सन् 1948 के बाद भारतीय वीरों एवं विभूतियों को वैचारिक टकराव के झूठे मुहावरों में देखा-दिखाया जाता है। यह गलत है। भगतसिंहजी की देशभक्ति, तेजस्विता, साहस, पुरुषार्थ, प्रेरणा एवं वीरता को समझने की आवश्यकता है, क्योंकि भारत की नई पीढ़ी के लिए ऊर्जा एवं प्रकाश का स्रोत हैं।

हमें भूलना नहीं चाहिए कि भगतसिंहजी को 24 वर्ष की आयु में फाँसी दे दी गई थी। 24 वर्ष के युवक को वैचारिक मतवाद के चश्मे से देखना मूढ़ता है। महत्त्वपूर्ण है वह ऊर्जा और प्रकाश, जो उन्होंने देश में फैलाया। 22वें वर्ष में तो वे बंदी बना लिए गए थे। इतनी कम उस के युवक में वैचारिक पंथवाद ढूँढ़ा अटपटा है।

इस 'जेल डायरी' को पढ़ना ऊर्जा और प्रकाश के उस दिव्य स्रोत को समझना है। 'जेल डायरी' के पन्नों से हमें पता चलता है कि भगतसिंहजी जहाँ गुरुनानक देव महाराजजी, गुरु गोविंदसिंहजी, समर्थ गुरु रामदासजी, रवींद्रनाथ टैगोरजी, विलियम वड्सवर्थजी आदि के जीवन एवं विचारों से प्रभावित थे, वहीं वे मार्क्स, एंजेल्स, बुखारिन लेनिन, बर्टेंड रसेल के विचारों से भी आकर्षित थे।

'भगतसिंह जेल डायरी' के नोट्स 47 (पृष्ठ 91) में संयुक्त राज्य अमेरिका एवं इंग्लैंड की विषमता तथा लूट के तथ्य लिखते हैं। वे बताते हैं कि उन दिनों भयंकर लूट-पाट के बावजूद संयुक्त राज्य अमेरिका में 1 करोड़ 50 लाख लोग भयंकर गरीबी में जी रहे थे; जबकि वहाँ 30 लाख बाल-मजदूर थे। (उन दिनों संयुक्त राज्य अमेरिका की कुल जनसंख्या 4 करोड़ थी) इसी प्रकार वे इंग्लैंड में दो-तिहाई लोगों को भयंकर गरीबी में जी रहे दर्शाते हैं। जबकि नवमांश लोगों के पास इंग्लैंड की कुल संपदा का 50 प्रतिशत है। इंग्लैंड, फ्रांस, संयुक्त राज्य अमेरिका के राजपुरुष एवं संपन्न लोग बीसवीं शती के पूर्वार्ध में किस प्रकार आपस में बुरी तरह लड़ रहे थे और मार-काट कर रहे थे, यह भी भगतसिंह की जेल डायरी में 184वें नोट्स (पृष्ठ 229) सहित अनेक स्थानों पर सप्रमाण दरशाया गया है।

भगतसिंहजी के जेल नोट्स 286 (पृष्ठ 275) से पता चलता है कि 20वें शती के पूर्वार्ध में भी इंग्लैंड में खेती करने वाले लोगों का प्रतिशत आबादी के 12वें हिस्से से भी कम था, जबकि भारत में लगभग तीन-चौथाई लोग किसान थे। उसी पृष्ठ में वे मांटफोर्ड की रिपोर्ट का उद्धरण देकर बताते हैं कि भारत के 32 करोड़ लोगों में से 22 करोड़ लोग कृषि पर निर्भर हैं। वस्तुतः तथ्य यह है कि 20वें शती के पूर्वार्ध में भी इंग्लैंड अपनी जिस आबादी को उद्योगों में लगा दरशा रहा था, वे सभी लोग शहरों में 18-18 घंटे जीतोड़ मेहनत कर रहे मजदूर थे। उन दिनों भी वहाँ उद्योग का मुख्य अर्थ बढ़ींगीरी, लोहारी, कपड़ा बुना, रंगाई, सिलाई-कढ़ाई आदि ही था। कारखाने के नाम पर मुख्यतः कपड़ा मिलें शुरू हुई थीं। इंग्लैंड का सघन औद्योगीकरण तो 20वें शती के उत्तरार्ध में ही हुआ है। रेलें, बिजली, बड़े उद्योग व्यापक रूप में उसी समय फैले। 19वें शती में तो वे नाममात्र को शुरू भर हुए थे।

ऐसे अडिंग वीरता, प्रचंड देशभक्ति, साहस, उदारता, तेजस्विता और विराट् आत्मीयता जीवन के एक बड़े सत्य के आंतरिक-आध्यात्मिक बोध से आती है, किसी वैचारिक पंथवाद से नहीं। सन् 1948 के बाद का राजनीतिक भारतीय नेतृत्व इस तथ्य का स्वयं प्रमाण है। वह मतवादों में बढ़ा-चढ़ा है, पर आंतरिक सत्य से रहित है। इसीलिए उसमें भगतसिंह के बड़प्पन की छोटी भी नहीं दिखती। उसी बड़प्पन में से उनकी बड़ी जिज्ञासाएँ उपर्जी—न्याय, गौरव, स्वाधीनता, राज्य और समाज तथा मानव जीवन एवं जगत् के सत्य-स्वरूप की जिज्ञासाएँ। इसी बड़प्पन के

कारण शहीद-ए-आजम भगतसिंह भारत के हर देशभक्त के हृदय का स्पंदन हैं, चाहे वह किसी भी समूह, पंथ, वर्ग, जाति या श्रेणी का नर-नारी-युवा-वृद्ध कोई भी हों।

यह जेल-डायरी उस महान् हुतात्मा के बड़े व्यक्तित्व की झलक देती है। इसके हिंदी संस्करण की प्रस्तावना लिखते हुए मुझे गौरव का अनुभव हो रहा है। अमर शहीद की स्मृति में मैं प्रणत हूँ। उनके सभी परिजनों को हृदय की गहराइयों से श्रद्धापूर्ण प्रणाम निवेदित है। शहीद भगतसिंह के सुपौत्र श्री यादविंदर सिंह संधु इस महत् कार्य के लिए विशेष साधुवाद के पात्र हैं। ‘शहीद भगतसिंह ट्रिगेड’ और ‘शहीद भगतसिंह स्मारक न्यास’ ने स्तुत्य कार्य किया है। मेरी दृष्टि में मुमकिन है कि किन्हीं महान् ऐतिहासिक विभूतियों के तथ्यात्मक मूल्यांकन में त्रुटि हो सकती है, जिसके लिए मैं क्षमा प्रार्थना के साथ इतना जरूर कहना चाहूँगा कि मेरी भावना निर्दोष है। व्यक्तिगत रूप से मैं इस बात का प्रबल पक्षधर हूँ कि इतिहास के मूल्यांकन व पुनर्लेखन की महती आवश्यकता पर बहस अवश्य होनी चाहिए।

— कौशलेंद्र सिंह (बड़े राजा)

चंदापुर भवन,

रायबरेली-229001 (उ.प्र.)

## संपादकीय

**कहते हैं** ‘पूत के पैर पालने में ही दिख जाते हैं।’ ऐसा ही हुआ जाँबाज देशभक्त शहीद-ए-आजम भगतसिंह के साथ, जिनके बचपन में ही उनके बारे में एक ज्योतिषी ने भविष्यवाणी कर दी थी कि सरदार किशन सिंह का बेटा या तो फाँसी के फंदे पर चढ़ेगा या फिर गले में नौ लखा हार पहनेगा।

भगतसिंह देश की आजादी के लिए फाँसी के फंदे पर भी चढ़े और इन्हे उच्च रुठबे पर पहुँचे कि आज भी वे हर देशवासी के दिल पर राज कर रहे हैं। भगतसिंह का नाम उनकी दादी ने रखा था। 28 सितंबर, 1907 को शहीद-ए-आजम के जन्मवाले दिन उनके पिता किशन सिंह और चाचा अजीत सिंह जेल से रिहा हुए।

दादी श्रीमती जयकौर के मुँह से निकला कि ‘ए मुंडा तो बड़ा भाग वाला है।’ तभी परिवार के लोगों ने फैसला किया कि भाग वाला होने की वजह से लड़के का नाम इन्हीं शब्दों से मिलता-जुलता होना चाहिए। लिहाजा उसका नाम भगतसिंह रख दिया गया। भगतसिंह पर जहाँ अपने चाचा स्वर्ण सिंह का गहरा प्रभाव था, वहाँ वे अपने चाचा अजीत सिंह से काफी प्रभावित थे, जिन्होंने किसानों से लगान वसूलने के विरोध में ‘पगड़ी सँभाल जट्टा’ आंदोलन चलाया था। इस आंदोलन से अंग्रेज इतना डर गए थे कि उन्होंने अजीत सिंह को 40 साल के लिए देश-निकाला दे दिया।

पाँच साल की उम्र में भगतसिंह पिता किशन सिंह के साथ गन्ने के खेत पर गए। गन्ने की बुआई देख कहा कि एक-एक गन्ना बोने से क्या होगा? पिता ने जवाब दिया कि एक गन्ने की बुआई पर पाँच गन्ने होंगे। इतना सुनकर वे घर आ गए। घर से एक खिलौने की बँदूक खेत पर लेकर गए और उसे जमीन में ढाबाने लगे। पिता ने पूछा तो कहा कि एक बंदूक से पाँच बंदूकें पैदा होंगी जो आजादी के काम आएँगी।

भगतसिंह सैनिकों जैसी शहादत चाहते थे और वे फाँसी की बजाय सीने पर गोली खाकर बीरगति प्राप्त करना चाहते थे। यह बात भगतसिंह द्वारा लिखे पत्र में थी, जिसमें उन्होंने 20 मार्च, 1931 को पंजाब के तत्कालीन गवर्नर से माँग की थी कि उन्हें युद्धबंदी माना जाए और फाँसी पर लटकाने की बजाय गोली से उड़ा दिया जाए। ब्रिटिश सरकार ने उनकी माँग नहीं मानी और सारे नियम-कानून का उल्लंघन कर निर्धारित तिथि से एक दिन पहले ही 23 मार्च को फाँसी दे दी। गोरी सरकार ने सुबह की बजाय संध्या के बक्त फाँसी दी जो कि कानून का घोर उल्लंघन था। अंग्रेजों को डर था कि भगतसिंह की फाँसी से हिंदुस्तान में बड़े पैमाने पर जन-विद्रोह भड़क उठेगा, इसलिए उन्होंने एक दिन पहले ही चुपके से भगतसिंह, राजगुरु और सुखदेव को फाँसी के फंदे पर चढ़ा दिया।

जेल से भगतसिंह ने अपने पिता किशन सिंह को एक पत्र लिखा था, जिसमें वतन के नाम उनकी मोहब्बत किसी को भी अपना बना लेती है।

भगतसिंह ने इसमें लिखा था : ‘जनाब वालिद साहब, मेरी जिंदगी का मकसद आजाद-ए-हिंद के सिद्धांत के लिए दान हो जाना है, इसलिए मेरी जिंदगी में आराम और दुनियादारी का आकर्षण नहीं है। आपको याद होगा कि जब मैं छोटा था तो बापू (दादा अर्जुन सिंह) ने मेरे नामकरण के बक्त ऐलान किया था कि मुझे देशसेवा के लिए दान कर दिया है। लिहाजा मैं उस बक्त की प्रतिज्ञा पूरी कर रहा हूँ। आपका तबदार भगतसिंह।’

फाँसी के एक दिन पहले, 22 मार्च, 1931 को शहीद-ए-आजम ने अपने सास्थियों को पत्र लिखा और अपने दिल की बात बेबाकी से कही, “जीने की इच्छा मुझमें भी होनी चाहिए, जिसे मैं छुपाना नहीं चाहता, लेकिन एक शर्त पर जिंदा रह सकता हूँ कि मैं कैद या पाबंद होकर जीना नहीं चाहता। मेरा नाम हिंदुस्तान क्रांति का प्रतीक बन चुका है और क्रांतिकारी दल के आदर्शों व कुर्बानियों ने मुझे ऊँचा उठा दिया। इतना ऊँचा मैं हरगिज नहीं हो सकता। अगर मैं फाँसी से बच गया तो क्रांति का प्रतीक-चिह्नमद्धम पड़ जाएगा, लेकिन दिलेराना ढंग से हँसते-हँसते मेरे फाँसी पर चढ़ने की सूरत में हिंदुस्तानी माताएँ अपने बच्चों के भगतसिंह बनने की आरजू किया करेंगी और देश के लिए कुरबानी देनेवालों की तादाद इतनी बढ़ जाएगी कि क्रांति को रोकना तमाम शैतानी शक्तियों के बूते की बात नहीं रह जाएगी। देश के लिए जो कुछ करने की हसरत मेरे दिल में थी, उसका हजारवाँ हिस्सा भी अदा नहीं कर सका। अगर स्वतंत्र जिंदा रह सकता, तब शायद उन्हें पूरा करने का अवसर मिलता।”

अंतिम समय में जब माता विद्यावती उनसे लाहौर जेल में मिलने गई तो उन्होंने कहा, ‘बेटा भगत, तू इतनी छोटी उम्र में मुझे छोड़कर चला जाएगा।’

इस पर भगतसिंह ने कहा, “बेबे, मैं देश में एक ऐसा दीया जला रहा हूँ, जिसमें न तो तेल है और न ही धी। उसमें मेरा रक्त और विचार मिले हुए हैं। अंग्रेज मुझे मार सकते हैं, लेकिन मेरी सोच व मेरे विचारों को नहीं, और जब भी अन्याय व प्रष्टाचार के खिलाफ जो भी शख्स तुम्हें लड़ता हुआ नजर आए, वह तुम्हारा भगत होगा।”

अपने पिता व दादा कुलबीर सिंह (जो भगतसिंह के छोटे भाई थे) से सुनी बातों में से एक बात आपको बताता हूँ कि एक दिन भगतसिंह से मिलने कुलबीर सिंह व माता विद्यावती लाहौर जेल गए। भगतसिंह को बैरक से बाहर निकाला गया। उनके साथ पुलिस अफसर सहित कई जवान थे। भगतसिंह के चेहरे पर परेशानी के भाव नहीं थे। उन्हें पता था कि परिजनों से यह उनकी आ खिरी मुलाकात है। उन्होंने माँ से कहा,

‘बेबे, दादाजी अब ज्यादा दिन तक नहीं जाएँगे। आप बंगा जाकर उनके पास ही रहें।’ उन्होंने सभी को सांत्वना दी।

माँ को पास बुलाकर हँसते-हँसते कहा, ‘बेबे, लाश लेने आप मत आना। कुलबीर को भेज देना। कहीं आप रो पड़ों तो लोग कहेंगे कि भगतसिंह की माँ रो रही है।’ यह कह इतनी जोर से हँसे कि जेल अधिकारी उन्हें देखते रह गए। भगतसिंह हमेशा कहते थे कि अंग्रेज मुझे मार सकते हैं पर मेरी सोच और विचारों को नहीं।

### शहीद-ए-आजम का लिखा हुआ शेर

तुझे जिबह करने की खुशी और मुझे मरने का शौक है

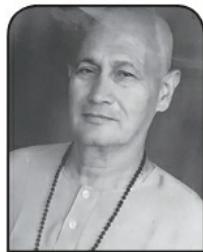
है मेरी भी मरजी वही जो मेरे सैयाद की है।

इन पंक्तियों का एक-एक शब्द उस महान् देशभक्त की बतन पर मर-मिटने की इच्छा जाहिर करता है, जिसने आजादी की राह में हँसते-हँसते फाँसी के फंदे को चूम लिया। देशभक्त की यह तहरीर भगतसिंह की इस डायरी का हिस्सा है, जो उन्होंने जेल में लिखी थी। शहीद-ए-आजम ने आजादी का सपना देखते हुए जेल में जो दिन गुजारे, उन्हें पल-पल अपनी डायरी में दर्ज किया। इसी जेल डायरी में भगतसिंह ने विश्व में कानून व न्याय व्यवस्था पर एक जगह विस्तृत नोट्स लिखे हैं, जो लगता है कि अपने मुकदमे की कानूनी लड़ाई खुद ही लड़ते के लिए तैयारी के रूप में लिखे गए हैं। ये नोट्स पुस्तकों के उद्धरण न होकर भगतसिंह की न्याय व्यवस्था की समझदारी को ईंगित करनेवाले हैं। इसी प्रकार एक जगह राज्य का विज्ञान (साइंस ऑफ द स्टेट) शीर्षक से भी सुकरात से लेकर आधुनिक चिंतकों तक के नोट्स एक ही जगह मिलते हैं, जिससे फ्रांसीसी क्रांति और रूसी बोल्शेविक प्रयोग तक को समाहित किया गया है।

— यादविंदर सिंह सिंधु

सुपौत्र शहीद भगतसिंह  
पुत्र स्व. श्री बाबर सिंह

## संदेश



**शहीद भगतसिंहजी** एक ऐसे व्यक्तित्ववाले व्यक्ति थे, जिन्होंने अपने कार्यों से यह दिखाया कि अँधेरे से उजाले में, गुलामी से आजादी और दुःख-तकलीफ को कैसे खुशी में बदला जा सकता है। हमारे देश की आजादी की लड़ाई में उनका बलिदान एक मील का पत्थर साकित हुआ। उन्होंने मात्र 23 साल की आयु में ऐसी उपलब्धियों को प्राप्त किया, जिसके कारण वे आज 'शहीद-ए-आजम' के नाम से जाने जाते हैं।

मुझे बहुत खुशी व गर्व हो रहा है कि मैं इस पुस्तक, जिसके अंदर जेल की काल-कोठरी में अंग्रेजों द्वारा दी गई यातनाएँ सहते हुए शहीद भगतसिंह ने आजादी पर अपने विचारों क्रांति क्या होती है और मानव किन विचारों को ग्रहण करके एक खुशहाल जीवन व्यतीत कर सकता है, को लाहौर सेंट्रल जेल में लिखा था।

शहीद भगतसिंह की यह जेल डायरी पढ़कर यह पता चलता है कि वे सिर्फ एक स्वतंत्रता सेनानी ही नहीं, बल्कि दूरदृष्टि रखनेवाले विचारक भी थे, जिन्होंने आजादी के बाद कैसा हिंदुस्तान होना चाहिए, उस पर भी अपने विचार लिखे। जेल के दौरान लगभग 110 किताबों को उन्होंने पढ़ा और उसका सार अपनी इस 'जेल डायरी' में लिखा, उन्हें पता था कि अंग्रेज उन्हें ज्यादा समय तक जीने नहीं देंगे, इसलिए उन्होंने अपने विचारों को डायरी में लिखा, ताकि देशवासी इसे पढ़ सकें और एक खुशहाल समाज व देश बना सकें। मैं उम्मीद और आशा करता हूँ कि यह किताब शहीद भगतसिंह के असली विचारों से भारतीयों को जोड़ेगी।

मैं यादविंदर सिंह, (सुपौत्र शहीद भगतसिंह) को इस प्रस्तुति के लिए बहुत-बहुत बधाई देता हूँ, क्योंकि इस माध्यम से शहीद भगतसिंह के हस्तलिखित लेख व उनका अनुवाद शहीद भगतसिंह के शब्दों में ही उनके चाहने वालों को देखने-पढ़ने को मिलेंगे। इस ऐतिहासिक कार्य के लिए मेरी शुभकामनाएँ।

—जितेंद्र मेहरा

राष्ट्रीय अध्यक्ष

अखिल भारतीय खत्री महासभा

## संदेश

शहीद-ए-आजम भगतसिंह सिर्फ एक नाम नहीं, मैं तो उन्हें एक संस्था बोलूँगा, क्योंकि शहीद भगतसिंह का व्यक्तित्व इतना बड़ा है कि उसका एक-एक आचरण अपने आप में देशभक्ति का उदाहरण है। एक बेटा कैसा होता है, एक छात्र कैसा होता है, एक भाई कैसा होता है, एक मित्र कैसा होता है व देश का नागरिक कैसा होता है और देशभक्ति व राष्ट्रभक्ति मेरे लिए शहीद भगतसिंह है। बचपन से ही अपनी माताजी से देश के सच्चे सपूत्र के बारे में सुना करता था, उनकी हिम्मत को सुनकर उत्साहित हुआ करता था और उनका त्याग-बलिदान सुनकर आँखों में आँसू आ जाते थे। भारत माँ आज भी भगतसिंह जैसा वीर सपूत्र ढूँढ़ रही है। मैं उम्मीद और आशा करता हूँ, ‘शहीद भगतसिंह जेल डायरी’ इस पुस्तक के माध्यम से एक बार फिर से भगतसिंह की यादें नौजवानों में जागेंगी और वे अच्छे-सच्चे नागरिक बनकर देश की सेवा में योगदान करेंगे।

मैं (यादविंद्र सिंह सुपौत्र शहीद भगतसिंह) को इस प्रस्तुति के लिए बधाई और शुभकामनाएँ देता हूँ।

— धर्मेंद्र

प्रसिद्ध फिल्म अभिनेता

## संदेश



मैं नौ साल का था। मुझे याद है, मथुरा की उन गलियों में हम लोग 'भगतसिंह भगतसिंह' ड्रामा खेलते थे। शहीद फ़िल्म देखने के बाद भगतसिंहजी का जुनून सिर पर सवार हो गया था। 'मेरा रंग दे बसंती चोला' गाने को गाते हुए हम फाँसी वाले एक्ट को हँसते-हँसते खेलते थे। फाँसी नहीं जैसे फंदे को गले लगाना, उससे लटकना एक बड़ा आनंद हो। ऐसा असर था शहीदे आजम के किरदार का। कुछ दिन पहले जब यादवेंजी ऑफिस पथरे और शहीदे आजम की यह जेल में लिखी डायरी मुझे दिखाई तो मुझे उस डायरी को स्पर्श करने का अवसर मिला, मेरे रोमांच की सीमा अपार हो गई थी। जिन पन्नों को भगतसिंहजी ने छुआ, जिन शब्दों को भगतसिंहजी ने लिखा, उनको मैं छू सका—उफ अनंत...अथाह आनंद! उनका ज्ञान, उनका ध्यान, उनका देशप्रेम, उस नहीं सी 13 वर्ष की उम्र में उनका व्यक्तित्व अतुलनीय है। मेरा उनको शत-शत प्रणाम।

ईश्वर से प्रार्थना है, हमें इतनी शक्ति दे कि हम उनके इन विचारों का अनुसरण कुछ अंश मात्रा में भी कर सकें।

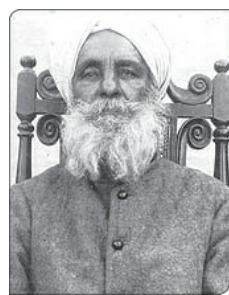
जयहिंद!

— अनिल शर्मा  
निर्देशक



سਰدار ارجمند سنہن

(شہید بھگت سنہن کے دادا جی)



سردار کیشن سنہن

(شہید بھگت سنہن کے پیتا جی)



سردار سوہن سنہن

(شہید بھگت سنہن کے چاچا جی)



सरदार अजीत सिंह

(शहीद भगतसिंह के चाचाजी)



श्रीमती विद्यावती

(शहीद भगतसिंह की माताजी, 'पंजाब माता' के रूप में विख्यात)



सरदार कुलबीर सिंह

(शहीद भगतसिंह के सगे छोटे भाई)



सरदार कुलबीर सिंह व श्रीमती विद्यावती



बालक शहीद भगतसिंह



तरुण शहीद भगतसिंह

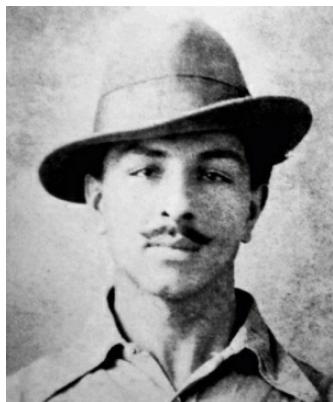


शहीद भगतसिंह का एक प्रभावी चित्र

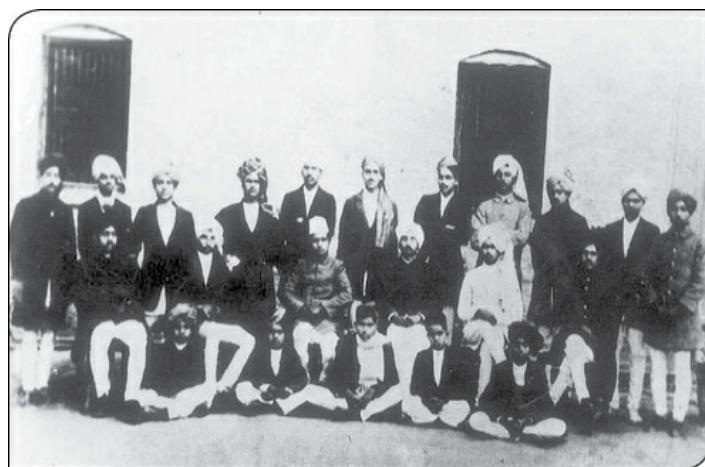


शहीद भगतसिंह

(पहली बार गिरफ्तार होने के बाद जेल में)

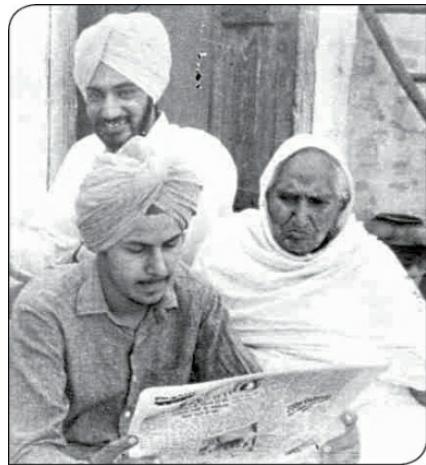


शहीद भगतसिंह का अत्यंत लोकप्रिय चित्र



शहीद भगतसिंह

(कॉलेज का एक समूह चित्र, भगतसिंह गोले में हैं)



युवा स्व. श्री बाबर सिंह

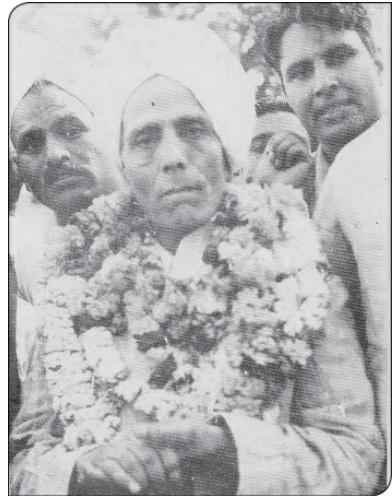
(अपनी दादीजी श्रीमती विद्यावती के साथ)



शहीद भगतसिंह को श्रद्धांजलि देते स्व. बाबर सिंह



1907 में सूरत कांग्रेस में लोकमान्य तिलक व अरविंद घोष के साथ सरदार अजीत सिंह



सरदार अजीत सिंह व सरदार कुलबीर सिंह



लाहौर में कांग्रेस कमेटी की ओर से सरदार अजीत सिंह के सम्मान में वक्तव्य देते श्री पूरन चंद आजाद



सरदार कुलबीर सिंह अपने पिताजी सरदार किशन सिंह के साथ



शहीद चंद्रशेखर आजाद



गोली लगने के बाद शहीद चंद्रशेखर आजाद इलाहाबाद के एल्फ्रेड पार्क में



शहीद भगतसिंह पर भारत सरकार द्वारा जारी डाक टिकट

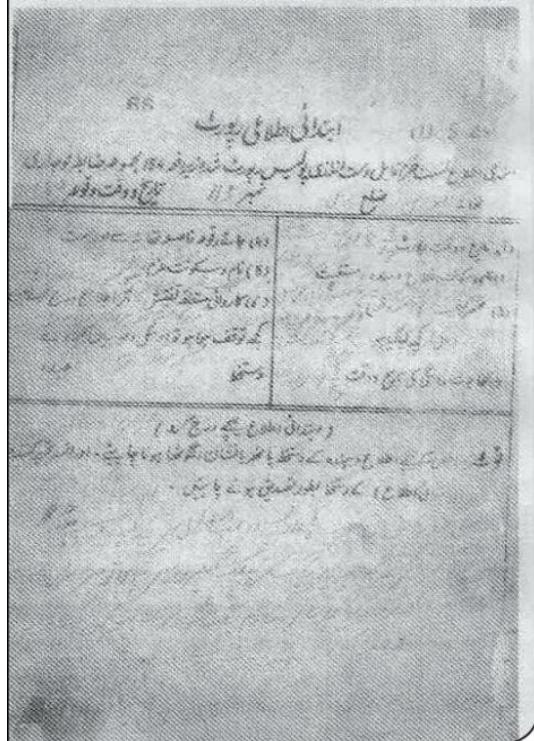


दुर्गा भाभी अपने पुत्र सचिन के साथ, लाहौर से बचकर निकलने में उन्होंने शहीद भगतसिंह की ममद की थी



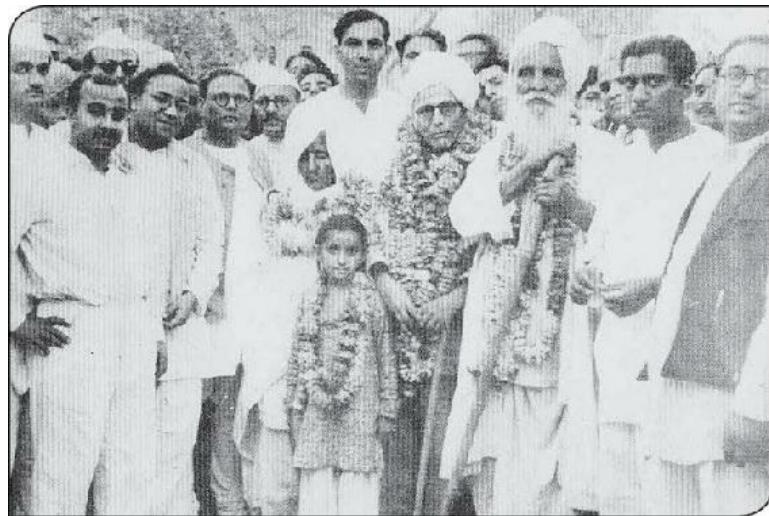
असेंबली में बम फेंकने की रिपोर्ट का प्रकाशन

IR NO. 113 DATED 08.04.1929 U/S 307 IPC & 3/4 ACT NO. 6 OF 1908  
POLICE STATION NEW DELHI  
AGAINST SARDAR BHAGAT SINGH & BATUKESHWAR DUTT



'बम फेंकने' की यथाक स्थित घटना की एफ.आई.आर. की प्रति





38 वर्षों के निर्वासन के बाद लाहौर पहुँचे सरदार अजीत सिंह का स्वागत यश एवं कुलबीर सिंह, माता हरनाम कौर व सरदार किशन सिंह ने किया

# हमें गोली से उड़ाया जाए

20 मार्च, 1931

प्रति

गवर्नर पंजाब, शिमला

महोदय,

उचित सम्मान के साथ हम नीचे लिखी बातें आपकी सेवा में दे रहे हैं। भारत की ब्रिटिश सरकार के सर्वोच्च अधिकारी वाइसराय ने एक विशेष अध्यादेश जारी करके लाहौर घड़यंत्रभियोग की सुनवाई के लिए एक विशेष न्यायाधिकरण ट्रिब्यूनल स्थापित किया था, जिसने अक्तूबर 1930 को हमें फाँसी का दंड सुनाया। हमारे विरुद्ध सबसे बड़ा आरोप यह लगाया गया है कि हमने सम्राट जार्ज पंचम के विरुद्ध युद्ध किया है। न्यायालय के निर्णय से दो बातें स्पष्ट हो जाती हैं। पहली यह कि अंग्रेज जाति और भारतीय जनता के मध्य एक युद्ध चल रहा है। दूसरे यह कि हमने निश्चित रूप से इस युद्ध में भाग लिया है। अतः हम युद्धबंदी हैं। हम यह कहना चाहते हैं कि युद्ध छिड़ा हुआ है और यह लड़ाई तब तक चलती रहेगी, जब तक कि शाक्तिशाली व्यक्तियों ने भारतीय जनता और श्रमिकों की साँस के साधनों पर अपना एकाधिकार कर रखा है। निश्चित ही यह युद्ध उस समय तक समाप्त नहीं होगा, जब तक कि समाज का वर्तमान ढाँचा समाप्त नहीं हो जाता। प्रत्येक वस्तु में परिवर्तन या क्रांति समाप्त नहीं हो जाती और मानवीय सृष्टि में एक नवीन युग का सूत्रपात नहीं हो जाता है।

हम आपसे केवल यह प्रार्थना करना चाहते हैं कि आपकी सरकार के ही न्यायालय के निर्णय के अनुसार हमारे विरुद्ध युद्ध जारी रखने का अभियान है। इस दृष्टि से हम युद्धबंदी हैं। अतः इस आधार पर हम आपसे माँग करते हैं कि हमारे प्रति युद्धबंदियों जैसा ही व्यवहार किया जाए और हमें फाँसी देने के बदले गोली से उड़ा दिया जाए।

भवदीय

भगतसिंह, सुखदेव, राजगुरु

# भाई कुलबीर सिंह के नाम भगतसिंह का अंतिम पत्र फाँसी लगने से बीस दिन पहले लिखा गया।

सेंट्रल जेल, लाहौर

3 मार्च, 1931

प्रिय कुलबीर सिंह,

तुमने मेरे लिए बहुत कुछ किया। मुलाकात के समय तुमने अपने खत के जवाब में कुछ लिख देने के लिए कहा था। कुछ शब्द लिख दूँ। देख, मैंने किसी के लिए कुछ न किया। तुम्हरे लिए भी कुछ न कर सका। आज तुम सबको विपदाओं में छोड़कर जा रहा हूँ। तुम्हारी जिंदगी का क्या होगा? गुजर किस तरह करोगे? विपदाओं से न घबराना, इसके सिवाय और क्या कह सकता हूँ! अमेरिका जा सकते तो बहुत अच्छा होता, लेकिन अब तो यह नामुमकिन जान पड़ता है। धीरे-धीरे हिम्मत से पढ़ लो। अगर कोई काम सीख सको तो बेहतर होगा, लेकिन सब कुछ पिताजी की सलाह से करना। जहाँ तक हो सके, प्यार-मोहब्बत से रहना। इसके सिवाय और क्या कहूँ? जानता हूँ कि आज तुम्हारे दिल में गम का समुद्र ठाठें मार रहा है। तुम्हारे बरे में सोचकर मेरी आँखों में आँसू आ रहे हैं, लेकिन क्या किया जा सकता है? हौसला रख मेरे अजीज, मेरे प्यारे भाई, जिंदगी बड़ी बेरहम। लोग भी बहुत बेरहम हैं। सिर्फ हिम्मत और प्यार से ही गुजारा हो सकेगा। कुलतार की पढ़ाई की चिंता भी तुम्हें करनी है। बहुत शर्म आती है और अफसोस के सिवाय मैं कर भी क्या सकता हूँ? साथ वाला खत हिंदी में लिखा है। खत बी.के. की बहन को दे देना। अच्छा नमस्कार, अजीज भाई, अलविदा।

तुम्हारा शुभाकांक्षी  
भगतसिंह

## विद्यार्थियों के नाम पत्र

(भगतसिंह और बटुकेश्वर दत्त की ओर से जेल से भेजा गया यह पत्र 19 अक्टूबर, 1929 को पंजाब छात्र संघ, लाहौर के दूसरे अधिवेशन में पढ़कर सुनाया गया था। अधिवेशन के सभापति थे नेताजी सुभाषचंद्र बोस)।

इस समय नौजवानों से हम यह नहीं कह सकते कि वे बम और पिस्तौल उठाएँ। आज विद्यार्थियों के सामने इससे भी अधिक महत्वपूर्ण काम है। आने वाले लाहौर अधिवेशन में कांग्रेस देश की आजादी के लिए जबरदस्त लड़ाई की घोषणा करने वाली है। राष्ट्रीय इतिहास के इन कठिन क्षणों में नौजवानों के कंधों पर बहुत बड़ी जिम्मेदारी आ पड़ी है।

क्या परीक्षा की इस घड़ी में वे उसी प्रकार की दृढ़ता और आत्मविश्वास का परिचय देने से हिचकिचाएँगे? नौजवानों को क्रांति का संदेश देश के कोने-कोने में पहुँचाना है। फैक्टरी, कारखानों के क्षेत्रों में, गंदी बस्तियों और गाँवों की जर्जर झोंपड़ियों में रहने वाले करोड़ों लोगों में इस क्रांति की अलख जगानी है, जिससे आजादी आएगी और तब एक मनुष्य द्वारा दूसरे मनुष्य का शोषण अंसकद हो जाएगा। आज देश के प्रति अपनी श्रद्धा और शहीद यर्तींद्रनाथ दास के बलिदान से प्रेरणा लेकर यह सिद्ध कर दें कि स्वतंत्रता के इस संघर्ष में दृढ़ता से टक्कर ले सकते हैं।

22 अक्टूबर, 1929 के ट्रिब्यून (लाहौर) में प्रकाशित

# घर को अलविदा पिताजी के नाम पत्र

पूज्य पिताजी, नमस्ते।

मेरी जिंदगी का मकसदे आला ऊँचा उद्देश्य यानि आजादी हिंद के असूल सिद्धांत के लिए वक्फ (दान) हो चुकी है। इसलिए मेरी जिंदगी में आराम और दुनियांनी वाहशात (सांसारिक इच्छा) वामसे क शिश (आकर्षक) नहीं है।

आपको याद होगा कि जब मैं छोटा था तो बापूजी ने मेरे यज्ञोपवीत के वक्त ऐलान किया था कि मुझे खिदमते वतन (देश सेवा) के लिए वक्फ कर दिया गया है। लिहाजा मैं उस वक्त की प्रतिज्ञा पूरी कर रहा हूँ। उम्मीद है, आप मुझे माफ फरमाएँगे।

आपका ताबेदार  
भगतसिंह

# बलिदान से पहले सास्थियों को अंतिम पत्र

22 मार्च, 1931

सास्थियों,

स्वाभाविक है कि जीने की इच्छा मुझमें भी होनी चाहिए, जिसे मैं छुपाना नहीं चाहता, लेकिन एक शर्त पर जिंदा रह सकता हूँ कि मैं कैद या पाबंद होकर जीना नहीं चाहता। मेरा नाम हिंदुस्तानी क्रांति का प्रतीक बन चुका है और क्रांतिकारी दल के आदर्शों व कुर्बानियों ने मुझे ऊँचा उठा दिया, इतना ऊँचा कि जीवित रहने की स्थिति में इससे ऊँचा मैं हरगिज नहीं हो सकता। आज मेरी कमज़ोरियाँ जनता के सामने नहीं हैं। अगर मैं फाँसी से बच गया तो वे जाहिर हो जाएँगी और क्रांति का प्रतीक चिन्हमदूर्धम पड़ जाएगा या संभवतः मिट ही जाए। लेकिन दिलेराना ढंग से हँसते-हँसते मेरे फाँसी चढ़ने की सूरत में हिंदुस्तानी मार्ताहँ अपने बच्चों के भगतसिंह बनने की आरजू किया करेंगी और देश के लिए कुर्बानी देने वालों की तादाद इतनी बढ़ जाएगी कि क्रांति को रोकना साप्राञ्यवाद या तमाम शैतानी शक्तियों के बूते की बात नहीं रहेगी। हाँ, एक विचार आज भी मेरे मन में आता है कि देश और मानवता के लिए जो कुछ करने की हसरतें मेरे दिल में थीं, उनका हजारबाँ भाग भी पूरा नहीं कर सकता। अगर स्वतंत्र, जिंदा रह सकता, तब शायद उन्हें पूरा करने का अवसर मिलता और मैं अपनी हसरतें पूरी कर सकता। इसके सिवाय मेरे मन में कोई लालच फाँसी से बचने का नहीं आया। मुझसे अधिक भाग्यशाली कौन होगा? आजकल मुझे स्वयं पर बहुत गर्व है। अब तो बड़ी बेताबी से अंतिम परीक्षा का इंतजार है। कामना है कि यह और नजदीक हो जाए।

आपका साथी  
भगतसिंह

# यह भगतसिंह का पहला खत है, जब वह छठी कक्षा में पढ़ रहे थे। उनका यह पत्र दादा अर्जुन सिंह को संबोधित है।

लाहौर 22 जुलाई, 1918

पूज्य बाबाजी,

नमस्ते।

अर्ज यह है कि आपका खत मिला, पढ़कर दिल खुश हुआ। इमिहान की बात ये है कि मैंने पहले इसलिए नहीं लिखा था, क्योंकि हमें बताया नहीं गया था। अब हमें अंग्रेजी और संस्कृत का नतीजा बताया गया है। उनमें मैं पास हूँ। संस्कृत में मेरे 150 नंबरों में 110 नंबर हैं। अंग्रेजी में 150 में से 68 नंबर हैं। जो 150 में से 50 नंबर ले जाए, वह पास होता है। 68 नंबरों को लेकर मैं अच्छी तरह पास हो गया हूँ। किसी किस्म की चिंता न करना। बाकी नहीं बताया गया। छुट्टियाँ—8 अगस्त को पहली छुट्टी होंगी। आप कब आएँगे, लिखना।

आपका आज्ञाकारी,  
भगतसिंह

## काकोरी के शहीदों को फाँसी

जनवरी 1928 के 'किरती' में भगतसिंह ने एक और लेख काकोरी के शहीदों के बारे में 'बिद्रोही' के नाम से लिखा।

'किरती' के पाठकों को पहले किसी अंक में हम काकोरी के मुकदमे के हालात बता चुके हैं। अब इन चार वीरों को फाँसी दिए जाने का हाल बताते हैं।

17 दिसंबर, 1927 को श्री राजिंद्रनाथ लाहिड़ी को गोंडा जेल में फाँसी दी गई और 19 दिसंबर, 1927 को श्री राम प्रसाद 'बिस्मिल' को गोरखपुर जेल में, श्री अशफाक उल्ला को फैजाबाद जेल में और श्री रोशन सिंहजी को इलाहाबाद जेल में फाँसी पर चढ़ा दिया गया।

इस मुकदमे के सेशन जज मि. हेमिल्टन ने फैसला देते हुए कहा था कि ये नौजवान देशभक्त हैं और इन्होंने अपने किसी लाभ के लिए कुछ भी नहीं किया और यदि यह नौजवान अपने किए पर पश्चात्ताप करें तो उनकी सजाओं में रियायत की जा सकती है, लेकिन उन्हें फाँसी दिए बगैर डायन नौकरशाही को चैन कैसे पड़ता? अपील में बहुत से लोगों की सजाएँ बढ़ा दी गई। फिर न तो गवर्नर और न ही वायसरॉय ने उसके यौवन की ओर ध्यान दिया और प्रिवी कॉसिल ने तो उनकी अपील सुनने से पहले ही खारिज कर दी। यू.पी. कॉसिल के बहुत से सदस्यों, असेंबली और कॉसिल और स्टेट के बहुत से सदस्यों ने वायसरॉय को उनकी जवानी पर दया करने की दरखास्त दी, लेकिन होना क्या था? उनके इतने हाथ-पाँव मारने का कोई परिणाम न निकला। यू.पी. कॉसिल के स्वराज पार्टी के नेता श्री गोविंद वल्लभ पंत उनके मामले पर बहस के लिए अपना मत वायसरॉय और लाट साहब को भेजने के लिए शोर मचा रहे थे। पहले तो प्रेजीडेंट साहब ही अनुमति नहीं दे रहे थे, लेकिन बहुत से सदस्यों ने मिलकर कहा तो सोमवार को बहस के लिए इजाजत मिली, लेकिन फिर छोटे अंग्रेज अध्यक्ष, जो उस समय अध्यक्ष का काम कर रहा था, ने सोमवार को कॉसिल की छुट्टी ही कर दी। होम मेंबर नवाब छतारी के दर पर जा चिल्लाए, लेकिन उनके कानों पर जूँ तक न सरकी और कॉसिल में उनके संबंध में एक शब्द भी न कहा जा सका और उन्हें फाँसी पर लटका ही दिया गया। इसी क्रोध में नीचता के साथ रूसी जार और फ्रांसीसी लुइस बादशाह होनहार युवकों को फाँसी पर लटका-लटकाकर दिलों की भड़ास निकालते रहे, लेकिन उनके राज्यों की नीवें खोखली हो गई थीं और उनके तख्ते पलट गए। इसी गलत तरीके का आज फिर इस्तेमाल हो रहा है। देखें, यदि इस बार इनकी मुरादें पूरी हों। नीचे हम उन चारों वीरों के हालात संक्षेप में लिखते हैं, जिससे यह पता चले कि यह अमूल्य रत्न मौत के सामने खड़े होते भी किस बहादुरी से हैंस रहे थे।

## श्री राजिंद्रनाथ लाहिड़ी

आप हिंदू विश्वविद्यालय बनारस के एम.ए. के छात्र थे। 1925 में कलकत्ते के पास दक्षिणेश्वर बग फैक्टरी पकड़ी गई थी, उसमें आप भी पकड़े गए थे और आपको सात बरस की कैद हो गई थी। वहाँ से आपको लखनऊ लाया गया और काकोरी केस में आपको फौसी की सजा दे दी गई। आपको बाराबंकी और गोंडा जेलों में रखा गया। आप मौत को सामने देख घबराते नहीं थे, बल्कि हमेशा हँसते रहते थे। आपका स्वभाव बड़ा हँसमुख और निर्भय था। आप मौत का मजाक उड़ाते रहते थे।

आपने 14 दिसंबर को एक मित्र के नाम लिखा था—

कल मुझे पता चला है कि प्रिवी कौसिल ने मेरी अपील खारिज कर दी है। आप लोगों ने हमें बचाने की कोई कोशिश की, लेकिन लगता है कि देश की बलिवेदी पर हमारे प्राणों के बलिदान की ही जरूरत है। मौत क्या है? जीवन की दूसरी दिशा के सिवाय कुछ नहीं। जीवन क्या है? मौत की ही दूसरी दिशा का नाम है। फिर डरने की क्या जरूरत है? यह तो प्राकृतिक बात है, उतनी ही प्राकृतिक जितना कि प्रातः में सूर्योदय। यदि हमारी यह बात सच है कि इतिहास पलटा खाता है तो मैं समझता हूँ कि हमारा बलिदान व्यर्थ नहीं जाएगा। मेरा नमस्कार। सबको अंतिम नमस्कार।

—आपका राजिंद्रनाथ लाहिड़ी

## श्री रोशन सिंहजी

आपको 19 दिसंबर को इलाहाबाद में फाँसी दी गई। उनका एक आखिरी पत्र 13 दिसंबर का लिखा हुआ है। आप लिखते हैं—

इस हफ्ते फाँसी हो जाएगी। ईश्वर के आगे विनती है कि आपके प्रेम का आपको फल दे। आप मेरे लिए कोई गम न करना। मेरी मौत तो खुशीवाली है। चाहिए तो यह कि कोई बदफैली करके बदनाम होकर न मरे और अंत समय ईश्वर याद रहे। तो यही दो बातें हैं। इसलिए कोई गम नहीं करना चाहिए। दो साल बाल-बच्चों से अलग रहा हूँ। ईश्वर भजन का खूब अवसर मिला। इसलिए मोह-माया सब टूट गई। अब कोई चाह बाकी न रही। मुझे विश्वास है कि जीवन की दुःख भरी यात्रा खत्म करके सुख के स्थान पर जा रहा है। शास्त्रों में लिखा है, युद्ध में मरने वालों की ऋषियों जैसी जमात (श्रेणी) होती है।

जिंदगी जिंदादिली को जानिए रोशन, वरना कितने मरे और पैदा होते जाते हैं। आखिरी नमस्कार।

श्री रोशन सिंह रायबरेली के काम करनेवालों में थे। किसान आंदोलन में जेल जा चुके थे। सबको विश्वास था कि हाईकोर्ट से आपकी मौत की सजा टूट जाएगी, क्योंकि आपके खिलाफ कुछ भी नहीं था। लेकिन फिर भी वे अंग्रेजशाही का शिकार ही हो गए और फाँसी पर लटका दिए गए। तख्ते पर खड़े होने के बाद आपके मुँह से जो आवाज निकली, वह यह थी—‘वंदेमातरम्’।

आपकी अरथी के जुलूस की इजाजत नहीं दी गई। लाश की फोटो लेकर दोपहर में आपका दाह-संस्कार कर दिया गया।

## श्री अशफाक उल्ला

यह मस्ताना शायर भी हैरान करनेवाली खुशी से फाँसी चढ़ा। बड़ा सुंदर और लंबा-चौड़ा जवान थ, तगड़ा बहुत था। जेल में कुछ कमजोर हो गया था। आपने मुलाकात के समय बताया कि कमजोर होने का कारण गम नहीं, बल्कि खुदा की याद में मस्त रहने की खातिर रोटी बहुत कम खाना है। फाँसी से एक दिन पहले आपकी मुलाकात हुई। आप खूब सजे-सँवरे थे। बड़े-बड़े कढ़े हुए केश खूब सजते थे। बड़ा हँस-हँसकर बातें करते रहे। आपने कहा, कल मेरी शादी होनेवाली है। दूसरे दिन सुबह छह बजे आपको फाँसी दी गई। कुरआन शरीफ का बस्ता लटकाकर हाजियों की तरह बजीफा पढ़ते हुए बड़े हौसले से चल पड़े। आगे जाकर तख्ते पर रस्सी को चूम लिया। वहीं आपने कहा—

“मैंने कभी किसी आदमी के खून से अपने हाथ नहीं रँगे और मेरा इनसाफ खुदा के सामने होगा। मेरे ऊपर लगाए सभी इल्जाम गलत हैं।” खुदा का नाम लेते ही रस्सी खींची गई और वे कूच कर गए। उनके रिसेदारों ने बड़ी मिनतों-खुशामदों से उनकी लाश ली और उन्हें शाहजहाँपुर ले आए। लखनऊ स्टेशन पर मालगाड़ी के एक डिब्बे में उनकी लाश देखने का अवसर कुछ लोगों को मिला। फाँसी के दस घंटे बाद भी चेहरे पर वैसी ही रौनक थी। ऐसा लगता था कि अभी ही सोए हों, लेकिन अशफाक तो ऐसी नींद सो गए थे कि जहाँ से वे कभी नहीं जागेंगे। अशफाक शायर थे और उनका शायद उपनाम ‘हसरत’ था। मरने से पहले आपने ये दो शेर कहे थे—

‘फना हैं हम सबके लिए, हम पै कुछ नहीं मौकूफ!

बका है एक फक्त जाने की ब्रिया के लिए।’

(नाश तो सभी होंगे, कोई हम अकेले थोड़े होंगे। न मरने वाला तो सिर्फ एक परमात्मा है) और

‘तंग आकर हम उनपके जुल्म से बेदाद से,

चल दिए सूए अदम जिंदाने फैजाबाद से।’

## श्री राम प्रसाद 'बिस्मिल'

श्री राम प्रसाद 'बिस्मिल' बड़े होनहार नौजवान थे। गजब के शायर थे। देखने में भी बहुत सुंदर थे। योग्य बहुत थे। जानने वाले कहते हैं कि यदि किसी और जगह या किसी और देश या किसी और समय पैदा हुए होते तो सेनाध्यक्ष बनते। आपको पूरे षड्यंत्र का नेता माना गया है। चाहे बहुत ज्यादा पढ़े हुए नहीं थे, लेकिन फिर भी पंडित जगतनारायण जैसे सरकारी वकील की सुध-बुध भुला देते थे। चीफ कोर्ट में अपनी अपील खुद ही लिखी थी, जिससे कि जजों को कहना पड़ा कि इसे लिखने में जरूर ही किसी बहुत बुद्धिमान व योग्य व्यक्ति का हाथ है।

19 तारीख की शाम को आपको फाँसी दी गई। 12 की शाम को जब आपको दूध दिया गया तो आपने यह कहकर इनकार कर दिया कि अब मैं माँ का दूध ही पिऊँगा। 18 को आपकी मुलाकात हुई। माँ को मिलते समय आपकी आँखों में अश्रु बह चले। माँ बहुत हिम्मतवाली देवी थीं। आपसे कहने लगी—हरीशचंद्र, दधीचि आदि बुजुर्गों की तरह वीरता, धर्म व देश के लिए जान दे। चिंता करने और पछताने की जरूरत नहीं। आप हँस पड़े। कहा, “माँ, मुझे क्या चिंता और क्या पछतावा? मैंने कोई पाप नहीं किया। मैं भौत से नहीं डरता। लेकिन माँ आग के पास रखा घी पिघल ही जाता है। तेरा-मेरा संबंध ही कुछ ऐसा है कि पास होते ही आँखों से अश्रु उमड़ पड़े। नहीं तो मैं बहुत खुश हूँ।” फाँसी पर ले जाते समय आपने बड़े जोर से कहा, ‘वंदेमातरम्’ ‘भारत माता की जय’ और शांति से चलते हुए कहा—

‘मालिक तेरी रजा रहे और तू ही तू रहे  
बाकी न मैं रहूँ न मेरी आरजू रहे  
जब तक कि तन में जान रगों में लहू रहे  
तेरा ही जिक्रे यार, तेरी जुस्तजू रहे।’

फाँसी के तख्ते पर खड़े होकर आपने कहा—

I wish the downfall of the British Empire.  
मैं ब्रिटिश साम्राज्य का पतन चाहता हूँ।

फिर यह शे'र पड़ा—

अब न अहले वलवले हैं और न अरमानों की भीड़,  
एक मिट जाने की हसरत, अब दिले-बिस्मिल में है।

फिर ईश्वर के आगे प्रार्थना की और फिर एक मंत्र पढ़ना शुरू किया। रस्सी खींची गई। रामप्रसादजी फाँसी पर लटक गए। आज वह वीर इस संसार में नहीं है। उसे अंग्रेजी सरकार ने अपना खौफनाक दुश्मन समझा। आम खयाल यह है कि उसका कसूर यही था कि वह इस गुलाम देश में जन्म लेकर भी एक बड़ा भारी बोझ बन गया था और लड़ाई की विद्या से खूब परिचित था। 7 बजे आपकी लाश मिली और बड़ा भारी जुलूस निकला। स्वदेश प्रेम में आपकी माता ने कहा—

“मैं अपने पुत्र की इस मृत्यु पर प्रसन्न हूँ, दुःखी नहीं। मैं श्री रामचंद्र जैसा ही पुत्र चाहती थी। बोलो, श्री रामचंद्र की जय!”

इत्र-फुलेल और फूलों की वर्षों के बीच उनकी लाश का जुलूस जा रहा था। दुकानदारों ने उनके ऊपर से पैसे फैके। 11 बजे आपकी लाश उमशान भूमि में पहुँची और अंतिम क्रिया समाप्त हुई।

आपके पत्र का आखिरी हिस्सा आपकी सेवा में प्रस्तुत है—

मैं खूब सुखी हूँ। 19 तारीख को प्रातः जो होना है, उसके लिए तैयार हूँ। परमात्मा काफी शक्ति देंगे। मेरा विश्वास है कि मैं लोगों की सेवा के लिए फिर जल्द ही जन्म लूँगा। सभी से मेरा नमस्कार कहें। दया कर इतना काम और भी करना कि मेरी ओर से पंडित जगतनारायण (सरकारी वकील, जिसने इन्हें फाँसी लगवाने के लिए बहुत जोर लगाया था) को अंतिम नमस्कार कह देना। उन्हें हमारे खून से लथपथ रुपयों से चैन की नींद आए। बुढ़ाने में ईश्वर उन्हें सद्बुद्धि दे।’

रामप्रसादजी की सारी हसरतें दिल-ही-दिल में रह गई। आपने एक लंबा-चौड़ा ऐलान किया है, जिसे संक्षेप में हम दूसरी जगह दे रहे हैं। फाँसी से दो दिन पहले सी.आई.डी. के मि. हैमिल्टन आप लोगों की मिन्नतें करते रहे कि आप मौखिक रूप से सब बातें बता दो, आपको पाँच हजार रुपए नकद दे दिया जाएगा और सरकारी खर्चे पर विलायत भेजकर बैरिस्टर की पढ़ाई करवाई जाएगी, लेकिन आप कब इन बातों की परवाह करते थे? आप हकूमतों को दुकराने वाले व कभी-कभार जन्म लेने वाले वीरों में से थे। मुकदमे के दिनों आपसे जज ने पूछा था, “आपके पास क्या डिग्री है?” तो आपने हँसकर जवाब दिया था, “सम्राट् बनाने वालों को डिग्री की कोई जरूरत नहीं होती, क्लाइव के पास भी कोई डिग्री नहीं थी।” आज वह वीर हमारे बीच नहीं है। आह!!

फाइल  
नोटबुक

\*\*\*\*\*



आरती भवन  
बुकसेलर्स एंड पब्लिशर्स  
लाहौर

For Bhagat Singh  
four hundred + four pages  
(404 pages)  
Date  
1/1/19

~~Bhagat Singh~~  
~~Bhagat Singh~~  
B.S.

हस्ताक्षर (अस्पष्ट)

(जेल अधिकारी, लाहौर)

12.9 (19) 29

हस्ताक्षर (भगतसिंह)

हस्ताक्षर (भगतसिंह)

संक्षिप्त नाम (बी.एस.)

संक्षिप्त नाम (बी.एस.)

(नोट : जैसे ही हम डायरी खोलते हैं, पहले पृष्ठ पर अंग्रेजी में लिखा है—भगतसिंह के लिए चार सौ चार (404 पृष्ठ)। नीचे एक हस्ताक्षर है और उस पर 12/9/29 की तिथि दी गई है, स्पष्ट है कि यह प्रविष्टि जेल अधिकारियों द्वारा भगतसिंह को काँपी देते समय की गई थी। इसके नीचे भगतसिंह के दो पूरे और दो लघु हस्ताक्षर हैं। पृष्ठ के ऊपरी दाएँ किनारे पर भी अंग्रेजी में भगतसिंह का नाम लिखा है।)

(पेज 2 खाली)

मुमुक्षु  
२१/९/२७

हस्ताक्षर (अस्पष्ट)

(जेल अधिकारी)

12.09.29

(पेज 4 खाली)

Land measurements :-

Common 20 bataans = 50 acres. i.e. 1 bataan =  $\frac{5}{2}$  acre

## भूमि का माप

(जर्मन 20 हेक्टेयर : 50 एकड़, अर्थात् 1 हेक्टेयर = 2) एकड़

## Freedom from Poverty

The "freedom of property" ... as far as the small capitalists and peasant-proprietors are concerned, became "freedom from property".

Marriage itself remained, as before, the legally recognized

form, the official cloak of prostitution ...

[*Scientific Utopia*)

*Book No.*

"An eternal being created human  
Society" as it is today, and submission to  
'superiors' and 'authority' is imposed on  
the 'lower' classes by divine will. This  
suggestion, coming from pulpit, platform  
and press, has hypnotised the minds of men  
and proves to be one of the strongest pillars  
of exploitation." {Translator's Preface}

{  
Origin of the Family}

## गरीबी से आजादी

"संपत्ति की आजादी" ... जहाँ तक छोटे पूँजीपतियों और किसान संपत्ति मालिकानों का सवाल है, 'संपत्ति से आजादी' बन गई।"

शादी खुद, पहले की तरह, कानून मंजूर वेश्यावृत्ति का सरकारी चौंगा बना रहा...

(सिस्म साइंटिफिक एंड यूटोपियन)

## मानसिक बंधन

"किसी शाश्वत शक्ति ने वह मानव समाज बनाया, जो आज हमारे सामने है, और 'श्रेष्ठ लोगों' तथा 'अधिकारी' को 'निम्न' वर्गों पर  
ईश्वरीय इच्छा से थोपा गया है।"

उपदेश मंचों, सभा मंचों तथा अखबारों द्वारा कही जानेवाली इसी बात ने लोगों के दिमाग को सम्पोहित किया है और यही शोषण के सबसे  
मजबूत स्तंभों में एक स्तंभ बन गया है।

('परिवार की उत्पत्ति' में अनुवादक की प्रस्तावना)

The Origin of the Family  
by Engels

Morgan was the first to make an attempt at introducing a logical order into the history of primitive society.

He divides it into three main epochs:-

1. Savagery
2. Barbarism
3. Civilization

1. Savagery is divided into three stages.

1. Lower
2. Middle
3. Higher

1. Lower Stage of Savagery:-

*Vision = Animal hunting*

Infancy of human race: "Living in trees." Fruits, nuts and roots serving as food! The formation of articulated speech is the principal result of that period.

2. Middle Stage:-

1. Fire discovered. 2. Stone being used as tools. 3. Hunting implements invented. 4. Communication consists in co-operation.

3. Higher Stage:-

1. Axes and arrows. No pottery. 2. Villages. 3. Settlements. 4. Timber used for building houses. 5. Cloth weaving.

Bow and arrow were for the stage of savagery what the sword was for barbarism and the fire arm for civilization. The weapon of supremacy.

## परिवार की उत्पत्ति

### लेखक एंगेल्स

मोरगन ने आदिम समाज के इतिहास में सुसंगत व्यवस्था लाने की सबसे पहली कोशिश की।

वह इसे तीन मुख्य युगों (epochs) में विभाजित करता है—

1. असभ्यता (Savagery); (2) बर्बरता (Barbarianism) और (3) सभ्यता (Civilization)
  2. असभ्यता का तीन अवस्थाओं में उप-विभाजन किया गया—
- (1) निम्न (2) मध्य (3) उच्च

### 1. असभ्यता की निम्न अवस्था

मानव जाति का शिशुकाल। वृक्षों में निवास। (2) फलों, काष्ठ-फलों एवं कंद-मूल का भोजन। (3) इस कालावधि की मुख्य उपलब्धि स्पष्ट उच्चारण वाली भाषा का विकास है।

### 2. मध्य अवस्था

1. आग की खोज, 2. मछली का भोजन के रूप में उपयोग, 3. शिकार के लिए पत्थर के हथियारों का निर्माण, 4. नरभक्षण अस्तित्व में आया

### 3. उच्च अवस्था

1. तीर और कमान। (मिट्टी के बरतन नहीं), 2. गाँव में बसाहट, 3. भवन निर्माण के लिए लकड़ी का उपयोग, 4. कपड़ों की बुनाई। असभ्यता की अवस्था में तीर और कमान का वही उपयोग था, जो बर्बरता की अवस्था में तलबार का और सभ्य अवस्था में आगे अस्त्रों का। ये श्रेष्ठता सिद्ध करनेवाले हथियार बन गए।

2. Barbarians:

1. Lower Stage:

- Introduction of pottery. At first wooden pots were covered with layers of earth, and afterwards earthen pots were discovered.
- Human races divided into two distinct classes: (1) Bastion who tamed animals and grew grain. (2) Wester who had only 'corn.'

2. Middle Stage:

- (a) Western hemisphere in America they grew food plants, cultivation and irrigation, and baked bricks for house-building.
- (b) Eastern: They domesticated animals; for milk and flesh. No cultivation in this stage yet.

3. Higher Stage:

- Melting of iron ore
- Invention of letter script and its utilization for writing records. This stage is richer in inventions. This is the period of Greek heroes.
- Iron ploughshares drawn by animals to grow corn on a larger scale.
- Clearing of forests, and iron ore and iron spade uses.
- Great achievements: (1) Improvement in tools, (2) the wheel, (3) hand-mills, (4) Potter's Wheel, (5) Production of oil and wine, (6) fashioning of metal, (7) wagon and chariot, (8) Ship building.

## 2. बर्बरता

### 1. निम्न अवस्था—

- मिट्टी के बरतनों का उपयोग शुरू हुआ। पहले काष्ठ के बरतनों पर मिट्टी की परत चढ़ाई जाती थी। बाद में मिट्टी के बरतन बनाए जाने लगे।
- मानवीय नस्लों का दो स्पष्ट श्रेणियों में विभाजन—
  - पूर्वी, जो पशुपालन करते थे और जिनके पास अनाज था।
  - पश्चिमी, जिनके पास सिर्फ 'अन्न' था।

### 2. मध्य अवस्था—

- (अ) पश्चिमी गोलादर्थ अर्थात् अमेरिका में वे खाद्यान्न के पौधे उगाते थे (कृषि सिंचाई) और भवन-निर्माण के लिए इंटे पकाते थे।
- (ब) पूर्वी : वे दूध और मांस के लिए पशु रखते थे। वहाँ इस अवस्था में कृषि की शुरुआत नहीं हुई थी।

### 3. उच्च अवस्था—

- लौह अयस्क को पिघलाना।
- लिपि का आविष्कार तथा अभिलेखों के लेखन के लिए इसका प्रयोग। इस अवस्था में खूब आविष्कार हुए। यह काल यूनानी नायकों का था।
- बड़े पैमाने पर अन्न उपजाने के लिए लोहे के हल को जानवरों से खींचा जाने लगा।
- वनों को काटकर खेती, लोहे की कुलहाड़ी तथा फावड़े का उपयोग।
- बड़ी उपलब्धियाँ :** (1) लोहे के उन्नत औजार, (2) धौंकनी, (3) हाथ चक्की, (4) कुम्हार का चाक, (5) तेल और मदिरा तैयार करना, (6) धातुओं को आकार देना, (7) चौपहिया गाड़ी और रथ, (8) पानी के जहाज का निर्माण,

9. Asiatic Architecture, 10, Towns and fort built.  
 11. Heroic Epochs and Santine mythology.  
 With these attainments Greeks enter the third stage  
 the 'Civilization':  
 To sum up:—  
 1. Savagery — time of predominating appropriation of  
 finished natural products; human  
 ingenuity invents mainly tools useful in  
 assisting this appropriation.  
 2. Barbarism:— time of acquiring knowledge of cattle  
 raising, of agriculture and of new methods  
 for increasing the productivity of nature by  
 human agency.  
 3. Civilization:— time of learning a wider utilization  
 of natural products, of manufacturing  
 and of art.

"We have, then, three main forms of the family,  
 corresponding in general to the three main stages  
 of human development:  
 1. In savagery, group marriage  
 2. In barbarism the paired family  
 3. In civilization, monogamy predominates  
 by adultery and prostitution. Between the  
 pairing family and monogamy, in the higher stage of  
 barbarism, the rule of men over female slaves  
 and polygamy is inserted.

98. 90

(9) कलाकृतिपूर्ण वास्तु, (10) नगर और दुर्ग-निर्माण, (11) होमर युगारंभ और संपूर्ण मायथोलॉजी  
 इन उपलब्धियों के साथ यूनानियों ने तीसरी अवस्था 'सभ्यता' में प्रवेश किया।

## सार-संक्षेप—

1. असभ्यता : वह समय, जब तैयार प्राकृतिक उत्पादों को मुख्य रूप से उपयोग में लाया जाता था; मानव ने अपनी बुद्धि से इन्हें प्राप्त करने में सहायक औजारों का निर्माण किया।
2. बर्बरता : पशुपालन, कृषि और मानव के द्वारा प्रकृति की उत्पादकता में वृद्धि के नए तरीकों को जानने का समय।
3. सभ्यता : प्राकृतिक उत्पादों के अधिक व्यापक उपयोग, विनिर्माण और कलाओं को सीखने का समय

————— : \* : —————

"मानव विकास की इन तीन प्रमुख अवस्थाओं के अनुरूप परिवार के तीन मुख्य रूप रहे—

1. असभ्यता की अवस्था में, सामूहिक विवाह
2. बर्बर अवस्था में, युगल परिवार
3. सभ्य अवस्था में, एक-विवाह। इसमें व्यभिचार और वेश्यावृत्ति भी होने लगी। युगल परिवार और एक-विवाह के बीच, बर्बरता की उच्च अवस्था में महिला दासियों पर पुरुषों की सत्ता तथा बहुविवाह भी होते रहे।

### बाबू दासगांव

Defects of  
marriage

Socialistic  
Revolution  
and  
marriage  
institution!

Especially a long engagement  
is in nine cases out of ten a perfect  
training school of adultery. pp. 91

We are now approaching a social  
revolution, in which the old economic foundations  
of monogamy will die away just as surely  
as those of its complement prostitution. Monogamy  
arose through the concentration of considerable  
wealth in one hand, a man's hand — and  
from the endeavour to bequeath this wealth  
to the children of this man to the exclusion  
of all others. This necessitated monogamy on  
the woman's, but not on the man's part. Hence  
this monogamy of women in no way limited  
open or secret polygamy of women.

Now the impending social-revolution  
will reduce this whole care of inheritance  
to a minimum by changing at least the  
overwhelming part of permanent and  
inheritable wealth — the means of production  
— into social property. Since monogamy  
was caused by economic conditions, will  
it appear when these causes are abolished?

pp. 91

## विवाह के दोष

दस में से नौ मामलों में, विशेषकर लंबे समय तक साथ रहने से यह व्यभिचार की परिपूर्ण प्रशिक्षण शाला बन जाता है। (पृष्ठ-91)

## सामाजिक क्रांति और विवाह संस्था

अब हम एक ऐसी सामाजिक क्रांति की ओर बढ़ रहे हैं, जिसमें एक विवाह की पुरानी आर्थिक बुनियादें इसकी पूरक वेश्यावृत्ति की तरह ही  
विलुप्त हो जाएँगी। एक विवाह की शुरुआत काफी धन-संपत्ति के एक ही हाथ में, एक व्यक्ति के हाथ में जाने तथा उस व्यक्ति द्वारा यह  
संपत्ति अपनी ही संतानों को देने के कारण हुई। इससे स्त्री के लिए एक विवाह आवश्यक हो गया, लेकिन पुरुष के साथ ऐसा नहीं हुआ।  
लिहाजा महिलाओं के इस एक-पति विवाह से पुरुषों के खुले अथवा गुप्त बहु-पत्नी विवाह पर किसी भी तरह रोक नहीं लगी।

अब आनेवाली सामाजिक क्रांति से विरासत का पूरा मसला ही बदल जाएगा, क्योंकि स्थायी और विरासत में दी जानेवाली धन-संपदा,  
उत्पादन का साधन सामाजिक संपत्ति बन जाएगा। चूँकि एक-पति विवाह का कारण आर्थिक स्थितियाँ थीं, अतः क्या इसके कारण समाप्त हो  
जाने पर यह विलुप्त हो जाएगा? (पृष्ठ-91)

"Ah, my Beloved, fill the Cup that cheers  
To-day of past Regrets and future Tears—  
To-morrow? — Why, To-morrow I may be  
Myself with Yesterday's Evil Troubles years.

Here with a Loaf of Bread beneath the Bough,  
A Flask of Wine, a Bottle of verse — and Thow  
Beside me singing in the Wilderness —  
And Wilderness is Paradise now.

— o : — "Under Wharffin"

State :- The State presupposes a public power of  
Coercion separated from the aggregate  
body of its members. (Engels) PP/16

Origin of State :- .... Degeneration of the old feuds between tribes  
regular mode of existing by systematic plundering  
Land and Sea for the purpose of acquiring cattle, slave  
and treasure. In short wealth is power and respects as  
the highest resource, and the religious institutions are  
abused in order to justify the forcible robbing of both wealth.  
Only one thing was missing: an institution that not only  
secured the newly acquired property of private individuals  
against the communistic traditions of the past that not only  
declared as sacred the formerly so-called private property  
and represents the protection of this sacred property as the  
highest property of human society, but that also stamps  
the gradually developing new forms of regime of property  
of constantly increasing wealth with the  
universal sanction of the society. An note to his  
P.T

मेरे महबूब, तू आकर ये मेरा जाम तो भर दे  
जो मुझे माजी औ' कल के दुःखों से परे कर दे  
इक कल का ही दिवस क्यों कल होंगे मेरे साथ  
हजारों बीते हुए साल, गमों-दर्दों-अलम परदे

————— : \* : —————

शुगल-ए-मयनोशी का सामाँ हो, बियाबाँ की बहार  
लौ-ए-जज्बात हो हैजान में मैदाँ का गुबार  
दिलसबा जीनत-ए-हलू हो कोई जाम बदस्त  
ताए-ए-सुल्तानी भी इस ऐश पे कर दूँ मैं निसार

— उमर खव्याम

## राज्य

राज्य में जोर-जबरदस्ती करने की राजकीय शक्ति होती है, जो इसके सदस्यों के संपूर्ण समूह से पृथक् होती है। [एंगेल्स (गुण्ठ-116) नोट : एंगेल्स की रचना परिवार व्यक्तिगत संपत्ति और राज्य सत्ता की उत्पत्ति]

## राज्य की उत्पत्ति

जनजातियों के बीच पुराने झगड़ों का विकृत रूप—मवेशी, गुलामों तथा खजानों को हथियाने के लिए जमीन और समुद्र पर बाकायदा लूट। संक्षेप में, दौलत की सबसे ज्यादा तारीफ और इज्जत की जाती है और दौलत की जबरदस्ती लूट को सही ठहराने के लिए सामान्य जन की पुरानी संस्थाओं का बेजा इस्तेमाल किया जाता है—एक ऐसी संस्था, जिसने ईमानदार लोगों की सापुदायिक परंपरा के विरुद्ध निजी व्यक्तियों की नई हासिल संपत्ति को न केवल हथिया लिया, जिसने न केवल पूर्व में तिरस्कृत निजी संपत्ति को पवित्र घोषित कर दिया और इस पवित्र संपत्ति की रक्षा को मानव समाज का सबसे बड़ा मकसद बना दिया, बल्कि जिसने क्रमिक रूप से बढ़ते तरीकों को समाज की सामान्य स्वीकृति से सही भी घोषित कर दिया।

Origin of  
the  
State:-

that lost the character of perfectness, not  
only to the newly rising class in with classes,  
but also to the right of the possessing classes  
exploit and rule the non-possessing classes.  
And this institution was formed. The  
State arose.

pp 129-130.

*Self Govt*  
*of Govt by Govt*

"Good government can never be a  
substitute for self-government."  
"Murray Campbell Brewster"

"We are convinced that there is only  
one form of Government,  
whatever it may be called,  
namely, where the ultimate  
control is in the hands of the  
people." "Earl of Salfor."

*Religion*

"My own view of religion is that of  
Inerrancy. I regard it as a disease  
born of fear, and as source of untold  
misery to the human race. I  
can not however deny that it has  
made some contribution to civilization.  
It helped in early days to fix the calendar and  
it caused a long-continued period of chronicles  
and prophecy which in time may  
become able to predict them. These two services  
I am prepared to acknowledge; but I do not  
know of any other." Bertrand Russel"

## राज्य की उत्पत्ति

एक संस्था, जिसने वर्गों के बीच नए रूप से बढ़ते विभाजनों को न केवल स्थायी स्वरूप दे दिया, बल्कि जिन वर्गों के पास दौलत है, उन्हें दौलतहीन वर्गों के शोषण का अधिकार भी दे दिया। और यह संस्था मजबूत थी। राज्य की उत्पत्ति। (पृष्ठ-129-130)

----- : \* : -----

## अच्छी सरकार की परिभाषा

"अच्छी सरकार कभी भी स्व-शासन का विकल्प नहीं हो सकती।"

—हैनरी कैपबेल बेनरमैन

"हम आश्वस्त हैं कि सरकार का सिर्फ एक रूप है, जिसे कुछ भी नाम दिया जाए, लेकिन इसमें मूल नियंत्रण लोगों के हाथों में होता है।"

—अर्ल ऑफ बालफौर

## धर्म

"धर्म के विषय में मेरा अपना विचार ल्यूक्रेशियस है। मैं इसे भय से उत्पन्न बीमारी और मानव जाति के अकथनीय कष्टों की जड़ मानता हूँ। बहरहाल, मैं इस बात से इनकार नहीं कर सकता कि इसने सभ्यता के विकास में कुछ योगदान किया है। इसने प्रारंभिक अवस्था में कलेंडर निर्धारित करने में मदद की और इसने मिस के पुरोहितों को ग्रहणों का वृत्तांत इतनी दक्षता से तैयार करने में मदद की कि एक समय वे इसका पूर्वानुमान करने में समर्थ हो गए। मैं इन दो सेवाओं को मान्य करने के लिये तैयार हूँ। उसकी किसी अन्य सेवा के बारे में मुझे नहीं पता।"

—बर्टेंड रसेल

(नोट : महान् गणितज्ञ और दार्शनिक बर्टेंड आर्थर विलियम रसेल (1872-1972))

Benevolent  
Government of  
the British

Ramsey Duffield called the  
British Government a 'benevolent despotism'  
and according to Ramsay Macdonald,  
the experienced leader of the British  
Labour Party, in all attempts to govern  
a country by a 'benevolent despotism',  
the governors are crooked men. They  
become subjects who obey, not citizens who  
act. True liberators, these are. Their  
spiritual superiors go.

Lord Jellicoe

W. H. Baldwin S. Montagu, Secretary of State  
for India, said in the House of Commons (1917):—  
"The Government of India is to wonder, to  
know, to understand, to civilise, to bring  
all for modern purposes. The Indian people  
are indefensible."

British Rule  
in India

Dr. Radcliffe's words:

"British Rule is bad as it is carrying  
on in India the worst and most immoral  
system of government in the world — the  
exploitation of masses by a few."

Liberation  
of India

"The English people love liberty for themselves.  
They hate all acts of injustice, except those which  
threaten their own. They are such liberty-loving  
people that they interfere in the Congo and Congo Free  
State and Belgium. But they regard their heel as  
on the neck of India." An English Author

## परोपकारी निरंकुशता

मोटेंग-चेम्सफोर्ड ने ब्रिटिश सरकार को एक 'परोपकारी निरंकुशता' कहा और ब्रिटिश लेबर पार्टी के साप्राज्यवादी नेता रेम्जे मैकडोनॉल्ड के अनुसार, यह देश को 'परोपकारी निरंकुशता' के साथ चलाने की हरचंद कोशिश करती है, जिसमें शासित लोगों को कुचला जाता है। "वे हुक्म मानने वाली प्रजा बन जाते हैं, कार्य करनेवाले नागरिक नहीं। उनका साहित्य, उनकी कला, उनकी आध्यात्मिक अभिव्यक्ति खो जाती है।"

————— : \* : —————

## भारत सरकार

सेक्रेटरी ऑफ स्टेट फॉर इंडिया रिया. माननीय एडिविन एस. मोनटेग ने 1917 में हाउस ऑफ कॉमंस में कहा—"भारत सरकार इतनी धूर्त, इतनी सख्त, इतनी गैर-लचीली, इतनी पुरातनपंथी है कि यह आधुनिक उद्देश्यों को पूरा करने में उपयोगी हो ही नहीं सकती। भारत सरकार समर्थन के योग्य नहीं है।"

## भारत में ब्रिटिश शासन

डॉ. रुदफोर्ड के शब्दों में—"भारत में ब्रिटिश शासन जैसे चलाया जा रहा है, वह दुनिया में सरकार की सबसे निकृष्ट और सबसे अनैतिक प्रणाली 'एक राष्ट्र द्वारा दूसरे का शोषण' है।"

## आजादी और अंग्रेज

"अंग्रेज आजादी को स्वयं अपनी खातिर ही प्यार करते हैं। वे अन्याय की सभी कार्रवाइयों से घृणा करते हैं, सिवाय उनके जो वे स्वयं करते हैं। वे ऐसे आजादी प्रेमी लोग हैं कि कांगो में दखलंदाजी करते हैं और बेल्जियनों पर 'शर्म-शर्म' चिल्लाते हैं, लेकिन वे भूल जाते हैं कि उनकी एड़ियाँ भारत की गरदन पर हैं।"

— एक आयरिश लेखक

(नोट: जेम्स रेम्जे मैकडोनॉल्ड (1866-1937) ब्रिटिश राजनायिक और ब्रिटिश लेबर पार्टी का संस्थापक सदस्य, 1923-24 तथा 1929-35 में ब्रिटेन का प्रधानमंत्री रहा।)

*Hab Kitchener*

... Let us therefore examine how man comes by the idea of punishing in this manner.

They learn it from the Government they live under, and reiterate the punishment they have been accustomed to behold. The heads stuck upon spikes, which remained for years upon Temple Bar, differed nothing in the horrors of the scene from those carried about upon spikes at Paris; yet this was done by the English Govt. It may perhaps be said that it signifies nothing to a man what is done to him after he is dead; but it signifies much to the living; it either tortures their feelings or hardens their hearts, and in either case it instructs them how to punish when power falls into their hands.

✓ Long then the axe to the root, and teach Government's humanity. It is their sanguinary punishments which corrupt mankind. . . . The effect of those cruel spectacles exhibited to the populace is to destroy tenderness or excite revenge; and by the base and false idea of governing men by terror instead of reason, they become precedents.

[Rights of Man. pp. 32, T. Paine.]

## जन प्रतिशोध

लिहाजा हमें यह समझना चाहिए कि इस तरह सजा देने का विचार मनुष्यों में कैसे आया?

वे उसे उन्हीं सरकारों से सीखते हैं, जिसके अंतर्गत वे जी रहे होते हैं, बदले में वही सजा देते हैं, जिसको भोगने के वे आदी हो चुके होते हैं। उसी तरह प्रतिशोध लेते हैं। शूल पर टँगे कटे हुए सिर कई वर्षों तक टेपिल बार बने रहे। यह खौफनाक मंजर किसी भी तरह उस मंजर से अलग नहीं था, जो पेरिस में हुआ था; फिर भी ब्रिटिश सरकार ने किया। शायद उसके लिए यह कोई मायने नहीं रखता, लेकिन जिंदा लोगों के लिए यह मायने रखता है। इससे या तो उनकी भावनाएँ आहत होती हैं या उनके दिल मजबूत हो जाते हैं। दोनों ही हालात में उन्हें यह सीख मिलती है कि जब उनके हाथ में ताकत आए तो सजा किस तरह दी जानी चाहिए।

इसकी जड़ को काटिए और सरकारों को इनसानियत सिखाइए। उसकी ये खूंज सजाएँ, जो मानव जाति को कलंकित करती हैं, लोगों के सामने रखे गए ये बेदर्दी के मंजर उनकी कोमलता को नष्ट करते हैं अथवा उनमें प्रतिशोध की भावना जगाते हैं, और विवेक की बजाय आतंक के जरिए शासन करने का नीच और झूठा विचार उनके लिए नजीर बन जाता है।

(राइट्स ऑफ मैन (पु. 32) टी. पैन)

### Monarch and Monarchy :

It was not against Monarchs; but against despotic principles of government, that the late revolution had its origin in him, but in the original establishment; many cultur'd back; and they were because he deeply rooted to be removed, and his Anger deeply staled of parasites and plunders to eliminately filthy to be cleaned, by anything short of a complete revolution. When it becomes necessary to do a thing, the whole heart and soul should go into the measure, or not attempt it. . . . The Monarch and the Monarchy were distinct and separate things; and it was agains the person or principles of the former, that the revolution commenced and the Revolution has been carried.

(P. 19)

### Natural & Civil Rights

Man did not enter into society to become worse than he was before, but to have more right better secured. His natural rights are the foundation of all his civil rights. Natural rights are those which appertain to man in right of his existence: (in intellectual, moral, etc. Civil rights are those that appertain to man in right of his being a member of society.)

pp. 44

## राजा और राजतंत्र

राष्ट्र ने क्रांति लुई सोलहवें के खिलाफ नहीं, बल्कि शासन के निरंकुश सिद्धांतों के खिलाफ की थी। इन सिद्धांतों की उत्पत्ति उसने नहीं, बल्कि सदियों पहले मूल व्यवस्था में हुई थी। इसकी जड़ें इतनी गहरी हो गईं कि उन्हें हटाना संभव नहीं था। परजीवी (वियों) और लुटेरों के आंजियन स्टेबल इतने ज्यादा गंदे हो गए थे कि उन्हें सिर्फ पूर्ण क्रांति से ही साफ किया जा सकता था। जब कुछ करना आवश्यक हो जाता है, तो इसमें पूरे मन और आत्मा को लगाया जाना चाहिए या फिर उसे करना ही नहीं चाहिए—राजा और राजतंत्र विशिष्ट और अलग-अलग चीजें थीं, और यह क्रांति राजा के व्यक्तित्व और सिद्धांतों के विरुद्ध हुई थी।

(प. 19)

----- : \* : -----

## प्राकृतिक और नागरिक अधिकार

मनुष्य समाज में इसलिए नहीं आया कि वह पहले से भी बदतर हो जाए, बल्कि इसलिए आया कि उसके अधिकार बेहतर तरीके से सुरक्षित हो जाएँ। उसके प्राकृतिक अधिकार उसके सभी नागरिक अधिकारों की बुनियाद हैं।

प्राकृतिक अधिकार उसके अस्तित्व के अधिकार से संबंधित हैं (बौद्धिक-मानसिक आदि)।

नागरिक अधिकार वे हैं, जिनका संबंध मनुष्य के समाज का सदस्य होने से है।

(प. 44)

.6      Kings Salary:

It is inhuman to talk of a million sterling a year paid out of the public funds of any country, for the support of an individual, whilst thousands who are forced to contribute thereto, are pinched with want and struggling with misery. God does not consist in a contrast between prisons and palaces, between poverty and pomp; it is not instituted to rob the widow of her mite and increase the worthlessness of the wealthy.

P. 204

"Give me liberty or death"

"It is in vain, Sir, to determine the matter. Gentlemen, may I say, peace, peace — but there is no peace. The war is actually begun. The next gale that sweeps from the North to our land will bring us ruin. Our brethren are already in the field. Long stand we idle? What is it that gentlemen wish? What would they have? Is life so dear or freedom so sweet as to be purchased at the price of chains and slavery. Forbid it, almighty God! I know not what course other may take, as for me, give me liberty or death."

Patrick Henry.

Right of Labour: "Whoever produces anything by weary labour, does not need a revelation from heaven to teach him that he has a right to the thing produced."

Robert G. Ingersoll

## राजा का वेतन

एक व्यक्ति के भरण-पोषण के लिए किसी देश के सार्वजनिक टैक्सों में से दस लाख स्टर्लिंग सालाना देने की बात करना अमानवीय है, जबकि हजारों लोग, जो इसमें योगदान करने के लिए मजबूर किए जाते हैं, अभाव से त्रस्त और बदहाली से जूझ रहे हैं। सरकार जेलों और राजमहलों के बीच या कंगाली और शान-शौकत के बीच किसी समझौते के रूप में नहीं होती; यह इसलिए नहीं गठित की जाती कि जरूरतमंद से उसकी दमड़ी भी लूट ली जाए और खस्ताहालों की दुर्दशा और बढ़ा दी जाए। (पृ. 204)

————— : \* : —————

## मुझे आजादी दो या मौत

“श्रीमान, इस बात के महत्व को कम करना फिजूल है। सरकार ‘अमन, अमन’ भले ही चिल्लाती हो, लेकिन अमन नहीं है। वास्तव में जंग शुरू हो चुकी है। उत्तर की ओर से आनेवाली झांझा से हमारे कानों में हथियारों की टकराहट की तेज आवाज सुनाई देती है। हमारे भाई मैदाने-जंग में हैं। हम यहाँ बेकार क्यों खड़े हैं? आखिर ये भले मानुष चाहते क्या हैं? उन्हें क्या मिलेगा? क्या जिंदगी इतनी प्यारी या अमन इतनी अच्छी चीज है कि जिसे जंजीरों तथा गुलामी की कीमत पर खरीदा जाए? हे परमात्मा! इसे रोको। मुझे नहीं पता कि दूसरे क्या रास्ता अखिलयार करेंगे? जहाँ तक मेरा सवाल है, तो मुझे आजादी दो या मौत।”

— पैट्रिक हेनरी

————— : \* : —————

## श्रम का अधिकार

“जो कोई भी कठिन श्रम से कोई चीज पैदा करता है, उसे यह बताने के लिए खुदा के किसी पैगाम की जरूरत नहीं कि पैदा की गई चीज पर उसी का अधिकार है।”

— रॉबर्ट जी. इंगरसोल

नोट : पैट्रिक हेनरी (1736-1790) : अमेरिकी स्वतंत्रता संग्राम के नेताओं में से एक प्रखर वक्ता और सांसद।

*"We consider it horrible that people should have their heads cut off, but we have not been taught to see the horror of life-long death which is inflicted upon a whole population by poverty and tyranny."* Mark Twain

*March 15*  
..... The Anarchists and the apostles of insurrection are also represented; and if some of the things seem to the reader the mere machinating of priests, I would say, let him not blame the faithful anthologist, let him not blame even the writer — let him blame himself, who has acquiesced in the existence of conditions which have driven his fellowmen to extremes of madness and despair.

Upton Sinclair. Rafael 19  
*Cry for Justice*

*The old labourer*  
He (the old labourer out of employment) was struggling against age, against nature, against circumstances; the entire weight of society, law and order pressed upon him to force him to lose his self-respect and liberty... He knocked at the doors of the farms and found good in man only — not in law and order, but in individual man alone.

Richard Jefferies. 38.  
*read 11/2  
and 12/1*

“हम इसे भयानक मानते हैं कि लोगों के सिर कट जाएँ, लेकिन हमें उस मृत्यु के खौफ के बारे में नहीं बताया गया है, जो गरीबी और अत्याचार द्वारा व्यापक आबादी पर थोप दी गई है।”

— मार्क ट्वेन

## अराजकतावादी

“...अराजकतावादियों तथा बगावत के उपदेशकों का भी प्रतिनिधित्व है; अगर पाठकों को कुछ चीजें उन्माद फैलाने वाली लगती हैं, तो मैं यही कहूँगा कि उन्हें इसके लिए आस्थावान संकलनकर्ता (anthologist) को दोष नहीं देना चाहिए, और लेखक को भी नहीं। उसे खुद को दोष देना चाहिए, जिसने ऐसी परिस्थितियों को खामोश रहकर स्वीकारा, जिनके चलते उसके देश-समाज के लोग पागलपन और निराशा की चरम सीमा पर जा पहुँचे हैं।”

— यूटोपियन सिंक्लेयर,  
प्रीफेस क्राई फॉर जस्टिस (पृ. 19)

## बूढ़ा मजदूर

“...वह (बेरोजगार बूढ़ा मजदूर) अपनी उम्र, कुदरत और हालात से कशमकश कर रहा था। समाज, कानून और व्यवस्था के बोझ ने उसकी खुदारी और आजादी छीन ली...उसने किसानों का दरवाजा खटखटाया और उसे सिर्फ वहाँ भला आदमी मिला (वह सिर्फ मनुष्य में ही अच्छाई पा सका) — न कानून में, न व्यवस्था में, बल्कि सिर्फ व्यक्ति में।”

— रिचर्ड जेफरीज-II

Poor labourers.

"... And we, the men who braved this task,  
were outcasts of the world. A blind fate, a vast  
merciless mechanism, cut and shaped the  
fabric of our existence. We were men despised  
when we were most useful, rejected when  
we were not needed, and forgotten when  
our troubles weighed upon us heavily. We  
were the men sent out to fight the spirit of the  
wastes, rob it of all its primeval horrors, and  
 batter down the barriers of its world-old  
defences. Where we were working a new town  
would spring up some day; it was already  
growing up, and then, if one of us walked there,  
"a man with no fixed address," he would be  
taken up and tried as a loiterer and vagrant."  
 From *Children of the Dead End*  
 by Patrick MacGill.  
 C. J. '68.

Morality.

"Morality and religion are but  
words for him who fishes in gullies for the  
means of subsisting life, and crochets  
behind barrels in the street for shelter  
from the cutting blasts of a winter night."

Norice Greeley. 128

*Hunger* / "It is desirable for a ruler that  
no man should suffer from cold and hunger  
under his rule. Man can not maintain  
his standard of morals when he has no  
ordinary means of living."

Kankobodhi Ponothid Monks  
of Takuan 14<sup>th</sup> Century  
P. 135

## गरीब मजदूर

"...और हम लोग, जिन्होंने इसका अंजाम देने का बीड़ा उठाया, इस दुनिया में कुजात ही रहे। एक अंधी किस्मत, एक विराट् निर्मम तंत्र ने काट-छाँटकर हमारे अस्तित्व का ढाँचा निर्धारित कर दिया। हम उस वक्त तिरस्कृत हुए जन हम सबसे अिथक उपयोगी थे। हमें उस वक्त दुल्कार दिया गया, जब हमारी जरूरत नहीं थी और हमें उस वक्त भुला दिया गया, जब हमारे ऊपर विपत्तियों का पहाड़ टूटा हुआ था। हमें बीहड़-बंजर साफ करने के लिए उसकी सारी आदिम भयंकरताओं को दूर करने के लिए तथा उसके विश्व-पुरातन अवरोधों को छिन-भिन कर डालने के लिए भेज दिया जाता। हम जहाँ भी काम करते, वहाँ एक दिन एक नया शहर जन्म ले लेता; और जब यह जन्म ले ही रहा होता, तब यदि हममें से कोई वहाँ चला जाता, तो उसे 'बिना निश्चित पते का आदमी' कहकर पकड़ लिया जाता और सिरफिरा-आवारा कहकर उस पर मुकदमा चलाया जाता।"

—‘चिल्ड्रन ऑफ दि डेड एंड’ से  
पेट्रिक मेकगिल सी.जे.

————— : \* : —————

## नैतिकता

"उस शख्स के लिए नैतिकता और धर्म महज अल्फाज हैं, जो जिंदगी चलाने के लिए नालियों में से मछली पकड़ता है, और सर्द रात के ठंडे झोंकों से बचने के लिए गली में रखे बैरल्स के पीछे सिकुड़ जाता है।"

—होरेस ग्रीले

((पृ. 128) नोट : अमेरिकी पत्रकार और राजनीतिज्ञ होरेस ग्रीले (1811-1872))

————— : \* : —————

## भूख

“किसी हुक्मरां से यह उम्मीद की जाती है कि उसकी हुक्मत में कोई भी ठंड और भूख से पीड़ित न हो। आदमी के पास जब जिंदगी के लिए जरूरी मामूली चीजें भी न हों तो वह नैतिकता के मापदंड कैसे कायम रख सकता है?”

— कोंको होशी, बौद्ध भिक्षु  
जापान, 14वीं शताब्दी

\* :

### Freedom: —

Man! whose boast it is that ye  
Come of fathers, brave and free,  
If there breathe on earth a slave,  
Are ye truly free and brave?  
If you do not feel the chain  
When it works a brother's pain,  
Are ye not base slaves indeed,  
Slaves unworthy to be freed?

15

Is true Freedom but to break  
Fathers for our own dear sake,  
And, with leatheren hearts, forget  
That we owe mankind a debt?  
No! True Freedom is to share  
All the chains our brothers wear,  
And, with heart and hand, to be  
Everest to make others free!

They are slaves who fear to speak  
For the fallen and the weak;  
They are slaves who will not choose  
Hobled, scoffing and abuse,  
Rather than in silence shrink  
From the truth they need must think;  
They are slaves who dare not be  
In the right with two or three.

“James Russell Lowell”

— : — : — 7.89

### आजादी

मनुष्य, तुम वीर और स्वतंत्र होने का करते हो दावा  
यदि धरती पर एक भी गुलाम मौजूद है  
तो तुम कैसे कर सकते हो यह दावा?  
यदि तुम्हारे देश में आज भी गुलामी का अस्तित्व है  
फिर तुम अपने सीने पर आजादी  
और बहादुरी का तमगा कैसे लगा सकते हो?  
क्या तुम सचमुच नीच गुलाम नहीं हो  
जब तक तुम्हारे अपने भाई तकलीफ में हैं  
क्या तुम आजाद होने के काबिल हो?  
हमारे अपने लोगों को जंजीरों से  
मुक्त कराना ही सच्ची आजादी है  
हम मानव जाति के कर्जदार हैं  
क्या यह भूल जाना सच्ची आजादी है?

नहीं ! सच्ची आजादी है  
अपने जो लोग जंजीर में जकड़े हैं  
उनका दर्द महसूस करना  
और तन-मन से उन्हें मुक्त कराने में जुट जाना ।  
गुलाम वे हैं, जो  
मजलूमों और कमजोरों के हक में बोलने से डरते हैं,  
गुलाम वे हैं, जो  
नफरत, उपहास और गाली का  
सामना करने के बजाय  
सिकुड़े हुए चुपचाप बैठे रहते हैं।  
गुलाम हैं वे, जो गलत होने के  
बावजूद होंगे बहुमत में  
बजाय सही होने के बावजूद अल्पमत में ।

— जेम्स रसेल लॉवेल (पृ. 189)

---

नोट : जेम्स रसेल लॉवेल, अमेरिकी कवि, निबंकार और संपादक (1819-91)

————— : \* :—————

Full many a gem of purled ray serene  
The dark unfathomed caves of ocean bear;  
Full many a flower is born to blush unseen,  
And waste its sweetness on the desert air.

Invention:  
Whether it is questionable if all the  
mechanical inventions yet made have  
lightened the day's toil of any human being.  
J. S. Mill P. 199

Altruism:  
"There is no one on earth more  
disgusting and repulsive than he who gives  
alms. Even as there is no one so miser-  
able as he who accepts them." —  
Marie Edwy. P. 203

Liberty:  
Those corpses of gallants,  
Those martyrs that hang from the gibbets—  
those hearts pierced by the greybeak,  
Cold and motionless as they seem, live elsewhere  
With unlaughed vitality.  
They live in other youngmen, O Kings!  
They live in brothers again ready to defy you!  
They were purified by death — they were caught  
and exalted.

सागर की अतल गुफाओं की गहराई में  
प्रशांत पवित्रतम रश्मियों की अनंत मणियाँ भरी पड़ी हैं  
अदृश्य लालिमा से अनंत फूल खिलते हैं  
और रेगिस्तान की हवा में अपनी सुरभि खो देते हैं।

————— : \* : —————

## आविष्कार

अभी तक यह प्रश्न अनुत्तरित है कि क्या अभी तक जिन यंत्रों का आविष्कार हुआ है, उनसे किसी मनुष्य की मेहनत में कमी आई है।"

— जे.एस. मिल (पृ. 199)

## भीख

"धरती पर कोई भी व्यक्ति उस व्यक्ति से अधिक नफरत के काबिल और हमदर्दी के नाकाबिल नहीं है, जो भीख देता है। उससे भी ज्यादा कोई अधर्मी नहीं है, जो उसे स्वीकार करता है।"

— मैरिम गोर्की (पृ. 204)

————— : \* : —————

## स्वतंत्रता (Liberty)

उन युवाओं के शब,  
वे शहीद, जो फाँसी पर झूल गए  
वे हृदय, जो धूसर सीसे से छिद गए  
वे भले ही ठड़े और बेजान दिखाई दें,  
वे कहीं और जीवित रहते हैं  
जीवित, जीवंत।

हे राजा! वे फिर से तुम्हें ललकारने  
दूसरे युवाओं में जिंदा रहते हैं,  
मृत्यु ने उन्हें कर दिया है पवित्र—  
शिक्षित और गौरवान्वित!

नोट : 1. जान स्टुअर्ट मिल, अंग्रेज निबंधकार और उदारवादी दार्शनिक (1803-73)  
2. मैक्सम गोर्की, प्रसिद्ध रूसी सर्वहारा क्रांतिकारी लेखक।

Not a grave of the murder'd for freedom, 21  
but-grooved for freedom, in its turn to bear seed,  
which the wind carry afar and return, and the  
rains and the snows nourish.  
Not a disembodied spirit-came weapons of tyrants  
let loose,  
But it stalks invisibly over the earth, whispering,  
counselling, cautioning.

~ P. 268 "Walt Whitman"

*Free Thought*  
"If there is anything that cannot bear  
free thought let it crack." 271  
Wendell Phillips

State :—  
"Partay with the state! It will take part  
in that revolution. Undermine the whole  
conception of a state, declare free choice  
and spiritual kinship to be the only all  
important conditions of any union, and  
you will have the commencement of a  
liberty that is worth something."

Henry David. 273

Oppression :—  
"Grievous oppression makes a wise  
man mad." 274  
P. 274

स्वतंत्रता के शहीदों की कब्र नहीं होती  
उनसे उगते हैं स्वतंत्रता के बीज, फिर बीज से बीज।  
जिन्हें हवा ले जाती है दूर और पुनः बो देती है,  
वर्षा और बर्फ उनका करते हैं पोषण।  
जालिम का कोई हथियार उसे मार नहीं सकता,  
उसकी आत्मा धरती पर विचरती है अजेय  
फुसफुसाती, परामर्श देती, खबरदार करती।

—वाल्ट व्हिटमैन (पृ. 268)

## मुक्त चिंतन

"हर उस चीज पर करारी चोट पड़नी चाहिए, जो मुक्त चिंतन को सहन नहीं कर सकती।"

—वैडेल फिलिप्स (पृ. 271)

## राज्य

“राज्य से दूर! मैं उस क्रांति में शामिल होऊँगा। राज्य की संपूर्ण धारणा की जड़ खोदी जाने दो, मुक्त विकल्प और आध्यात्मिक धारणा को किसी भी संघ की सबसे महत्वपूर्ण स्थिति बनने दो, और तब उस मुक्ति की शुरुआत होगी, जिसका कोई मोल है।”

— हेनरिक इब्सन (प. 273)

————— : \* : —————

## दमन

“बेशक दमन किसी समझदार को पागल बना देता है।”

- नोट :
1. वॉल्ट व्हिटमैन (1819-92) : प्रसिद्ध अमेरिकी कवि।
  2. विडेल फिलिप्स (1811-1884) : अमेरिकी वक्ता, सुधारक और दासता विरोधी आंदोलन के सक्रिय कार्यकर्ता।
  3. हेनरिक इब्सन (1882-1906) : नावे के प्रसिद्ध नाटककार।

Martyr!

The man who flings his whole life  
into attempt, at the cost of his own life,  
to protest against the wrongs of his fellow  
men, is a saint compared to the actus  
and passive upholders of cruelty and  
injustice, even if his protest destroys  
other lives besides his own. Let him  
who is without sin in society cast the  
first stone at such an one. P. 287

Lower Class

While there is a lower class, I am in it.  
While there is a criminal element, I am of it.  
While there is a soul in jail, I am not free.

Bengal Dr. Dutt.

One against all [Charles Fourier 1772-1837] 144

The present social order is a ridiculous  
mechanism, in which portions of the whole are in conflict  
and acting against the whole. We see each class in society  
desire, from interest, the misfortune of the other classes,  
placing in every way individual interest in opposition to  
public good. The lawyer wishes litigation and suits; particularly  
among the rich; the physician desires sickness. (The latter would  
be ruined if everybody died without disease or the master would  
the former if all servants were settled by arbitration.) The soldier  
wants a war, which will carry off half of his comrades and secure  
him promotion; the undertaker wants burials; monopolists and  
fostallers want famine; to double or treble the price of grain;  
the architect, the carpenter, the mason, want conflagration,  
that will burn down a hundred houses to give activity to  
their branches of business.

P. 202

## शहीद

वह शख्स, जो अपने लोगों द्वारा की जानेवाली नाइनसाफियों के खिलाफ जिंदगी लगा देता है, अपनी जिंदगी की भी बाजी लगा देता है, वह संत है, उस शख्स की तुलना में, जो बेरहमी और नाइनसाफी का सक्रिय और निष्क्रिय समर्थन करता है, भले ही उसके विरोध से उसकी अपनी जिंदगी के साथ-साथ अन्य जिंदगियाँ भी क्यों न नष्ट हो जाती हों। ऐसे व्यक्ति पर पहला पथर मारने का हकदार वही हो सकता है, जिसने कभी कोई याप न किया हो। (प. 287)

## निम्न वर्ग

जब तक निम्न वर्ग है, मैं उसमें हूँ।  
जब तक कोई मुजरिम है, मैं उसमें हूँ।  
जब तक कोई जेल में बंदी है, मैं मुक्त नहीं हूँ।

— यूजीन बी. डेस (प. 144)

————— : \* : —————

## एक बनाम सब

(चाल्स फाउरियर : 1772-1837)

मौजूदा सामाजिक व्यवस्था एक हास्यास्पद संरचना है, जिसमें संपूर्ण के अंश इस संपूर्ण के विरुद्ध एक टकराव में सक्रिय हैं। हम समाज के

हर एक वर्ग में लालसा देखते हैं, जिसकी इच्छा रहती है कि अन्य वर्गों का बुरा हो। ‘सर्वजन हिताय’ की जगह हर तरह से अपने हित को ऊपर रखा जाता है। वकील चाहता है कि मुकदमे और नालिश हों, ‘खासकर पैसेवालों’ के बीच; चिकित्सक चाहता है कि बीमारियाँ हों (यदि हर व्यक्ति बीमारी के बिना मर जाएगा, तो चिकित्सक बरबाद हो जाएगा, और अगर सभी झगड़े समझौते से निपट गए, तो वकील बरबाद हो जाएगा)। फौजी जंग चाहता है, जिसमें उसके आधे साथी मारे जाएँ और उसकी पदोन्नति हो जाएँ; अंत्येष्टि कराने वाला कफन-दफन की कामना करता है। एकाधिकारवादी और जमाखोर अकाल चाहते हैं, ताकि अनाज की कीमत दोगुनी या तिगुनी हो जाए। वास्तुविद्, बढ़ई, राजगीर अग्निकांड चाहते हैं, ताकि सैकड़ों घर जल जाएँ और उन्हें काम मिले।

————— : \* : —————

नोट : 1. यूजीन डेब्स (1855-1926) : अमेरिकी समाजवादी नेता।  
2. फ्रांस्वा मेरी चार्ल्स फूरिए (1772-1837) : फ्रांसीसी समाजवादी लेखक।

New gospel

"Society can overlook murder, adultery or  
swindling; it never forgives the preaching of  
a new gospel." 1827 Frederic Harrison

The blood

The tree of liberty must be refreshed from  
time to time with the blood of patriots and  
tyrants. It is its natural manure.  
Thomas Jefferson. 332

Charles Edward Russell

Say, then, that the main error of mankind;  
if his error had been ten times as great, it might  
to have been wiped from human recollection by his  
sacrifice.

Granted freely that their idea of the best manner  
of making a profit was utterly wrong and impossible,  
granted that they would not do best every to work, but instead  
try if that were done well after all, except the social  
order as they found it. If they did that, then, of this error,  
that this will, then, have been bad men, bad persons,  
not benevolent, nor benevolent, nor benevolent, nor  
selfish, nor crazy, then what was to be necessarily compelled  
to suffer and die rather?

In one ever contemplated simple fact that  
men do not band themselves together to make a protest  
without the belief that they have something to protest  
about, and that in any organized state of society, a  
whole-hearted protest is something for good in itself.

Charles Edward Russell. 333.

## नया उपदेश

"समाज कल्त, व्यभिचार अथवा धोखेबाजी की अनदेखी कर सकता है; यह नए उपदेश (नए सिद्धांत) को कभी माफ नहीं कर सकता।"

—फ्रेडरिक हेरिसन (पृ. 327)

## आजादी का पेड़

"आजादी के पेड़ को समय-समय पर देशभक्तों और जालिमों के खून से सींचते रहना चाहिए। यह प्राकृतिक खाद है।"

—थॉमस जेफरसन (पृ. 332)

## शिकागो के शहीद

तब कहिए कि मनुष्य ने गंभीर त्रुटि की, यदि उसकी त्रुटि उस त्रुटि से दस गुना ज्यादा है, जो उसके बलिदान के कारण मानव की स्मृति से धुल जानी चाहिए।

—खुलकर मंजूर है कि विरोध करने का उनका कोई तरीका, जिसे वे सबसे अच्छा मानते थे, एकदम गलत और असंभव था। माना कि उन्होंने काम का सबसे अच्छा तरीका नहीं अपनाया। लेकिन वह क्या था, जिसने उन्हें मौजूदा सामाजिक व्यवस्था के खिलाफ जाने को प्रेरित किया? वे और उनके साथ खड़े होनेवाले हजारों लोग बुरे नहीं थे, और न दुष्ट, न खून के प्यासे, न बेरहम, न मुजरिम, न खुदगर्ज, न पागल। तब वह क्या चीज थी, जिसने इतने तीखे और गहरे प्रतिवाद को उकसावा दिया?

—किसी ने कभी इस तथ्य पर विचार नहीं किया कि लोग बिना इस विश्वास के खिलाफत की ओर नहीं मुड़ते कि उन्हें किसी चीज की खिलाफत करनी है, और यह कि समाज की किसी भी संगठित स्थिति में किसी भी व्यापक विरोध की गंभीरता से पड़ताल होनी चाहिए।

—चार्ल्स एड्वर्ड रसेल (पृ. 333)

- नोट : 1. फ्रेडरिक हेरिसन (1831-1923) : प्रसिद्ध विधिवेत्ता : इतिहास, राजनीति और साहित्य पर कई पुस्तकों के लेखक।  
2. थॉमस जेफरसन (1743-1826) : अमेरिकी के तीसरे राष्ट्रपति, अमेरिकी स्वतंत्रता संग्राम के अग्रणी नेता और संविधान

नियतांशों में प्रमुख।

With Revolutions

"I also wish my friends to speak little or not at all about me, because idols are erected when men are praised, and this is very bad for the future of the human race. Let alone, no matter by whom committed, ought to be glorified, praised or blamed. Let them be punished in order that they may be initiated when they seem to contribute to the common weal; let them be censured when they are regarded as injurious to the general well-being, so that they may not be repeated."

"I desire that on no occasion, whether near or remote, nor for any reason whatsoever, shall demonstrations of a political or religious character be made before my remains, as I consider the time devoted to the dead would be better employed in improving the condition of the living, most of whom stand in great need of this."

Will of Francesc Ferrer.  
Spanish educator 1859-1909  
Engraved after the Barcelona  
Print by a plot of his clerical  
outfit.

Charity:

"Come follow me", said Jesus Christ to His rich young master. ... To stay in his own set and invest his fortune in work of charity, works have been considered easy. Philanthropy has been fashionable in every age. Charity takes the in surreptitious edge off of honest. Therefore the philanthropist rich man is a benefactor to his fellow magnates, and it is made to feel their gratitude, to him all doors of fashion spring. He denied the legitimacy of alms-giving, as a plaster for the decaying sore in social tissue... Philanthropy as a substitute for justice - he would have known of it."

## एक क्रांतिकारी की वसीयत

"मैं भी चाहता हूँ कि मेरे दोस्त मेरे बारे में बहुत कम या कुछ भी न बोलें, क्योंकि सब इनसानों की तारीफ होती है, तो नकली देवता बन जाते हैं, और यह मानव जाति के भविष्य के लिए बहुत बुरी बात है।" सिर्फ काम का अध्ययन, उसकी सराहना या आलोचना की जानी चाहिए। इससे फर्क नहीं पड़ता कि उसे किसने किया? यदि वे जनहित में योगदान करनेवाले हों तो उनकी तारीफ की जाए, ताकि जनहित के किसी कार्य में योगदान के लिए उन्हें दोहराया जा सके।

यदि ये जनसामान्य के लिए नुकसानदेह माने जाएँ तो उनकी आलोचना की जाए, ताकि वे दोहराए न जाएँ।

"मेरी अपेक्षा है कि किसी भी अवसर पर, चाहे वह पास हो अथवा दूर, किसी भी कारण से मेरे अवशेषों के सामने कोई राजनीतिक प्रदर्शन अथवा धार्मिक कार्य न किए जाएँ, क्योंकि मैं मानता हूँ कि मृतकों के प्रति समर्पित किए जानेवाले समय को जिंदा लोगों के हालात सुधारने में लगाया जाना बेहतर होगा, जिनमें से ज्यादातर को इसकी जरूरत है।"

—फ्रांसिस्को फैरेर की वसीयत

स्पेनिश शिक्षक (1859-1909),  
जिसे धर्म पुणीहतों द्वारा बासिलोना दंगों के बाद  
दुश्मनीवश एक पड़यंत्र के तहत फौंसी दे दी गई।

————— : \* : —————

## खैरात (दान)

"मेरे पीछे आओ," इसा मसीह ने धनी युवक को कहा, "अपनी जगह रहकर खैराती कामों में पैसा लगाना तुलनात्मक रूप से आसान परोपकारी काम हर युग में बहुत प्रचलन में रहा है। खैरात से गरीबी से उत्पन्न बगावत की धार भोथरी हो जाती है। अतः परोपकारी धनी आदमी अपने सरीखे दौलतमंदों का ही हितैषी होता है, और उन्हीं की एहसानमंदी महसूस करता है। उसके लिए सभ्य समाज के सभी दरवाजे फटाफट खुल जाते हैं। वह खैरात देने को सामाजिक टिश्यू के गहरे घाव पर प्लास्टर के रूप में मानने की बात स्वीकार नहीं करता। परोपकार को न्याय के एक विकल्प के रूप में उन्होंने कर्तव्य तरजीह नहीं दी।

charity is twice cursed — it hardens him  
that gives and softens him that takes. It does  
more harm to the poor than exploitation, because  
it makes them willing to be exploited. It breeds  
slavishness which is moral suicide. The  
only thing good words permit a master fortune  
to do was to give itself to revolutionary propaganda,  
in order that master fortunes might be forever  
after impossible . . .

Bonnie White — Charynman  
P. 353 Born 1876 died

*Right to Read on*

The power of genius is a visible thing  
Formal, and circumscribed in time and space;  
But who the limits of that power shall trace,  
Which a brave people into light can bring  
Or hide, at will — for freedom combating  
By just revenge inflamed? No foot may trace,  
No eye can follow, to a fatal place.  
That power that spirit whether on the wing  
Like the strong wind, or sleeping like the wind  
With in its awful caves — from year to year  
Spring this indigenous produce far and near;  
No craft this subtle element can bind,  
Rising like water from the soil, to find  
In every nook a lip that it may cheer.  
{W. Wordsworth.}

“खैरात दोहरे रूप में अभिशप्त है, इससे खैरात देने वाले की अकड़ बढ़ जाती है और लेने वाले की विनम्रता। इससे गरीबों का शोषण से ज्यादा नुकसान होता है, क्योंकि इससे वे शोषित होने को राजी हो जाते हैं। इससे दासता बढ़ती है, जो नैतिक आत्महत्या है। ईसा मसीह ने अथाह दौलत के लिए सिर्फ एक ही इजाजत दी थी और वह यह थी कि उसे क्रांतिकारी प्रचार के लिए समर्पित कर दिया जाए, ताकि बाद में अथाह दौलत का जमा होना ही हमेशा के लिए असंभव हो जाए।”

— बाउक व्हाइट, क्लेरगीमेन,  
जन्म 1874, अमेरिका (पृ. 353)

————— : \* : —————

## आजादी के लिए लड़ाई

फौजी ताकत दिखाई देती है  
साकार और देश-काल की परिधि में  
लेकिन उस ताकत की सीमा कौन बाँधेगा?  
जो बहादुर लोग प्रकाश में ला सकते हैं  
अथवा इच्छानुसार छुपा सकते हैं—आजादी की लड़ाई के लिए  
सिर्फ बदला लेने के लिए कदम आगे नहीं बढ़ सकते,  
कोई आँख, किसी घातक स्थान तक नहीं जा सकती  
वह ताकत, वह जोश भले ही हवा पर सवार हो,  
झंझा की तरह, अथवा सो रहा हो मंद बायु की तरह  
इसकी प्रशांत गुफाओं में साल-दर-साल  
यहाँ वसंत आएगा और पास;  
कोई हुनर इस सूक्ष्म तत्त्व को बाँध नहीं सकता,  
मिट्टी से उठते पानी की तरह पाने के लिए  
हर कोने में एक होंठ, जो कह सके वाह-वाह!

(डब्ल्यू वड्सवर्थ)

————— : \* : —————

नोट : विलियम वड्सवर्थ (1750-1850) : प्रसिद्ध अंग्रेज कवि।

26      The Charge of the Light Brigade

Half a league, half a league,  
Half a league onward,  
All in the valley of Death  
Rode the Six hundred.  
Forward the light Brigade!  
Charge for the guns! He said;  
Into the valley of Death  
Rode the six hundred.  
  
"Forward the light Brigade!"  
Who then a man dismayed?  
Not, though the soldiers knew  
Some one had blundered:  
  
Their's not to make reply,  
Their's not to reason why,  
Their's but to do and die:  
Into the valley of Death  
Rode the six hundred.  
  
Cannon to the right of them,  
Cannon to the left of them,  
Cannon in front of them;  
Volleyed and thundered;  
Stormed at with shot and shell,  
Boldly they rode and well,  
Into the jaws of Death,  
Into the mouth of Hell  
Rode the six hundred.  
  
Blashed all their sabres bare,  
Flashed as they turned in air  
Sabring the gunners there,  
Charging an army, while  
All the world wondered:

: \* :

## लाइट ब्रिगेड का धावा

हाफ ए लीग लीग, हाफ ए लीग  
हाफ ए लीग आगे  
मौत की घाटी में सभी  
चोड़े पर सवार छह सौ सैनिकों ने किया प्रवेश  
उसने कहा, "लाइट ब्रिगेड, आगे बढ़ो!  
तोपें पर धावा बोलो!"  
मौत की घाटी में छह सौ  
सैनिकों ने किए प्रवेश।  
"आगे बढ़ो, लाइट ब्रिगेड!"  
क्या किसी का जोश कम हुआ?  
नहीं, हालाँकि सैनिकों को पता था  
नहीं, किसी से गलती हुई।  
किसी ने नहीं दिया जवाब, वजह ही नहीं थी सिर्फ करो या मरो  
मौत की घाटी में छह सौ सैनिकों ने किया प्रवेश।  
उनके दाईं ओर तोपें बाईं ओर तोपें, सामने तोपें  
उगलतीं आग गर्जना के साथ;  
उनके गोलों का सामना करते हुए  
वे बहादुरी से आगे बढ़े  
मौत के जबड़ों में मौत के मुँह में  
छह सौ सैनिकों ने किया प्रवेश।  
उहोंने अपनी नंगी  
तलवारें निकालीं  
उहोंने हवा में लहराया  
सामना करते हुए तोपचियों का

बढ़ते गए आगे  
 दुनिया उहें अचरज से  
 देखती रही  
 वे बैटरी के धुएँ में समा गए  
 पंक्ति तोड़कर सीधे चले गए  
 कोसेक औं रशियन  
 चकरा गए तलवार के वार से  
 हो गए तितर-चितर  
 फिर पीछे हट गए,  
 लोकिन वे छह सौ सैनिक  
 नहीं हटे पीछे।  
 उनके दाईं और तोपें  
 उनके बाईं और तोपें  
 उनके पीछे तोपें  
 गोले बरसार्ति गर्जना के साथ;  
 गोलियों का सामना करते हुए  
 जब उनका नायक और घोड़े  
 गिर गए  
 जो खूब लड़े, बखबी लड़े  
 मौत के जबड़े से निकले  
 मौत के मँह से बाहर आए  
 छह सौ सैनिकों में से  
 बहुत कम थे बचे।  
 उनका गौरव कब कम हो सकता है  
 उहोंने क्या गजब धावा बोला!  
 पूरी दुनिया अचरज में थी  
 सम्पान करो उस आक्रमण का  
 लाइट ब्रिगेड का सम्पान करो  
 उन महान् छह सौ सैनिकों का!

## —लॉर्ड टेनीसन

————— : \* : —————

दिल दे तो इस मिजाज का परवरदिगार दे  
 जो गम की घड़ी को भी खुशी से गुजार दे।

————— : \* : —————

सजाकर मय्यत-ए-उम्मीद नाकामी के फूलों से  
 किसी हमदर्द ने रख दी मेरे टूटे हुए दिल में

————— : \* : —————

छेड़ न ऐ फरिश्ते! तू जिक्र-ए-गम-ए-जाना ना  
 क्यों याद दिलाते हो भूला हुआ अफसाना

————— : \* : —————

سچا کر کیتے جانے والے کوئی نہیں  
کہا جائے گا۔

-8

Pink We're the sum of sins that baffled  
Desired and missed humanity;  
They defiled the field and sheepfold;  
For their birth-right — so will we!

[T. Campbell]

Grey / Green He! not for idle hatred, nor  
for honour, fame, nor of applause,  
But for the glory of the cause  
You died, what will not be forgot.

[Arthur Clapp]

Immortality of Soul: C.  
For you know if you can well  
get a man ~~to believe~~ believing in immortality,  
there is no life for you to desire; you can,  
live everywhere in the world; he would you  
can thin him little if you please — and he  
will wear it with perfect good humor.

[John Hickie's 403]

Red margin A tyrant must rest on the appearance of  
uncommon devotion to religion. Subjects  
are less apprehensive of illegal treatments  
from a ruler whom they consider god-  
fearing and benevolent. On the other hand, they  
do less easily move against him, believing  
that he has the gods on his side. . . .

## जन्मसिद्ध अधिकार

हम उन पुरुषों की संतानें जिन्होंने जंग लड़ी और जुल्म  
को खत्म कर पहना ताज उन्होंने मैदान और मचान  
का लिया नहीं सहारा अपना जन्मसिद्ध अधिकार पाने—  
हम भी ऐसा ही करेंगे।

— जे. कैपबेल

————— : \* : —————

## आदर्श की गरिमा

आह! व्यर्थ घृणा के लिए नहीं,  
सम्मान, प्रसिद्धि, आत्मप्रशंसा के लिए नहीं  
अपने आदर्श की गरिमा के लिए  
आपने जो किया, वह भुलाया नहीं जाएगा।

— अौर्थर क्लोघ

————— : \* : —————

## आत्मा की अमरता

अगर आप जानते हैं कि अमरता में विश्वास रखनेवाला कोई व्यक्ति आपको एक बार मिल जाएगा, तो आपके पास कामना करने के लिए कुछ नहीं रह जाएगा; उसके पास दुनिया में जो कुछ है, वह सबकुछ आप उससे ले सकते हैं, अगर आप चाहें तो उसकी जिंदा खाल खिंचवा सकते हैं, और वह हँसते-हँसते उसे सह लेगा।

— अपटोन सिनक्लेयर, 403 सी.जे.

————— : \* : —————

## ईश्वर जालिम है?

एक अत्याचारी शासक के लिए जरूरी है कि वह जाहिर तौर पर धर्म में असाधारण आस्था दिखाए। जालिम को धर्म के प्रति समर्पण का बहुत अच्छा मुख्योटा पहनना पड़ता है। प्रजा उस शासक के गैर-कानूनी व्यवहार पर कम शंका करती है, जिसे वह ईश्वर से डरने वाला और

धार्मिक समझती है। दूसरी ओर वह उसकी खिलाफत कम करती है, यह भरोसा करते हुए कि ईश्वर उसकी तरफ है।

Schiller's "To my soldiers"  
If my soldiers were to begin to  
suffer, not one of them would remain in the ranks.  
[Frederick the Great] 1742

The noblest have fallen. They were buried  
obscurely in a deserted place.  
No tears fell over them.  
Strange hands covered them to the grave.  
No cross, no undress, and no tomb stone tell  
their glorious names.  
Great groves over them; a feeble blade  
winding low kept its secret.  
The sole witness were the swinging waves,  
which furiously beat against the shore.  
But even they the mighty waves, could  
not carry farewell greetings to the  
distant home.  
[V. N. Figner]

Poem  
There were no stars, no earth, no time,  
No breath, no change, no good, no crime,  
No places, and a lifeless breath,  
Which neither was of life nor death!  
[The Prisoner of Chillon]

## फौजी और विचार

“यदि मेरे सैनिक सोचना शुरू कर दें, तब तो उनमें से कोई भी सेना में नहीं रहेगा !”

—फ्रेडरिक दि ग्रेट (प. 562)

————— \* —————

## सर्वोत्तम की मौत

जो सर्वोत्तम थे उनकी मौत हो गई  
और गुमनाम उन्हें दफना दिया गया तन्हा जगह पर  
उनके लिए नहीं गिरा कोई आँसू  
अजनबी हाथ उन्हें ले गए कब्र तक  
क्रांस नहीं, ताबूत नहीं, और न कब्र पर पत्थर  
उनका यशस्वी नाम बताने को  
उन पर घास उग आई, नाजुक घास  
जो झुककर रहस्य बनाए रखती है  
मात्र गवाह थीं सरसराती लहरें  
जो भयानक शेर के साथ टकरा रही थीं  
किनारे से,  
लेकिन वे ताकतवर लहरें भी  
उस दूरस्थ घर तक विदाई का  
संदेश नहीं ले जा सकीं।

—वी.एन. फिंगर

————— \* —————

## जेल

न सितारे थे, न धरती, न समय  
न बाधा, न बदलाव, न अच्छाई न अपराध  
लेकिन खामोशी और धीमी श्वास  
जो न जीवन की थी, न मृत्यु की।

: \* :

50

After conviction:

During the moments which immediately follow  
when his sentence, the mind of the condemned  
in many respects resembles that of a man  
on the point of death. Quiet, and as if inspired,  
he no longer clings to what he is about to  
leave, but firmly looks in front of him, fully  
conscious of the fact that what is coming is  
inevitable.

[U. N. Signor]

The Prisoner:

'It is suffocating under the low, dirty roof;  
My thoughts grows weaker year by year;  
They oppress me, this stony floor,  
This iron chained table,  
This bed stand, this chair, chained  
To the walls, like boards of the grave.  
In this dismal, dumb, deep silence  
One can only consider oneself a corpse.'  
"N. A. Horozov."

Nashed wells, prison through life,  
How dark and sad you are!  
How heavy & die a prisoner machine,  
And dream of years of freedom.

[Horozov]

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ - مِنْ كُلِّ شَيْءٍ نَّاهِيٌّ - مِنْ كُلِّ شَيْءٍ نَّاهِيٌّ -

: \* :

## कसूरवार ठहराए जाने के बाद

उसको सजा सुनाए जाने के बाद जो लम्हे आते हैं, उनमें कसूरवार ठहराए गए शख्स का मन कई तरह से मौत की हालत जैसा हो जाता है। खामोश और उतना ही बे-साँस, वह जो छोड़ने जा रहा है, एक हक, उससे चिपके रहना नहीं चाहता, बल्कि अपने सामने देखता रहता है, इस बात से पूरी तरह वाकिफ कि क्या होने जा रहा है?

—वी.एन. फिंगर

: \* :

## कैदी

नीची, गंदी छत के नीचे दम घुटता है  
साल-दर-साल मेरी ताकत कम होती है  
वे मुझे सताते हैं यह पत्थर का फर्श  
यह खटिया, यह कुरसी दीवारों से बँधी हुई  
जैसे कब्र के तख्त इस अनंत, गूँणी, गहरी खामोशी में  
कोई सिर्फ खुद को एक लाश महसूस कर सकता है।

—एन.ए. मोरोजोव

: \* :

नंगी दीवारें, कैदखाने के खयाल  
तुम कितने स्याह और गमजदा हो  
काहिल कैदी होना कितना मुश्किल है  
जब हो बरसों की आजादी का ख्वाब।

—मोरोजोव

: \* :

तुझे जबाह करने की खुशी, मुझे मरने का शौक  
मेरी भी मर्जी वही है, जो मेरे सच्याद की है

Everything here is so silent, lifeless, pale, 31  
The years pass fruitless, leaving no trace;  
The weeks and days drag on heavily,  
Bringing only dull boredom in their spite!  
[Tortoise]

Our thoughts grow dull from long confinement;  
There is a feeling of heaviness in our bones;  
The minutes seem eternal from torturing pain,  
In this cell, four steps wide.

In wish for our fellow men we must bind,  
Our entire selves for them we must give,  
And for their sakes struggle against ill fate!  
[Mortise]

*Pain to all*  
At last man came to set me free;  
I asked not why and needed not where,  
It was at length the same to me,  
When my fetters were to be.  
I learn'd to love despair,  
And thus when they spear'd at last  
And all my bonds made too cast,  
These heavy walls to me had grown  
A hermitage — and all my own.  
[The Prisoner of Chillon]

यहाँ हर थी खामोश, बेजान, बेनूर है  
सालों बीतते हैं, बेकार, छोड़े बिना कोई निशां  
हप्ते और दिन होते हैं कितने बोझिल  
सिर्फ उदास उकताहट लिये

— मोरोजोव

लंबे अरसे तक कैद में हमारी सोच हो जाती है कुंद  
हड्डियों में भारीपन का एहसास  
सितम के दर्द से लम्हे लगते हैं कभी न खत्म होनेवाले  
इस कोठरी में, जो सिर्फ चार कदम चौड़ी है  
बेशक अपने साथियों के साथ हमें जीना ही होगा  
हमें उन्हें अपनी पूरी खुदी को देना होगा  
उनकी खातिर, बदकिस्मती से  
करनी होगी जदोजहद

— मोरोजोव

## मुझे आजाद करने आए

आखिर लोग मुझे आजाद करने आए  
मैंने नहीं पूछा कि क्यों और कहाँ ले जा रहे थे  
आखिर मुझे क्या फर्क पड़ना था,  
जंजीर में जकड़ा होऊँ या बे-जंजीर  
मुझे मायूसी भाने लानी थी  
लिहाजा आखिर जब वो आए  
और मेरे सारे बंधन खोल फेंक दिए  
ये भारी दीवारें बन चुकी थीं

मेरे लिए एक संचास आश्रम—पूरी तरह अपना।

—दि प्रिजनर ऑफ चिल्ड्रॉन

————— : \* : —————

And from on high we have been honoured with  
a mission!  
We perch a mere school, but required higher  
knowledge.  
Thanks & exile, prison, and a bitter lot;  
We know and value the world of truth and freedom!

[Primer of Schopenhauer]

*Death & suffering*  
A child was born. He committed  
consciously neither bad nor good actions.  
He fell ill, suffered much and long, until  
he died in terrible agony. Why? Where-  
fore? It is the eternal riddle for the  
philosopher!

*Primer of Schopenhauer*  
"He who has ever lived under the influence  
of the life of youth, who has borne, in the name of an  
ideal, humiliations, suffering and death; he  
who has once conceived this as an ideal and  
his life as the prototype of a disinterested love,—  
will understand the frame of mind of the  
revolutionary who has been sentenced and  
thrown into living tomb for his work on  
behalf of another free man." [Vera N. Figner]

*Rights:* Don't ask for rights. Take them. And  
don't let anyone give them to you. A right  
that is handled & given for nothing has  
something to do with it. It's more  
likely it's only only a wrong turned

और ऊपर वाले ने हमें एक मकसद देकर नवाजा।  
हम एक सख्त स्कूल से निकले, लेकिन बड़ा ज्ञान पाया।  
देश-निकाले, कैद और मुश्किलात को शुक्रिया,  
हम कद्र करते हैं हक और आजादी की दुनिया की।

—प्रिजनर ऑफ श्लुशेलबर्ग

## एक बच्चे की मौत और तकलीफ

एक बच्चा पैदा हुआ। उसने जानकर कोई खताएँ या नेकियाँ नहीं कीं। वह बीमार हो गया,  
बहुत ज्यादा और काफी वक्त सही तकलीफजब तक कि उसकी बहुत दर्दनाक  
मौत नहीं हो गई। क्यों? किस बजह? दार्शनिकों के लिए यह कभी न सुलझने वाली पहेली है।

: \* :

## एक क्रांतिकारी की मानसिकता

"वह, जो हमेशा जीसस के असर में रहा, जिसने किसी उसूल के नाम पर जिल्लत और पीड़ा सही और मर गया; वह, जिसने उसे आदर्श  
और उसके जीवन को बेगरज प्यार का रूप माना हो, वही उस क्रांतिकारी की मानसिकता को समझेगा, जिसे सजा दी गई है और लोगों की  
आजादी के लिए किए गए काम के लिए ताबूत में डाल दिया गया हो।

—वेरा एन. फिंगर

: \* :

## हक

अधिकार माँगो नहीं, बढ़कर ले लो। और उन्हें किसी के द्वारा भी तुम्हें देने मत दो। यदि मुफ्त में तुम्हें कोई अधिकार दिया जाता है तो  
समझो कि उसमें कोई-न-कोई राज जरूर है। ज्यादा संभावना यही है कि किसी गलत बात को उलट दिया गया है।

: \* :

you have no enemies, you say?  
 Blas! my friend, the boast is poor;  
 He who has mingled in the fray  
 By duty, that the brave endure,  
 Must have made foes! If you have none,  
 Small is the work that you have done.  
 You've hit no traitor on the hip,  
 You've dealed no coup from projured life,  
 You've never turned wrong to right,  
 You've been a coward in the fight.

[Charles Mackay, 74.]

### Child labour

No fledgling feeds the father bird,  
 No chicken feeds the hen;  
 No kitten mouses for the cat —  
 This glory is for man

We are the wisest, strongest Race —  
 Long may our praise be sung!  
 The only animal alive  
 That lives upon its young!

[Charlotte Perkins Gilman.] 65

## कोई दुश्मन नहीं?

तुम कहते हो, तुम्हारा कोई दुश्मन नहीं?  
 आह! मेरे दोस्त, यह घर्मंड तरस के काबिल है  
 वह, जो फर्ज की लड़ाई के मैदान में डटा है  
 उसने दुश्मन जरूर बनाए होंगे तुम्हारा कोई दुश्मन नहीं,  
 तो फिर तुमने कोई बड़ा काम नहीं किया।  
 तुमने झूठी कसम खाने वाले होंठ से  
 कोई प्याला छीनकर तोड़ा नहीं होगा  
 तुमने कभी किसी गलत को सही नहीं किया,  
 इस लड़ाई में तुम बुजदिल ही रहे।

—चार्ल्स मेके

## बाल मजदूरी

कोई चिड़िया का बच्चा अपने पिता के लिए दाना नहीं जुटाता  
 कोई चूजा मुरगी को नहीं खिलाता,  
 कोई बिल्ली का बच्चा माँ के लिए चूहा नहीं मारता  
 यह गौरव आदमी को मिला है  
 हम सबसे ज्यादा समझदार, सबसे मजबूत नस्ल हैं—  
 हमारी तारीफ में तेज आवाज में गीत गाए जाएँ  
 वही प्राणी जीवित है  
 जो अपने बच्चों के सहारे जिंदा है।

—चारलोटे परकिंग गिलमेन

No Clerics! No Conformists!  
 [George D. Norton]

Under the Socialist movement there is coming a time, and the time may be even now at hand, when improved conditions or adjusted wages will no longer be thought to be an answer to the cry of labour; yes when these will be but an insult to the common intelligence. It is not for better wages, improved capitalist conditions or a share of capitalist profits that the Socialist movement is in the world; it is here for the abolition of wages and profits, and for the end of capitalism and the private Capitalist. Reformed political institutions, boards of arbitration between capital and labour, philanthropies and privileges that are not the capitalist's gifts — some of these can much longer answer. The question that is making the temples, shrines and Parliaments of the nation tremble. There can be no peace between the man who is born and the man who builds on his back. There can be no reconciliation between classes; there can only be an end of classes. It is idle to talk of good will until there is free justice, and idle to talk of justice until the man who makes the world possess the work of his own hands. The cry of the world's workers can be answered with nothing save the whole product of their work.

[George D. Norton]

(फटा हुआ)

## कोई वर्ग नहीं, कोई समझौता नहीं

समाजवादी आंदोलन के चलते एक ऐसा वक्त आ रहा है, और हो सकता है कि तकरीबन आ ही गया हो, जब काम की शर्तों में सुधार या ठीक मजदूरी को मजदूर की पुकार का जवाब नहीं माना जाएगा; जी हाँ, तब ये चीजें आम लोगों की समझ में बेइज्जती होंगी। दुनिया में समाजवादी आंदोलन बेहतर मजदूरी, बेहतर पूँजीवादी स्थितियों या पूँजीपतियों के मुनाफे के हिस्से के लिए नहीं चल रहा; इसका मकसद मजदूरी और मुनाफे और पूँजीवाद तथा निजी पूँजीपतियों को खत्म करना है। बेहतर राजनीति संस्थाएँ, पूँजी और श्रम के बीच बोर्ड ऑफ अविंट्रेशन, पूँजीपतियों की खेरातों के अलावा और कुछ नहीं हैं। लोकोपकार तथा विशेषाधिकार महज पूँजीपति के तोहफे हैं—इनमें से कुछ भी, उस सवाल का अब बहुत दिनों तक जवाब नहीं हो सकता, जो मंदिरों, सिंहासनों तथा राष्ट्रों की संसदों को हिला रहा है। जो आदमी नीचे दबा है और जो आदमी उसकी पीठ पर चढ़ा है, उन दोनों के बीच शांति नहीं हो सकती। इन वर्गों के बीच कोई सुलह नहीं हो सकती; सिर्फ वर्गों का खात्मा हो सकता है। जब तक पहले इनसाफ न हो, बेरोजगारी खत्म न हो, तब तक सद्भाव की बात बेमानी है। दुनिया के मजदूरों की आवाज सुनी जानी चाहिए और उन्हें उनके काम का पूरा फायदा मिलना चाहिए।

—जॉर्ज डी. हरसन

: \* :  
*Workers of Capitalism*  
Economy is estimated at all  
Also alias by Theodore Hertigka (1886)  
A family = 5 persons left 50 years.  
Every family = 5 persons left for 50 years.  
Workers' workable age 16-50.  
So we have 5,000,000 workers  
Labour of 615,000 workers is sufficient to produce food for  
Including labour of transport, luxuries need  
only 315,000 [= 50%] workers labour.  
That amounts to thin that 20% of the available  
labour is enough for supporting the whole of  
the continent. The rest 80% is capitalist  
and works due to Capitalist ordered  
society.

## पूँजीवाद की फिजूलखर्ची

थियोडोर हर्टिक (1886) द्वारा ऑस्ट्रेलिया के बारे में आर्थिक आकलन। हर एक परिवार के पास = 40-40 वर्गफीट के 5 कमरे के मकान, जो 50 साल चलेंगे।

ऑस्ट्रेलिया के बारे में आर्थिक अनुमान, स्थियोडोर हर्टिका (1886) द्वारा प्रत्येक परिवार = 40 वर्ग फीट परिवार = 40 वर्ग फीट में 5 कमरों वाला मकान 50 वर्षों तक चलने लायक

मजदूरों की काम करने की उम्र = 16-50 (वर्ष-सं.)

इस प्रकार हमारे पास हैं 5,000,000 (मजदूर-सं.)

615,000 मजदूरों का श्रम = श्रम का 12.3 प्रतिशत,

22,000,000 लोगों का भोजन पैदा करने के लिए पर्याप्त है।

यातायात परिवहन की श्रम लागत समेत, विलासिताओं हेतु सिर्फ 315,000 = 6.33 प्रतिशत मजदूरों के श्रम की आवश्यकता पड़ती है। इसका मतलब यह हुआ कि उपलब्ध श्रम का 20 प्रतिशत ही समूचे महाद्वीप के भरण-पोषण के लिए पर्याप्त है। शेष 60 प्रतिशत समाज की पूँजीवादी व्यवस्था के कारण शोषित और बरबाद हो जाता है।

Greatest Regimes & the Bolshevik Regime:

Vorontsov tells that in the first fourteen months of their rule, the Bolsheviks executed  
4,500 men, mostly for stealing  
and speculation.

After the 1905 Revolution, Stolypin, minister  
of War, caused the execution of  
32,000 men  
within twelve months

[P. 390  
Brown check]

## जारवादी व्यवस्था और बोल्शेविक व्यवस्था

फ्रेजियर हंट कहता है कि बोल्शेविकों ने अपने पहले चौदह महीनों की हुक्मत में 4,500 लोगों को फाँसी पर लटका दिया। उनमें से ज्यादातर पर चोरी और सट्टेबाजी का इलजाम था।

1905 की क्रांति के बाद, जार के मंत्री स्टोलिपिन ने बारह महीनों के भीतर 32,773 लोगों को फाँसी लगवा दी।

—ब्रास चेक (पृ. 390)

\* :

### Permanency of the Social institutions.

Q 1

"It is one of the illusions of each generation that the social institutions in which it lives are, in some peculiar "sense," "natural," unchangeable and permanent. Yet for countless thousands of years social institution have been successively arising, developing, decaying, and becoming gradually superseded by others better adapted to contemporary needs....

... The question, then, is not whether our present civilization will be transformed, but how it will be transformed. It may, by considerable adaptation, be made to pass gradually and painlessly into a new form; or, if there is angry resistance instead of adaptation, it may crash, leaving mankind painfully to build up a new civilization from the lower level of a stage of social chaos and disorder in which not only the abuses but also the material, intellectual and moral gains of the previous order will have been lost.

Pt. Secy of  
Cap. Civilization

## सामाजिक संस्थाओं का स्थायित्व

प्रत्येक पीढ़ी के लोगों को यह भ्रम रहता है कि जिन सामाजिक संस्थाओं में वे रह रहे हैं, वे किसी खास अर्थ में 'स्वाभाविक', अपरिवर्तनीय और स्थायी हैं। फिर भी अनगिनत हजारों साल से सामाजिक संस्थाएँ सफलता के साथ बनती, विकसित और क्षीण हो रही हैं और बदले वक्त के मुताबिक दूसरी संस्थाएँ धीरे-धीरे उनकी जगह लेती आ रही हैं—लिहाजा, सवाल यह नहीं है कि हमारी मौजूदा सभ्यता बदलेगी या नहीं, बल्कि यह है कि यह कैसे बदली जाएगी?

सोच-समझ के साथ बदलाव कर इसे धीरे-धीरे और शांतिपूर्वक नया रूप दिया जा सकता है। या अगर सुधार की जगह क्रोध से भरा विरोध हो, तो यह खत्म हो सकती है, जिसके नतीजे में इनसान को बहुत मेहनत कर सामाजिक अराजकता और अव्यवस्था की निचली स्थिति से फिर से नई सभ्यता का निर्माण करना होगा, जिसमें पुरानी व्यवस्था की न केवल बुराइयाँ, बल्कि भौतिक, बौद्धिक और नैतिक उपलब्धियाँ भी खो जाएँगी।

—पी.आई.डिके ऑफ  
केप. सिविलाइजेशन

: \* :  
*Capitalism commercialisation*

*Rabindranath's Address to an assembly of Japanese Students:-*

"you have your own industry in Japan; how scrupulously honest and true it was, you can see by its products — by their grace and strength, their conscientiousness in details, where they can hardly be observed. But the two tidal waves of falsehood has swept over your land, from that part of the world where business is business and money is power, <sup>money is the most power.</sup> Since you never felt the same when you see the trade advertisements, not only plastering the whole town with lies and exaggerations, but invading the green fields, where the peasants do their honest labour, and the little boys, which greet the first pure light of the morning? ... This commercialisation with its barbarity of ugly decorations is a terrible curse to all humanity, means — it is setting up the ideal of power over the perfection. or making the cult of self-seeking result in its naked shamelessness. ... its movements are violent, its noise is incessantly loud. It is carrying its own damnation because it is tumbling into destruction."

## पूँजीवाद और व्यापारवाद

रवींद्रनाथ का जापानी विद्यार्थियों की सभा को संबोधन—

“जापान में आपका अपना उद्योग था; यह कितना ईमानदार और सच्चा था, इसे आप इसके उत्पादों को देखकर समझ सकते हैं—उनकी खूबसूरती और मजबूती से। जिन पर शायद ही कोई टीका-टिप्पणी की जा सके, परंतु आपकी भूमि पर झूठ की एक लहर दुनिया के उस भाग से बहकर आ चुकी है, जहाँ व्यापार सिर्फ व्यापार है और ईमानदारी को सिर्फ सबसे अच्छी नीति माना जाता है। क्या व्यापार के विज्ञापनों को देखकर कभी आपको शर्म नहीं आती? इन झूठे और अतिरंजित विज्ञापनों से न केवल पूरा शहर पटा पड़ा है, बल्कि जिनका आक्रमण खेतों तक हो रहा है, जहाँ किसान ईमानदारी से मेहनत करते हैं। ये इन पहाड़ियों तक जा रहे हैं, जो सुबह के शुद्ध प्रकाश का सबसे पहले अभिवादन करती हैं? यह खुदगर्जी के चलन को उसके नंगे बेशर्म रूप में सामने ला रहा है। इसकी गतिविधियाँ हिंसक हैं। यह अपने ही सर्वनाश की ओर बढ़ रहा है, क्योंकि यह उसी मानवता को कुचलकर विकृत कर रहा है, जिस पर यह स्वयं खड़ा है।

(शेष अगले पेज पर)

39

The human society upon which it stands. It is strenuously turning out the money ad. the cost of happiness... The vital ambition of the present civilization of Europe is to have the exclusive possession of the devil.

Capitalist Society : —  
"The foremost truth of political economy is that everyone desires to obtain individual wealth with as little sacrifice as possible." "Russian saying."

“यह बहुत मेहनत से खुशी की कीमत पर पैसा बना रहा है—यूरोप की मौजूदा सभ्यता की महत्त्वपूर्ण आकांक्षा यह है कि शैतान पर सिर्फ उसका अधिकार हो जाए।”

## पूँजीवादी समाज

राजनीति अर्थव्यवस्था का सबसे बड़ा सच यह है कि हर शख्स कम-से-कम त्याग कर निजी दौलत हासिल करना चाहता है।

—नास्तान सीनियर

10

Karl Marx on Religion :—  
They do not make man's religion; religion makes man. The self-consciousness of man himself is the self-consciousness of his own religion. (One finds his religion in his self-consciousness.)  
That man is not yet fit for his self-consciousness (has not found himself) is something that is not an obstacle to the world. Man is the world of man, the whole outside being the world.  
Still, this society produces religion, society: this is a perverted world. Religion is produced by a perverted world. Religion is a perverted theory of this world. Religion is the generalized theory of this world. Its logic is not in form... the fight against religion is, therefore a direct campaign against the world where spiritual aroma is religion.

## धर्म पर कार्ल मार्क्स के विचार

आदमी धर्म को बनाता है, धर्म आदमी को नहीं। दरअसल, धर्म आदमी की आत्म-व्याकुलता और आत्म-अनुभूति है, जिसने या तो अभी तक खुद को नहीं पाया है या फिर (खुद को पा लिया है) खुद को पुनः खो दिया है। लेकिन आदमी कोई अमूर्त वस्तु नहीं है, जो दुनिया के बाहर कहीं बैठा है। आदमी आदमियों, राज्य, समाज की दुनिया है। यह राज्य, यह समाज धर्म पैदा करता है, एक विकृत विश्व चेतना पैदा करता है, क्योंकि वे एक विकृत दुनिया हैं। धर्म इस दुनिया का सामान्यीकृत सिद्धांत है, इसका विश्वकोशीय सारांश है, लोकप्रिय रूप में इसका तर्क है—

(शेष अगले पेज पर)

41

Continued from last page :—

Religion is the sigh of Oppressed creature, the feelings of a heartless world, not so it is the spirit of unspiritual conditions. It is the sigh of the people."

The people can not be really happy until it has been deprived of illusory happiness by the abolition of religion. The demand that the people should shake itself free of illusion as to its own condition is the demand that it should abandon a condition which needs illusions.

The weapon of criticism can not replace the criticism of weapons. Physical force must be overthrown by physical force; but Theory, too, becomes a physical force as soon as it takes possession of the masses.

धर्म दमित प्राणी की आह है, एक बेरहम दुनिया का एहसास है, वैसे ही, जैसे यह गैर-आध्यात्मिक स्थितियों की प्रेरणा है। “धर्म लोगों की अफीम है।”

लोग धर्म के द्वारा उत्पन्न झूठी खुशी से छुटकारा पाए बिना सच्ची खुशी हासिल नहीं कर सकते। यह माँग कि लोगों को इस भ्रम से मुक्त हो जाना चाहिए, उसका मतलब यह माँग है कि ऐसी स्थिति को त्याग देना चाहिए, जिसमें भ्रम की ज़रूरत होती है।

आलोचना का हथियार हथियार की आलोचना की जगह नहीं ले सकता। भौतिक ताकत को भौतिक ताकत से ही जीता जा सकता है, लेकिन सिद्धांत भी जैसे ही लोगों को अपने कब्जे में लेता है, भौतिक ताकत बन जाता है।

42

A revolution not Utopian

A radical revolution, the general  
emancipation of mankind, is not  
a utopian dream for geniuses;  
what is utopian is the idea of a  
partial, an exclusively political  
revolution, which would leave  
the pillars of the house standing.

"Great are great; because  
we are not great."  
Let

# एक क्रांति जो काल्पनिक नहीं

एक आमूल परिवर्तनवादी क्रांति, यानी मानव जाति की आम मुक्ति, जर्मनी के लिए कोई यूटोपियाई स्वप्न नहीं है; यूटोपियाई तो एक आंशिक, एक विशुद्ध राजनीतिक क्रांति की धारणा होती है, जो (पूँजीवादी व्यवस्था की-सं.) इमारत के खंभों को खड़ा छोड़ देगी।

"महान् लोग महान् इसलिए  
हैं, क्योंकि हम घटनों पर हैं।  
आइए, हम उठें!"

Herbert Spencer on State: -

45

"Whether it be true or not that man was born in equity and conceived in sin, it is certainly true that Government was born of aggression and by aggression."

Man & Nature

"I am a man, and all that appeals mankind concerns me." Roman Diplomatist

England's Condition  
Good people, things will never go well in England so long as good be not in common, and so long as there be villains and gentlemen. By what right are they whom we call lords, greater folk than we? Can such grandfathers have? They deserved it. They did them right in a perfect way. If we all come of the same father and mother, Wian and Eric, how can they be or worse? Yet they are greater and better than we? If it be not that they make us gain for them by our till which they live in their pride they are clothed in our flesh and are even covered with our fat. They have wine and pates and their bread, dairies, oatencake, and stouts, and water basons. They have leisure and fine houses; we have pain and labour, the rain and cold in fields, and yet it is of our fault that these men hold this state." A. H. Smith, Friend of West Taylor's Rebel

## राज्य पर हर्बर्ट स्पेंसर के विचार

“भले ही यह सच हो या न हो कि मनुष्य निष्कलंक पैदा हुआ और पाप में सन गया। लेकिन यह निश्चित है कि सरकार का जन्म अवश्य आक्रामकता से और आक्रामकता द्वारा हुआ।”

————— : \* : —————

## मानव और मानव जाति

मैं एक मानव हूँ, और वह सबकुछ जो मानवता को प्रभावित करता है उससे मेरा सरोकार है

—रोमन ड्रामाटिस्ट

————— : \* : —————

इंग्लैंड की स्थिति की समीक्षा

“अच्छे लोगों, इंग्लैंड में स्थितियाँ तब तक अच्छी नहीं हो सकतीं, जब तक अच्छाइयाँ आम नहीं हो जातीं, और जब तक सज्जन लोगों के साथ दुर्जन लोग भी बने रहते हैं। वे किस अधिकार से, जिन्हें वे मालिक कहते हैं, हमसे किस तरह बेहतर हैं? उन्हें किस बुनियाद पर यह हक मिला? वे हमें दास क्यों मानते हैं? अगर ऐसा नहीं है कि वे हमारी मेहनत से फायदा पा रहे हैं, तो फिर वे गर्व के साथ खर्च क्या करेंगे। अगर वे अपने फायदे के लिए हमसे मेहनत नहीं करवाते तो वे अपनी शान-शौकत में क्या खर्च करते? वे मखमल पहनते हैं और अपने फरों तथा अमाइंस में गरम रहते हैं, जबकि हम चीथड़ों में लिपटे हैं। वे बाइन पीते हैं, लजीज खाना और ब्रेड खाते हैं; और हम केक, स्ट्रॉ खाते हैं और पानी पीते हैं! उनके पास फुरसत का बक्त है और शानदार मकान हैं; हमारे हिस्से में दर्द और मेहनत, खेतों में बारिश और हवा के थपेड़े हैं, और इसके बाद भी हमारी मेहनत से ही ये लोग अपने राज्य पर काबिज बने हुए हैं—

(पन्ना फटा है)

44  
*revolution & class*

All classes striving for power are revolutionary, and talk of Equality.  
All classes, when they get into power, are conservative and are convinced that equality is an iridescent dream.  
All classes but one—the Working Class, for as Comte has said, "The working class is not properly speaking, a class at all, but constitutes the body of society." But the day of the working class, the fusion of all useful people, has not yet arrived. 042  
"World History for Working People." by Alfred Barton.

## क्रांति और वर्ग

सत्ता के लिए जदूदोजहद करनेवाले सभी वर्ग क्रांतिकारी हैं और समानता की बात करते हैं। सभी वर्ग, जब वे सत्ता में आ जाते हैं, तो संकीर्णतावादी हो जाते हैं और उन्हें यह भरोसा हो जाता है कि समानता एक भद्रा ख्वाब है। सिर्फ मजदूर वर्ग इसका अपवाद है, जैसा कि कॉमटे ने कहा, “सच पूछिए तो मजदूर वर्ग ही समाज की काया है।” लेकिन मजदूर वर्ग, जो सभी लोगों का संगम है, का दिन अभी तक नहीं आया है।

‘वर्ल्ड हिस्ट्री ऑफ वर्कर्स’

लेख—अल्फ्रेड बार्टन

नोट : हर्बर्ट स्पेंसर (1820-1903) अंग्रेज दार्शनिक; महत्वपूर्ण कृतियाँ।

45

Sir. Henry Maine has said.  
"That most of the lands of England  
has passed to its present owners by the  
mistake of lawyers — mistakes that  
in course, criminals were punished  
by hanging."

"The law convicts the man or  
woman  
Who steals the goose from of the Common,  
But lets the greater felon loose  
Who steals the Common from the Goose."

सर हेनरी मैन ने कहा—

“इंग्लैण्ड की ज्यादातर जमीन मौजूदा  
मालिकों के हाथों में वकीलों की गलती  
से पहुँच गई—ऐसी गलतियों से, जिनके लिए मामूली अपराधियों  
को फाँसी दी गई।”

: \* :

“कानून आम आदमी से हंस चुराने वाले  
आदमी या औरत को सजा देता है,  
लेकिन बड़े अपराधी को छोड़ देता है  
जो हंस से आम आदमी को चुरा लेता है।”

: \* :

46

### Democracy

Democracy is theoretically a system of political and legal equality. But in concrete and practical operation it is false, for there can be no equality not even in politics and before the law, so long as there is glaring inequality in economic power. So long as the ruling class owns the workers' jobs and the men and the schools of the country and all organs, for the moulding of the expression of public opinion; so long as it monopolises all trained public functionaries and absorbs unlimited funds to influence election, so long as the law is made by the ruling class and the courts are presided over by members of that class; so long as lawyers are private practitioners who sell their skill to the highest bidder, and litigation is technical and costly, so long will the nominal equality before the law be a hollow mockery.

In a capitalist regime the whole machinery of democracy operates to keep the ruling-class minority in power through the suffrage of the working-class majority, and when the bourgeois goes to sleep it enlarges its democratic institutions, such institutions are often crushed without compunction. P.S.

"From Marx & Lenin"  
(by Morris Hillquit)

Democracy does not mean a real right to a share in all power with the bourgeoisie & their class or party, so many (more) "others" (by whom freedom and legal play are denied). Only about free speech and free play for the working-class majority... Democracy under capitalism is thus not general, abstract democracy but specific bourgeois democracy... or in Lenin terms of democracy for the Bourgeois.

## लोकतंत्र

लोकतंत्र सैद्धांतिक रूप से राजनीति और कानूनी समानता की व्यवस्था है, लेकिन वास्तविक और व्यावहारिक संचालन में यह झूठी है, क्योंकि जब तक आर्थिक सत्ता में घोर असमानता है, तब तक कोई समानता नहीं हो सकती। यहाँ तक कि राजनीति में और कानून के सामने भी जब तक सत्ताधारी वर्ग मजदूर के रोजगारों और देश की प्रेस तथा स्कूलों का मालिक है और जनमत को मोड़ने तथा उसकी अभिव्यक्ति के सभी साधन उनके हाथों में हैं; जब तक सभी प्रशिक्षित सार्वजनिक कार्यकर्ताओं पर उनका एकाधिकार है और चुनावों को प्रभावित करने के लिए उनके पास असीमित पैसा है; जब तक कानूनों का निर्माण सत्ताधारी वर्ग के द्वारा किया जाएगा और अदालतों में इस वर्ग के सदस्य पीठासीन हैं; जब तक वकील प्राइवेट प्रैक्टिशनर हैं, जो सबसे ऊँची बोली लगाने वाले को अपना हुनर बेचते हैं, और मुकदमेबाजी टेक्निकल तथा खर्चाली है, तब तक कानून के सामने नामात्र की समानता भी एक खोखला मजाक होगी।

पूँजीवादी व्यवस्था में लोकतंत्र की पूरी मरीनरी बहुमत वाले श्रमिक वर्ग को तकलीफ देकर अल्पमत के सत्ताधारी वर्ग को सत्ता में बनाए रखने का काम करती है, और जब बुर्जुआ सरकार खुद को लोकतांत्रिक संस्थाओं के द्वारा खतरे में समझती है, जो ऐसी संस्थाओं को बिना किसी संकोच के अक्सर कुचल दिया जाता है।

फ्रॉम मार्क्स टु लेनिन  
(मोरिस हिलक्वाइट) (पृ. 58)

————— : \* : —————

लोकतंत्र में समान अधिकार और सभी राजनीतिक अधिकारों में प्रत्येक को हिस्सा नहीं मिलता, भले ही वह किसी भी वर्ग या दल का हो। (कौट्स्की) इसमें सिर्फ मौजूदा आर्थिक असमानताओं के लिए राजनीति और कानूनी खेल करने की सुविधा मिलती है—इस प्रकार पूँजीवाद के अंतर्गत लोकतंत्र व्यापक और अमूर्त लोकतंत्र न होकर विशिष्ट बुर्जुआ लोकतंत्र होता है, अथवा जैसा कि लेनिन ने कहा—बुर्जुआ के लिए लोकतंत्र।

(पन्ना फटा है)

47

Term "Revolution" defined:

"The conception of revolution is next to the hunting in the police interpretation of the term, in the sense of an armed rising. A party could hardly expect the masses to follow it unless it based its principles so long as it had at all distinct different set out and before the outbreak of action. In this sense social democrats have never revolutionising on principle. It is only in the sense that it recognises and uses all the available means to overthrow the existing system, when the proletariat fights it can not employ for any purpose other than the abolition of the mode of production upon which the present system rests."

"Social Democracy"  
"Anti-Kautsky"

Social Justice and Welfare, about Engaged World State.

8 men can produce bread for 1000  
1 man                      Corn Oil for 800  
1 man                      Household for 300  
1 man                      Water etc for 1000

15,000,000 are living below poverty line each year  
mainly due to the increasing affluence.  
3,000,000 Child Labourers

Re: England  
Please estimate!  
Total Production of England (per annum) £ 2,000,000,000  
Gains through Foreign investments £ 200,000,000  
£ 2,200,000,000  
 $\frac{1}{7}$  & part of the population live on £ 800 per annum  
 $\frac{2}{7}$  & part on £ 1,000 per annum  
 $\frac{3}{7}$  & part on £ 1,200 per annum  
£ 2,200,000,000

## क्रांति की परिभाषा

“क्रांति की अवधारणा को पुलिसिया व्याख्या के रूप में नहीं लेना चाहिए, यानी उसे सशस्त्र विद्रोह नहीं माना जाना चाहिए। कोई दल पागल ही होगा, जो सैद्धांतिक रूप से विद्रोह के इस तरीके को चुनेगा, जब तक कि इसको अंजाम देना, कार्रवाई के अधिक सुरक्षित तरीके से अलग और कम खर्चोंला नहीं हो। इस अर्थ में सामाजिक लोकतंत्र, सैद्धांतिक रूप से कभी क्रांतिकारी नहीं रहा। यह इसी अर्थ में ऐसा है कि इसमें इस बात को मान्यता दी गई है कि राजनीति सत्ता मिलने पर यह उत्पादन के उस तरीके को हटाने के अलावा किसी और मकसद से उसका उपयोग नहीं करेगी, जिस पर मौजूदा व्यवस्था टिकी है।”

— कार्ल कौट्स्की

————— : \* : —————

## संयुक्त राज्य के बारे में कुछ तथ्य और आँकड़े

5 लोग 1,000 के लिए ब्रेड का उत्पादन कर सकते हैं।

1 व्यक्ति 300 लोगों के लिए गरम कपड़े बना सकता है।

1 व्यक्ति 1,000 लोगों के लिए जूते बना सकता है।

— आयरन हील पी. (पृ. 78)

————— : \* : —————

15,000,000 लोग घोर गरीबी में जी रहे हैं,

जो अपनी कार्यदक्षता तक को कायम नहीं रख सकते।

3,000,000 बाल श्रमिक

————— : \* : —————

## संदर्भ : इंग्लैंड

युद्ध-पूर्व आकलन

इंग्लैंड का कुल उत्पादन 2000,000,000 पाउंड

विदेशी निवेश से लाभ 200,000,000 पाउंड

-----

222,000,000 पाउंड

आबादी के 1/9वें भाग ने 1/2 = 1100,000,000 पाउंड

ले लिया

आबादी के 2/9 भाग ने बाकी में से 1/3 ले लिया 1100,000,000 पाउंड

(गुण्ठ करा है)

Arise, ye powers of creation!  
Arise ye worthies on earth,  
To justice numbers in generation,  
Of other worlds in birth.  
No more nations shall bind us,  
Nor us slaves; no more in hell!  
The earth shall rise on new foundations,  
We have been rangers, and we shall.

[Refrain]

It is the final conflict,  
Let each stand in his place,  
The International Party  
Shall be the human race.  
Flock them naked in their glory,  
The kings of earth are vain and pale!  
What would you hear in all this story?  
A few short hours of boundless toil!  
Small of people over the boundless  
In the strong effort of a few;  
And nothing for their restoration.  
The men will not yield their due.

[Same refrain]

Tailored from ship and field and land,  
The party we all are with;  
The earth belongs to us, the people,  
As from her for the work.  
How many upon flesh have fallen!  
Or of the welcome birds of prey,  
Fallen sick from our thy lone morning  
To blessed midday all will stay.

[Same refrain]

## इंटरनेशनल

उठो, ओ गरीबी के कैदियों!  
उठो, ओ धरती पर बहुत बदकिस्मतो!  
इनसाफ के लिए गरजो, यह तकाजा है वक्त का  
यही होगा नया जन्म।  
परेपराओं की कोई जंजीर अब न जाकड़ेगी हमें  
गुतामो, उठो, अब गुतामी में न रहो!  
धरती उठ खड़ी होगी नई बुनियादों पर  
हम तबाह हैं, लेकिन सबकुछ पा लेंगे।

(टेक)

यह आखरी मुकाबला है,  
हर कोई जहाँ है, उठ खड़ा हो  
पूरी मानव जाति बनेगी  
इंटरनेशनल पार्टी

————— : \* : —————

घमंड में तने जो बैठे हैं, उन्हें देखो,  
मेरे तुम्हारे और धरती के राजा!  
तुम उनकी कहानी में क्या पढ़ोगे  
सिवा इसके कि उन्होंने मेहनत को कैसे लूटा?  
लोगों की मेहनत का फल  
चला गया है कुछ की तिजोरियों में,  
उनकी वापसी के लिए बोट मत दो  
मतदान करने में सिर्फ अपना हक माँगो॥

(वही टेक)  
दुकानों और खेतों के मेहनतकश  
पार्टी काम करेगी हर मेहनतकश के लिए  
धरती हमारी, हम जनता की है,  
कामचोरों की यहाँ कोई जगह नहीं  
कितने ज्यादा लोग हमारे मांस से मोटे हो गए?  
लेकिन अगर घृणित शिकारी चिड़िया  
किसी दिन आकाश से गायब हो भी गई  
तो भी आनंददायक सूर्य-किरण रहेंगी।

(फिर वही टेक)

Uttaralline

Ye sons of toil, made to glory!  
Here, here, what ingrate bid you rise;  
Your children, wives and grandsons hungry,  
Seeks this base audience their curse!  
Small help! Tyrants misusing bread,  
With kindling world, a suff'ring land—  
Offright and desolate the land—  
While peace and liberty lie bleeding!

[Chorus]

To arms! To arms! ye brave!  
The avenging sword underneath  
Stands on morrow; all health  
On Victory or death.

With luxury and pride unbounded,  
The idle instigate depots dare,  
Their thirst for gold and power unbounded  
Is need and void the light and air;  
Little hearts of burden, world they load us,  
Like gods would bid their slaves load,  
And man is man and who is more?  
Then shall no longer Lord and gods us?

[The same chorus again.]

Oh liberty! Can man resign thee,  
Once having felt thy generous flame?  
Can despots bold and base confine thee,  
Or whip thy noble spirit fine?  
Too long the world has kept bewailing,  
That false roads, dangerous paths led it;  
One freedom is our world and died,  
And all their arts are unmeaning!

[Same Chorus again.]

↑ Same Chorus again. ]

मारसेइलेइस

ओ मेहनत के बेटों, गौरव के लिए उठो  
पूछता हूँ, कितनी बार कहने से उठोगे;  
यहाँ तुम्हारे बच्चों, बीवियों तथा पितामहों के  
आँसू देखो और उनकी चीखें सुनो!  
क्या आततायियों के समूह जिन्होंने अत्याचारी शरारती बढ़ते रहेंगे  
उनके भाड़े के टट्टू बढ़ते रहेंगे—  
इस सजार्मीं को खीफजदा और वीरान और तबाह करते  
जबकि अमन और आजादी का बहता रहेगा खून?

(कोरस)

ओ बहादुरो, हथियार उठाओ, हथियार उठाओ!  
बदला लेने, तलवार को स्थान से निकालो।  
आगे बढ़ो, आगे बढ़ो, पूरी ताकत और संकल्प से, जीतो या मर जाओ।  
बैठे रहे आराम में, गर्व को दबाए  
तो कमीने करेंगे तुम पर मनमानी, ललकारेंगे  
उनकी सोने और सत्ता की हवस रहेंगी बेहद  
प्रकाश और हवा पाकर बेचेंगे  
वे भारवाही पशु की तरह हमें हाँकेंगे,  
वे देवताओं की तरह आदेश देंगे  
गुलाम उनका पालन करते रहेंगे,  
लेकिन आदमी, फिर आदमी है, उससे बड़ा कौन?  
फिर क्या वे टिक पाएँगे और हमें मनर्मज्जों से हाँक पाएँगे?

(पुनः वही कोरस)

ओ आजादी! क्या आदमी तुम्हें छोड़ सकता है,  
तुम्हारी उदार ऊझा को महसूस करने के बाद?  
क्या काल कोठरियों की जंजीरें और सलाखें बाँध सकती हैं तुम्हें  
या फिर कोड़ों की मार तुम्हारी महान् आत्मा को कर सकती है वश में?  
दुनिया बहुत समय तक विलाप कर चुकी झूटे, जालिम के हाथ में है कटार;  
लेकिन आजादी हमारी तलवार और ढाल है,  
और उनकी सभी चालबाजियाँ हो रही हैं उजागर?

(पुनः वही कोरस)

Opportunities:—  
1. The possibility of acting with a law that passed  
Opportunities for work in the labour parties of the period  
2. Secret International  
[Lewin v. D. Gottschalk of Dist. N.Y.]

Illegal work:—  
"In a country where we are persecuted, or the  
Government has any Social Democracy  
in its power, the communists party must  
learn to coordinate its legal work with  
illegal work, and illegal work must  
always be under the effective control of the  
illegal party."

International of Dist. N.Y. example:—  
The vast organization of Communists and Bolsheviks were  
opposed to Social Democratic activities, and when the  
Bolsheviks came in number of the leaders and large  
factions of the masses were unable to adapt themselves  
to the new situation..... It is thus inevitable  
development that accounts for largely for the  
betrayal of it being national.

Mark & Lewis F. C.  
Morris Hillquit

"The Czar's Word Book" (1905)  
American Private Notes  
"Czarist Russia - In An Argument Which Was  
Followed by a Proletarian in Answer to the Demands  
of American Socialism"

## पनपती मौकापरस्ती

कानून के दायरे में काम करने की संभावना ने ही स्कॉटलैंड इंटरनेशनल के समय की लेबर पार्टियों में मौकापरस्ती को पनपा दिया।

(लेनिन वाइड कॉलेप्स ऑफ II इंट. ने.)

: \* :

## गैर-कानूनी काम

“ऐसे देश में जहाँ बुर्जुआवादी, क्रांति-विरोधी, सोशल डेमोक्रेसी सत्ता में है, वहाँ कम्युनिस्ट पार्टी को अपने कानूनी काम को गैर-कानूनी काम के साथ समन्वित करना सीखना चाहिए, और कानूनी काम हमेशा गैर-कानूनी पार्टी के प्रभावी नियंत्रण में ही होना चाहिए।”

—बुखरिन

: \* :

## इंटरनेशनल के मकसद से गद्दारी

समाजवाद और लेबर के विशाल संगठन को इस तरह शांतिकालीन गतिविधियों से समावेजित किया गया; और जब संकट आया, तो अनेक नेता और जनता का बड़ा हिस्सा नई स्थिति से तालमेल नहीं बैठा पाया—

II इंटरनेशनल के साथ विश्वासघात मुख्यतः इसी लाजिमी घटना के कारण हुआ।

मार्क्स टू लेनिन, पी  
मोरिस हालक्वाइट (पृ. 140)

: \* :

‘दि सिनिक्स वर्डबुक’ (1906)

एंब्रोस प्रियर्से लिखता है—

“ग्रेप शॉट : एक दलील, जो भविष्य के अमेरिकी समाजवाद की माँगों का जवाब देने के लिए तैयार कर रहा है।”

धर्म है स्थापित व्यवस्था का समर्थक

## दासता

प्रेस्बाइटरियन चर्च की जनरल असेंबली ने 1835 में संकल्प लिया कि “दासता को ओल्ड और न्यू टेस्टामेंट, दोनों में मान्यता है, और गॉड की अर्थात् दुवारा उसकी निंदा नहीं की जाती।”

शारलेस्टन ब्रेविटरस्ट एसोसिएशन ने 1835 में निम्नलिखित संकल्प पारित किया—“सिरजनहार द्वारा दासों के समय पर मालिक के अधिकार को सभी चीजों के द्वारा स्पष्ट रूप से मान्य किया गया है। उसके मालिक को उसकी किसी भी वस्तु पर मिल्कियत की पूरी आजादी है।”

रेव. ई.डी. सायमन, डायरेक्टर ऑफ डिविनिटी, मेथोडिस्ट कॉलेज ऑफ वर्जीनिया के प्रोफेसर ने लिखा—

“होली रिट के उद्धरणों में स्पष्ट रूप से जोर देकर कहा गया है कि दासों पर स्वामित्व का अधिकार उस अधिकार के सामान्य घटनाक्रम के साथ जुड़ा है। खरीदने और बेचने के उनके अधिकार का स्पष्ट रूप से उल्लेख है। पूरे विषय पर, भले ही हम स्वयं गॉड द्वारा निर्धारित ज्यूइश पालिसी को पढ़ लें अथवा सभी युगों में समान जनमत और व्यवहार अथवा न्यू टेस्टामेंट के आदेशों और नैतिक कानून को, हम इस नतीजे पर पहुँचते हैं कि दासता अनैतिक नहीं है। इस बात को प्रमाणित करने के बाद कि सबसे पहले अफ्रीकन दासों को कानूनन दास बनाया गया, उनके बच्चों को दास बनाने का अधिकार अनिवार्य रूप से निष्कर्षतः सामने आता है। इस प्रकार अमेरिका में जो दासता प्रचलित है, वह अधिकार के तहत है।”

## ਪੱਜੀਵਾਦ ਕਾ ਸਮਰਥਨ

हेनरी वान डाइक ने 'एसे इन एप्लीकेशन' (1905) में लिखा—

“बाइबल सिखाती है कि गॉड दुनिया का मालिक है। वह अपनी मर्जी से हर एक व्यक्ति को, सामान्य नियमों के अनुसार चीजें वितरित करता है।”

- \* -

12

Satisfied about United States.

Army was 50,000 strong?  
It is now 300,000 strong?

Huberity owned 67 billions of wealth.  
But of the total hours engaged in consumption only  
47 belong to Huberity  
yet they own 70% of the total wealth.  
One of them engaged in consumption 27 belong to middle class.  
They own 5% of the total wealth = 24 billions.  
Remaining 74% of the men in consumption belong to  
the proletarian and they only  
6 of the total wealth is theirs.

According to Encyclopaedia Socialis in 1948 —

Capital Engaged in agriculture = 235,251 belonging to Peasants  
= 942,745 middle class  
= 20,473,137 Proletarians

(from Head)

You say you lost your money in the market  
and State Office. But  
How many rifles have you got? Do you know  
where you can get plenty of lead? And how I would  
like to see the chemical industry as better than  
technological mixture. You take me (W.W.D.)  
to the market. I will show you

## संयुक्त राज्य से संबंधित आँकड़े

सेना में 50,000 लोग थे  
अब 3,00,000 लोग हैं।

————— : \* : —————

प्लूटोक्रेसी के पास 67 बिलियन की संपदा है।

व्यवसायों में लगे कुल लोगों में सिर्फ 9/10% प्लूटोक्रेसी से संबंधित हैं,

फिर भी उनके पास कुल संपदा का 70% हिस्सा है।

व्यवसायों में लगे लोगों में से 29% मध्यम वर्ग के हैं,

उनके पास कुल संपदा का 25% = 24 बिलियन है।

व्यवसायों में लगे लोगों में शेष 70% लोग प्रोलेटेरियट से जुड़े हैं और उन्हें कुल संपदा में से सिर्फ 4% अर्थात् 4 बिलियन (मिलता) है।

ल्यूसियन सेनियल के अनुसार, 1900 में—

व्यवसायों में लगे कुल लोगों में से = 250, 251 प्लूटोक्रेट्स से जुड़े हैं।

व्यवसायों में लगे कुल लोगों में से = 8,429,845 मध्यम वर्ग के हैं

व्यवसायों में लगे कुल लोगों में से = 20,395,137 प्रोलेटेरियट

—आयरन हील

————— : \* : —————

## रायफल्स

तुम कहते हो कि तुम्हें पार्लियामेंट और स्टेट ऑफिसेज में बहुमत मिलेगा, लेकिन तुम्हारे पास कितनी रायफल्स हैं? तुम्हें पता है कि तुम्हें बड़ी मात्रा में सीसा कहाँ मिल सकता है? जहाँ तक बारूद की बात है, तो रासायनिक मिश्रण यांत्रिकीय मिश्रणों से बेहतर हैं। मेरी बात को लिख लो।

—आयरन हील (प. 198)

### Power vs Government:

55

A socialist leader had addressed a meeting of the plutocrats and charged them of mismanaging a society and thereby thrown the whole responsibility on their shoulders, the responsibility for the woe and misery that confronts the suffering humanity. Afterward a Capitalist (Mr. Wickson) rose and addressed him as follows:—

"This, then, is our answer. We have no power to touch on you, when you renounce yourvarnished strong hands for our places and purified ease, we will show you what strength is. In view of all that and throughout in view of machine guns will our answer be concord. We will grind you revolutionists down under our heel, and we shall walk upon your faces. The world is ours, we are its lord and ours if shall remain. As far as God goes, it has always been in the dirt since history began, and friend history ought. And in the dirt it shall remain so long as I and those that come after us have the power. There is mine and those that come after us have the power. Not God, not man, not Power. Pour it over your tongue till it twinges with it.

"I am answered," Exoner (the Socialist leader) said quietly. "It is the only answer that could be given. Power. It is what we of the working class want. We know, and well we know by bitter experience that, no appeal for the right, for justice, for humanity can ever touch you. Your hearts are hard as your heels with which you tread upon the faces of the poor. So we have preached power. By the power of our ballots on election day will we take your government away from you."

"What if you do get to a majority, a sweeping majority on election day?" Mr. Wickson broke in and demand. "Suppose we square & turn the Government you after you have captured it at the ballot box?"

को (अपठनीय-फटा हुआ) शक्ति

एक समाजवादी नेता ने प्लूटोक्रेटस धनिकतंत्र की एक सभा को संबोधित करते हुए उन पर समाज की व्यवस्था बिगड़ने का आरोप लगाया था और उन पर सारी जिम्मेदारी डाल दी थी, मानवता की सभी तकलीफों और परेशानियों की जिम्मेदारी। इसके बाद एक पूँजीवादी (पि. विक्सन) उठा और निम्नलिखित बात कही—

“इस पर हमारा जवाब यह है—हमारे पास तुम पर बेकार करने के लिए शब्द नहीं हैं। जब तुम घंटं से भरकर अपने मजबूत हाथ हमारे महलों तक पहुँचाओगे, और हमारे आराम में दखल दोगे, तो हम तुम्हें दिखाएँगे कि शैलर की दहाड़ में और बम के गोलों की गड़गड़ाहट में कितनी ताकत होती है और मशीनगनों की बहरा कर देने वाली आवाज में कितना दम होता है? हमारा जवाब यही होगा।”

तुम क्रांतिकारियों को हम एड़ी तले पीसकर रख देंगे, और तुम्हरे चेहरों को पैरों से रोंद देंगे। दुनिया हमारी है। हम इसके मालिक हैं और यह हमारी ही रहेगी। जहाँ तक मजदूर वर्ग का सवाल है, तो यह इतिहास में शुरू से ही नीच रहा है, और मैंने इतिहास को सही पढ़ा है।

जब तक हम और हमारे बाद आनेवाले लोग सत्ता में हैं, यह नीचता में ही रहेगा।

एक शब्द है—सत्ता। यह शब्दों का राजा है—

सत्ता ही सबकुछ है गॉड नहीं, पैसा नहीं सत्ता ही सबकुछ है। अपनी जबान पर रख लो और तब तक उसे रखे रहो, जब तक कि यह उसे झगड़ानने न लगे। सत्ता”

"That also, have we considered," learned replied.  
And we shall give you an answer in terms of Land, Power, you have  
proclaimed the King of Swords. Very good! Power it shall be; And in  
the day that we sweep to victory at the hottest Dogs, and you agree  
to turn over to us the ports we have consistently and  
peacefully captured, and you demand what we are  
going to do about it — in that day, I say, we shall  
answer you; and in roar of shell and grapevolley  
in whirl of machine gun shall our answer be  
Canchi.

Iron heel (1.88)  
by Jack London

अर्नेस्ट (समाजवादी नेता) ने गंभीरता से कहा, “मुझे जवाब मिल गया।” “यही जवाब दिया भी जा सकता था। सत्ता का ही उपदेश हम मजदूर वर्ग के लोग देते हैं। हमें पता है, हम यह बहुत कड़वे अनुभव से जानते हैं कि अधिकार, इनसाफ, मानवता की किसी अपील से तुम नहीं पर्सीजोगे। तुम्हारे दिल तुम्हारी एडियों की तरह ही कठोर हैं, जिनसे तुम गरीबों के मुँह कुचलते हो। लिहाजा, हमने सत्ता का उपदेश दिया है। अपने मतपत्र (बैलेट) की ताकत से हम चनाव के दिन तमसे सत्ता छीन लेंगे।”

मि. विक्सन ने बीच में टोककर पूछा, “अगर तुमको चुनाव के दिन बहुमत, पूरा बहुमत मिल भी जाए तो क्या?” “सोचा है कि बैलेट बॉक्स के जरिए तम्हारे सत्ता पर काबिज हो जाने के बाद हम सरकार तम्हारे हवाले करने से इनकार कर दें तो?”

अर्नेस्ट ने जवाब दिया, “उसके बारे में भी हमने सोच लिया है। हम तुम्हें गोलियों की भाषा में जवाब देंगे। तुमने सत्ता को ‘शब्दों का राजा’ कहा है। बहुत अच्छा! सत्ता ऐसी ही रहेगी। जिस दिन हम चुनाव में जीत जाएँगे, और तुम हमें सरकार सौंपने से इनकार कर दोगे, जिसे हमने संवैधानिक रूप से शांतिपूर्वक प्राप्त करने का अधिकार जीता है, और तुम पूछोगे कि उस दिन हम क्या करेंगे, तो हम तुम्हें जवाब देंगे; और यह जवाब बम-गोलों की गरज तथा मशीनगनों की बहरा कर देने वाली आवाज के साथ होगा।

“तुम हमसे बचकर नहीं जा सकते। यह सही है कि तुमने इतिहास सही पढ़ा है। यह सही है कि मजदूर वर्ग इतिहास में शुरू से ही नीचता में रहा है। यह भी उतना ही सही है कि जब तक तम और तम्हारे लोग तथा तम्हारे बाद आनेवाले लोग सत्ता में हैं, मजदूर वर्ग नीचता में ही रहेगा,

मैं तुमसे सहमत हूँ। सत्ता ही इनसाफ करेगी, क्योंकि इसने ही सदा से इनसाफ किया है। यह वर्गों का संघर्ष है। जिस तरह तुम्हारे वर्ग ने सामंती कुलीनों को नीचे उतारा था, वैसे ही मेरे वर्ग, मजदूर वर्ग द्वारा उसे उतारा जाएगा। अगर तुम अपने जीव विज्ञान और समाजशास्त्र को भी उतना ही सही पढ़ो, जितना इतिहास को पढ़ा था, तो तुम समझ जाओगे कि मैंने जिस अंत का जिक्र किया, वह होना लाजमी है। इससे फर्क नहीं पड़ता कि यह एक साल में होगा या दस या हजार साल में—तुम्हारे वर्ग को नीचे उतारा ही जाएगा। यह सत्ता के बल पर किया जाएगा। हम मजदूर वर्ग के लोगों ने इस शब्द पर ध्यानपूर्वक विचार किया है और हमारा दिमाग इसी में लगा हुआ है। सत्ता—यह राजसी शब्द है।"

—आयरन हील जेक लंडन (पृ. 353)

### Figures :-

#### England :-

1922 - Number of unemployed 3,135,000  
1926 - it has oscillated to 1,400 to 1½ millions i.e.  
1,280,000 to 1,500,000

55

### Betrayal of the English labour leaders:-

The years 1911 to 1913 were times of unparalleled class struggle of miners, railwaymen, and transport workers generally. In August 1911 a national, in the words a general, strike broke out on the railways. The vague shadow of revolution descended over Britain in those days. The leaders exerted all their strength in order to paralyse the movement. Their motto was 'Patriotism'. The affair was occurring at the time of the Agadir incident, which threatened France to war with Germany. As is well known today the premier commanded the workers' leaders to a secret council, and called them to the salvation of the fatherland. And leaders did all that lay in their power, strengthening the bourgeoisie, and thus preparing the way for an imperialist slaughter.

P.S.  
Cited in *British Labour* 207.

## आँकड़े

### इंग्लैंड—

1922—बेरोजगारों की संख्या 1,135,000

1926—यह और मिलियन के बीच झूलती रही, अर्थात् 1,250,000 से 1,500,000 के बीच।

### अंग्रेज मजदूर नेताओं की गद्दारी

साल 1911 से 1913 तक खानकर्मियों, रेलवे मैन तथा परिवहन मजदूरों के अतुलनीय वर्ग संघर्ष का समय था। अगस्त 1911 में एक राष्ट्रीय, अन्य शब्दों में सामान्य, रेलवे हड़ताल हो गई। उन दिनों ब्रिटेन पर क्रांति की धूँधली छाया मँडरा रही थी। नेताओं ने आंदोलन को पंगु बनाने के लिए अपनी पूरी ताकत झोंक दी। उनका प्रेरक शब्द था 'देशभक्ति'; यह कार्य अगादिर घटना के समय हो रहा था, जिससे जर्मनी के साथ जंग का खतरा था।

जैसा कि आज सुविदित है, प्रीमियर प्रधानमंत्री ने मजदूरों के नेताओं की एक गुप्त बैठक बुलाई और उनसे पिरूभूमि की मुक्ति का आह्वान किया। नेताओं ने अपनी पूरी ताकत लगाकर जो मुमकिन था वह किया, जिससे बुर्जुआ मजबूत हुए और साम्राज्यवादी संहार का मार्ग प्रशस्त हुआ।

द्वेयर इज ब्रिटेन  
द्रोटस्की

56

*Retreat*

On Aug. 1911 the movement return after the "Black Friday" when the triple alliance of miners, railwaymen's, and transport leaders organized the general strike.

for Reform a threat of revolution is necessary;

The British bourgeoisie reckoned that by such means (reform) a revolution could be avoided. It follows, therefore, that even for the introduction of reforms the principle of graduality alone is insufficient, and that an actual threat of revolution is necessary.

Social Solidarity:

It would seem that once we stand for the annihilation of a privileged class which has no desire to pass from the scene, we have missed the basic content of the class struggle. But no, Macdonald desires to "raise" the consciousness of social solidarity. With whom? The solidarity of a working class is an expression of its internal uniting in the struggle with the bourgeoisie.

The social solidarity which Macdonald preaches is the solidarity of the exploited with the exploiters, in other words, the main basis of exploitation.

Revolution & calamity;

"The revolution in Russia," says Macdonald, "taught us a great lesson. It showed that revolution is a ruin and a calamity & nothing more."

## गद्दारी

1920 के बाद ही आंदोलन सीमित हुआ, 'ब्लैक फ्राइडे' के बाद, जब खननकर्मियों, रेलवे और ट्रांसपोर्टरों के नेताओं ने व्यापक हड़ताल के साथ गद्दारी की।

----- : \* : -----

## सुधार के लिए क्रांति का खतरा जरूरी है

---अंग्रेज बुर्जुआ यह मानकर चल रहे थे कि इन साधनों (सुधार) से क्रांति को टाला जा सकता है। लिहाजा, समझ में आया कि सुधार लागू करने के लिए सिर्फ धीरे-धीरे काम करते रहने का सिद्धांत ही पर्याप्त नहीं है, और क्रांति का एक वास्तविक खतरा जरूरी है।

----- : \* : -----

## सामाजिक एकजुटता

---ऐसा लगता है कि अगर हम एक बार परिवृश्य से हटने को अनिच्छुक, विशेषाधिकार प्राप्त वर्ग के संहार का पक्ष लें तो हमें वर्ग संघर्ष का बुनियादी सारतत्त्व उसमें मिल जाएगा। लेकिन नहीं, मैकडोनाल्ड सामाजिक एकजुटता की चेतना 'जगाना' चाहते हैं। किसके साथ? मजदूर वर्ग की एकजुटता, बुर्जुआ के साथ संघर्ष में आंतरिक सुरक्षात्मकी की अभिव्यक्ति है।

57

Revolution leads only to calamity! Our hi. Briton's democracy led to the imperialist war, with the result of which the calamities of revolution cannot, of course, compare in the very least. But, in addition to this, what deaf ears and shameless face are necessary in order in the face of a revolution which overthrew Baron, nobility, and bourgeoisie throughout the Church, awakened by a new life a nation of 100 millions, a whole family of nations; to take that revolution is nothing a calamity of something more.

P. 64.

Peaceful? When and where did the ruling class ever yield power and property in the order of a peaceful vote — and especially such a case as the British bourgeoisie, which lies behind its centuries of world rapacity.

P. 66

Aim of Socialism: — Peace It is absolutely unenvisaged that the aim of Socialism is to eliminate force, first of all in its most crude and bloody forms, and afterwards in other more concealed forms.

P. 68

Ques: What is Capitalism? Not only.

Aim of the World Revolution: —

1. To overthrow Capitalism
  2. To control the nature for the service of humanity.
- This is how Bankheria defined.

----- : \* : -----

जिस सामाजिक एकजुटता का मैकडोनाल्ड उपदेश दे रहे हैं, वह शोषितों की शोषकों के साथ एकजुटता है। शोषण को बनाए रखने के अलावा और कुछ नहीं है।

क्रांति तो विपदा को ही जन्म देती है, लेकिन ब्रिटिश जनतंत्र ने तो साम्राज्यवादी युद्ध को जन्म दे दिया, जिसकी बरबादी की तुलना क्रांति की विपदाओं से तो निश्चित तौर पर तनिक भी नहीं की जा सकती। फिर भी, जिस क्रांति से जारशाही, कुलीनतंत्र और बुर्जुआ वर्ग को उखाड़ फेंका, चर्च को हिलाकर रख दिया। 130 करोड़ लोगों के एक राष्ट्र या राष्ट्रों के एक समूचे कुल में, एक नए जीवन का संचार किया। उसके सामने यह घोषणा करने के लिए कि क्रांति एक विपदा के सिवाय और कुछ नहीं है। ऐसे ही बहरे कानों और निर्लज्ज चेहरों की जरूरत है। (प. 64)

## शांतिप्रिय?

कब और कहाँ सत्ताधारी वर्ग ने शांतिपूर्ण मतदान के जरिए कभी सत्ता और संपत्ति सौंपी है? विशेषकर ब्रिटिश बुजुआ जैसे वर्ग ने, जिसका दुनिया में लूटमार करने का सदियों का इतिहास है। (पृ. 66)

————— : \* : —————

## समाजवादी शांति का मकसद

यह बात पूरी तरह अकाट्य है कि समाजवाद का मकसद, ताकत के सबसे पहले, सर्वाधिक भौंडे और खूनी स्वरूप को खत्म करना है, और इसके बाद इसके छुपे रूपों को।

—हेचर इज ब्रिटेन गोइंग  
द्रॉट्स्की (पृ. 80)

————— : \* : —————

## विश्व क्रांति का लक्ष्य

1. पूँजीवाद को हटाना
2. मानवता की सेवा के लिए प्रकृति पर नियंत्रण करना

58

Man and Machinery:

The United States Product of Labour tells:-

12 lbs package of flour can be made by a man working with a machine in 1 hr. 30 minutes.  
[कलाई] The same would take 140 hours and 55 minutes if man works with tools only, incl. labour machine.  
100 pairs of shoes by machine work take 23½ hrs & 26 min.  
By hand it will take 1,831 hrs 40 minutes.  
Labour cost of machine is \$ 49.02  
By hand is \$ 457.92

500 yards of gingham checks are made by machine takes in 7½ hours.  
By hand makes it takes 5,844 hours.

100 lbs of sewing cotton can be made by machine combines in 8½ hrs,  
by hand it takes 2,895 hours.

Re: Agriculture:  
A good man with a scythe can reap 1 acre a day (12 hrs)  
A machine does the same work in 20 minutes.  
One man with flails can thresh 6 bushels of wheat in half an hour  
One machine threshes can do 12 times much  
"The increase effectiveness of man-labour,  
aided by the use of machinery... varies from  
say in the case of rice, to 2,240% in the case of  
barley..."

नोट : बुखरिन ने इसे इस तरह परिभाषित किया है—भगतसिंह

## मानव और मशीनरी

यूनाइटेड स्टेट्स ऑफ ब्यूरो कहता है—

एक मनुष्य मशीन पर काम करके 1 घंटा 34 मिनट में पिनों के 12 lbs बना सकता है।

अगर मनुष्य सिर्फ औजारों से काम करे, तो इसे करने में 140 घंटे 55 मिनट लगेंगे, लेकिन बिना मशीन के।

(अनुपात : 1.34 : 140.55 गुना)

{मशीन से 100 जोड़ी जूते बनाने में 234 घंटे 25 मिनट लगेंगे।}

हाथ से बनाने में 1,831 घंटे 40 मिनट लगेंगे।

मशीन की श्रम लागत 69.55 डॉलर होगी।

हाथ की श्रम लागत 457.92 डॉलर

————— : \* : —————

मशीन द्वारा 500 गज जिंगम चेक्स बनाने में 73 घंटे लगते हैं।

हाथ से बनाने में 5,844 घंटे।

————— : \* : —————

स्यूइंग कॉटन के 100 lbs मशीन से बनाने में 39 घंटे लगते हैं।

हाथ से बनाने में 2,895 घंटे।

----- : \* : -----

## संदर्भ—कृषि

एक कुशल व्यक्ति दराँती से एक दिन (12 घंटे) में 1 एकड़ में कटाई करेगा

यही काम मशीन 20 मिनट में कर देगी

एक मशीन श्रेष्ठ 12 गुना काम कर देगी।

“मशीन के उपयोग से मनुष्य-श्रम की प्रभावशीलता अधिक है—चावल के मामले में 150%, जौ के मामले में 2,244%...”

The Wealth of U.S.A. & its Population		59
in 1850	Total Wealth was \$ 7,135,780,000	Per Capita \$ 7,072.
1860	16,159,616,000	\$ 308 = 23,191,876
1870	30,068,518,000	\$ 274 = 31,443,32
1880	43,662,000,000	\$ 280 = 30,558,37
1890	65,237,091,000	\$ 306 = 62,773,716
1900	88,577,307,000	\$ 346 = 75,799,595
1912	107,104,202,000	\$ 310 = 33,466,555
	187,139,071,000	\$ 1,965 = 95,410,502

Due to the use of machinery

The machine is said to be nature, as the tool  
was individual.

men "Give us worse cotton, but give us better"  
says Emerson.

"Deliver me those rickety bleeding souls  
of infants, and let the Cotton have take its chance".

The man cannot be sacrificed to the machine.  
The machine must serve mankind, yet the  
danger to the human race lurks, manacing  
in an Industrial Regime.

Poverty & Riches P. 81  
Scott Nearing

## यू.एस.ए. की संपदा और उसकी आबादी (1850-1912)

1850 में—.....

कुल संपदा थी—7,13,780,000 डॉलर

प्रति व्यक्ति—308 डॉलर

=कुल आबादी—23,191,876

1850 में—1860

कुल संपदा थी—16,159,616,000 डॉलर

प्रति व्यक्ति—514 डॉलर

=कुल आबादी—1,443,321

1850 में—1870

कुल संपदा थी—30,068,518,000 डॉलर

प्रति व्यक्ति—780 डॉलर

=कुल आबादी—38,558,371

1850 में—1880

कुल संपदा थी—43,642,2000,000 डॉलर

प्रति व्यक्ति—870 डॉलर

=कुल आबादी—50,155,785

1850 में—1890

कुल संपदा थी—65,037,091,000 डॉलर

प्रति व्यक्ति—1,036 डॉलर

=कुल आबादी—82,947,714

1850 में—1900

कुल संपदा थी—88,517,307,000 डॉलर

प्रति व्यक्ति—1,165 डॉलर

=कुल आबादी—75,994,575

1850 में—1904

कुल संपदा थी—104,104,202,000 डॉलर

प्रति व्यक्ति—1,318 डॉलर

=कुल आबादी—82,466,551

1850 में—1912

कुल संपदा थी—187,139,071,000 डॉलर

प्रति व्यक्ति—1,965 डॉलर

=कुल आबादी—95,4,0,503

मशीन के उपयोग के कारण

मशीन की प्रकृति सामाजिक है, औजार की व्यक्तिगत

\_\_\_\_\_ : \* : \_\_\_\_\_

\_\_\_\_\_ : \* : \_\_\_\_\_

“हमें खराब कपड़ा दो, लेकिन हमें बेहतर आदमी दो।” एमर्सन का कहना है।

“सुखंडी रोग से मरते शिशुओं की प्राण-रक्षा करो, फिर उसके बाद कपड़ा व्यापार को तरजीह दो!”

————— : \* : —————

मशीन के लिए मनुष्य की बलि नहीं दी जा सकती। मशीन को मानवता की सेवा करनी चाहिए, फिर भी औद्योगिक व्यवस्था में मनुष्य जाति के सामने मुँह बाए खतरा तो मँडराता ही है।

—पॉर्टर्ट इंड रिचेज

स्कॉट नियरिंग (पृ. 81) नोट : मशीन के उपयोग के कारण—भगतसिंह

————— : \* : —————

60

### Man and Machinery.

C. Newbold Henderson in his "Pay Day" writes,  
"This institution of industry, the most primitive of  
all institutions, organized and developed under  
a free market from the treasury of design, in income  
tells the greatest tyrant, destroying a multi-hued web  
the condition of actual slaves forced to produce, through  
long and weary hours, a senseless glut of things and  
thus forced to suffer for the lack of very things they  
have produced."  
"Pr. Richy, p. 87."

### Man is not for machinery.

The combination of steel and fire, which man  
has produced and called a machine must be  
ever the servant, never the master of man.  
Neither the machine nor the machine owner  
may rule the human race. P. 88.

Imperialism:  
"Imperialism is Capitalism in that stage of  
development in which monopolies and financial  
capital have attained a preponderating influence,  
the export of capital has acquired great importance,  
the international trusts have begun the partition  
of the world, and the biggest Capitalist countries  
have completed the division of the entire  
terrestrial globe among themselves."

Lerin.

## मानव और मशीनरी

सी. नेनफोर्ड अपनी पुस्तक 'पेडे' में लिखता है—

“मनुष्य को अत्याचार से मुक्त करने के लिए संगठित और विकसित की गई सभी संस्थाओं में सबसे पुरानी संस्था उद्योग संस्था खुद ज्यादा अत्याचारी हो गई है, जिसने बड़ी तादाद में लोगों को दासता की स्थिति में पहुँचा दिया है—दास को घंटों, थकान वाली मेहनत से उत्पादन करना है, चीजों की बेतहाशा बाढ़ लाना और फिर उन्हें थकान वाली चीजों के लिए तरसना है, जो उसने बनाई हैं।”

—पाव. रिचेज (पृ. 87)

————— : \* : —————

## मानव मशीन के लिए नहीं है

मानव द्वारा किए गए इस्पात और आग के संयोजन से बनी मशीन को हमेशा सेवक रहना चाहिए, मानव की स्वामी नहीं। न तो मशीन और न ही मशीन का मालिक मानव जाति पर शासन कर सकता।

————— : \* : —————

## साम्राज्यवाद

“साम्राज्यवाद विकास की उस अवस्था में पूँजीवाद हो गया, जिसमें एकाधिकारों और वित्तीय पूँजी का प्रभाव बहुत बढ़ गया, पूँजी के नियर्त का महत्व अत्यधिक हो गया, अंतरराष्ट्रीय न्यासों ने विश्व को टुकड़ों में बाँटना शुरू कर दिया, और सबसे बड़े पूँजीवादी देशों ने संपूर्ण भौगोलिक विश्व के आपस में विभाजन का काम पूरा कर लिया।”

यहाँ क्रांतिकारी तानाशाही लाना है।

Dictatorship: —  
Dictatorship is an authority relying directly upon force, and not bound by any laws.  
The revolutionary dictatorship of the proletariat is an authority maintained by the proletariat by means of force over and against the bourgeoisie, and not bound by any laws.

Post, 1900, P. 18. Lenin.

Revolutionary Dictatorship: —  
Revolution is an act in which one section of the population imposes its will upon the other by rifles, bayonets, guns, and other such exceedingly authoritarian means, but the party which has won is necessarily compelled to maintain its rule by means of that fear which its arms inspire in the reactionaries. If the Commune of Paris had not relied upon the armed people as against the bourgeoisie, armed if have maintained itself more than half an hour? Are we not, on the contrary, justified in reproaching the Communards for having employed this authority too little?

J. Engels.

Bourgeois Democracy: —  
Bourgeois democracy, while constituting a great historical advance in comparison with feudalism, nevertheless remained, and can not but remain, a very limited, a very hypocritical institution, a paradise for the rich and a trap and a delusion for the exploited and for the poor.

Lenin, P. 18.

## तानाशाही

तानाशाही एक ऐसा अखियार है, जो सीधे तौर पर ताकत से जुड़ा है, और किसी कानून के बंधन में नहीं है।

प्रोलेटरिएट द्वारा बुर्जुआ पर और उसके खिलाफ ताकत के बल पर कायम रखा गया कोई अखियार किसी भी कानून से बँधा नहीं है।

—प्रोलि. रिवो (पृ. 81)

## क्रांतिकारी तानाशाही

“क्रांति एक ऐसा कृत्य है, जिसमें आबादी का एक हिस्सा रायफलों, संगीनों, तोपों और ऐसे ही तानाशाही माध्यमों से स्वयं को दूसरों पर अपनी मर्जी थोपता है। जो दल जीत जाता है, वह भय और डर के जरिए अपनी हुक्मत को कायम रखता है। यह डर प्रतिक्रियावादियों में इसके हथियारों द्वारा पैदा किया जाता है। अगर पेरिस का कम्यून बुर्जुआ के खिलाफ हथियारबंद लोगों पर निर्भर नहीं रहता, तो क्या यह चौबीस घंटे से ज्यादा टिका रह सकता था? इसके विपरीत, क्या हम बहुत कम अधिकार का प्रयोग करने के लिए कम्यून की आलोचना करके सही काम कर रहे हैं?

—एफ. एंगेल्स

## बुर्जुआ लोकतंत्र

बुर्जुआ लोकतंत्र सामंतवाद की तुलना में बड़ी ऐतिहासिक बढ़त हासिल करने के बावजूद एक बहुत सीमित, एक बहुत पाखंडी संस्थान बनकर रह गया है, और वह ऐसा हुए बिना नहीं रह सकता। क्या यह अमीरों के लिए स्वर्ग और शोषितों तथा गरीबों के लिए एक जाल और भ्रम नहीं बन गया है?

Exploitation of labour and state:

"Not only the ancient and feudal, but also the representative State of today is an instrument of exploitation of wage-labour by Capital." Engels.

Dictatorship:

"Since the state is only a temporary institution which is to be made use of in revolution and as forcibly to suppress the opponents, it is perfectly absurd to talk of about a free popular State, so long as the proletariat still needs the state it needs it not in the interest of freedom, but in order to suppress its opponents; and when it becomes possible to speak of freedom in the state, as such, ceases to exist."

Engels in his letter to Babel March 29<sup>th</sup>, 1875.

The impatient idealists:

The impatient idealists — and without some impatience a man will rarely prove effective — is almost sure to be led into hatred by the oppositions and disappointments which he encounters in his endeavour to bring happiness to the world.

Portrait of Russell.

नोट : लेनिन की रचना 'सर्वहारा क्रांति और गद्दाम काउत्स्की' से।

## श्रम और राज्य का शोषण

"सिर्फ प्राचीन और सामंती राज्य के नहीं, बल्कि मौजूदा राज्य के प्रतिनिधि भी पूँजी के हाथों मजदूर के शोषण का जरिया बन गए हैं।"

— एंगेल्स

————— : \* : —————

## निरंकुशता

"चूँकि राज्य सिर्फ एक अस्थायी संस्था है, जिसका क्रांति में विरोधियों के दमन के लिए उपयोग किया जाता है। लिहाजा, किसी लोकप्रिय राज्य की बात करना बकवास है; जब तक सर्वहारा को राज्य की जरूरत है, उसे इसकी जरूरत आजादी के हक में नहीं, बल्कि अपने विरोधियों के दमन के लिए है और जब आजादी की बात करना मुमकिन हो जाता है, तब राज्य का अस्तित्व ही नहीं रह जाता।"

— बेबेल को अपने पत्र में एंगेल्स ने लिखा

28 मार्च, 1875

————— : \* : —————

## बेचैन आदर्शवादी

बेचैन आदर्शवादी—और बिना कुछ बेचैनी के, कोई व्यक्ति कभी असरकारी साबित नहीं हो सकता—दुनिया में खुशहाली लाने की अपनी कोशिश में मिलने वाले विरोध और हताशाओं के चलते निश्चय ही नफरत से भर जाएगा।

— बटेंड रसे

————— : \* : —————

Leader:

"No time need have gone to vain" writes Carlyle, "could it have found a man great enough, a man wise and good enough; wisdom & discerning truly what the time wants, virtue to lead it on the right road neither; these are the salvation of any time."

Arbitrariness.

Kautsky had written a booklet with the title "Proletarian Dictatorship" and had deplored the act of Bolsheviks in depriving the bourgeois people from the right of vote. Lenin writes in his "Proletarian Revolution":— (pp 77)

Arbitrariness! Only think what a depth of meanest arbitrariness to the bourgeoisie, and of the most idiotic peasant, is contained in such a statement. When thoroughly bourgeois and, for the most part, even reactionary friends of capitalist countries have in the course of we may almost say centuries been drawing up rules and regulations and writing a hundred of volumes of various codes and laws, and of interpretations of them to oppress the workers, to bind them hand and foot, the poor men, and to place a hundred and one further enormous obstacles in the way of the simple and toiling mass of the people — when this is done the bourgeois liberal and Monkautsky can see no arbitrariness! It is all this & order! It has all been fought out and written down, has the poor men to be kept down and oppressed. There are thousands and thousands of bourgeois lawyers and officials able to interpret the laws that the working-class person can never break through their verbed hair entanglements. This, of course, is not any arbitrariness, this, of course is not a dictatorship of the filthy & profit-seeking exploiters who are spilling the blood of the people. Oh, it is nothing of the kind. It is "pure democracy," which is belowing power and power.

P.T.D.

## नेता

कालाइल लिखता है, “अगर कोई पर्याप्त रूप से महान्, समझदार और अच्छा आदमी मिल जाता, तो बिल्कुल वक्त बरबाद नहीं होता— ऐसा व्यक्ति, जिसे सचमुच यह समझ होती कि वक्त की माँग क्या है? जिसमें इतना पराक्रम होता कि वक्त के लिहाज से सही रास्ते पर नेतृत्व कर सकता, तब तो इनकी बदौलत कोई भी समय मुक्ति का समय हो सकता था।”

: \* :

## मनमानी

कॉट्स्की ने ‘प्रोलेटेरियट डिक्टेटरशिप’ शीर्षक से एक पुस्तिका लिखी, जिसमें उसने बुर्जुआ लोगों को मतदान के अधिकार से वंचित करने के बोल्शेविकों के कृत्य की निंदा की। यह बात लेनिन ने अपनी पुस्तक ‘प्रोलेटेरियन रेवोल्यूशन’ में लिखी।

कैसी मनमानी! सोचिए कि इस निंदा में बुर्जुओं की घटिया चापलूपी और अत्यधिक मूर्खतापूर्ण आलंकारिकता छुपी हुई है। पूरी तरह बुर्जुआ और पूँजीवादी देशों के अधिकतर प्रतिक्रियावादी न्यायविद् सदियों से नियम और कानून बनाते आ रहे हैं, विभिन्न संहिताओं और कानूनों की पुस्तकें लिखते आ रहे हैं, और मजदूरों का दमन करके उनकी व्याख्याएँ करते रहे हैं, ताकि उनके हाथ-पैर बाँधे जा सकें और सीधे-सादे मेहनतकश लोगों के रास्ते में सैकड़ों बाधाएँ व मुश्किलें खड़ी करते आ रहे हैं—जब यह होता है, तब बुर्जुआ लिबरल्स और कॉट्स्की को ‘मनमानी’ दिखाई नहीं देती! यह कानून और व्यवस्था है! यह विचार और लिखा गया है कि किस तरह हजारों-हजार बुर्जुआ वकील और अधिकारी कानूनों की इस तरह व्याख्या करते हैं कि औसत किसान काँटों से घिर बाढ़ में से कभी बाहर आ ही नहीं पाता। यह मनमानी बिल्कुल नहीं है। यह गंदे और अपना फायदा ढूँढ़ने वाले शोषकों की निरंकुशता नहीं है, जो लोगों का खून पी रहे हैं?

(शेष आगले पेज पर )

every day. But when the ruling and exploiting masses for the first time in history, separated by imperialist wars from their brothers across the frontier, have condemned their Soviets have summoned to the workers of All-Russian construction, the classes which the bourgeois used to oppress and starve, and begun themselves to build up a new proletarian State, begun, in the midst of raging battles, in the fire of civil war, to lay down the fundamental principles of State without exploiters, then all the connivals of the bourgeoisie, the entire band of blood-suckers, with Kerensky being "assisted"; scream about arbitrariness!

(Lenin) R7776

Party:

But it has become clear that no revolution is possible unless there is a party able to lead the revolution. (Ch. 16: Lessons of October 1917)

A party is the indispensable instrument of a proletarian revolution. (P. 17. ~~and~~ by Trotsky)

अरे, ऐसा कुछ नहीं है! यह 'शुद्ध लोकतंत्र' है, जो रोजाना और अधिक शुद्ध होता जा रहा है। लेकिन जब इतिहास में पहली बार मेहनतकश और शोषित लोगों ने, जो साम्राज्यवादी युद्ध के द्वारा सीमा के पार अपने भाइयों से अलग कर दिए गए थे, अपनी सोवियतें बना लीं, तब उन्होंने राजनीति विचार रखनेवाले मजदूरों का आत्मान किया। यह वह वर्ग था, जिसे बुर्जुआ ने दमित और भ्रमित किया था। इन लोगों ने एक नए सर्वहारा राज्य की स्थापना करना शुरू कर दिया। उन्होंने 'शोषकों से रहित राज्य' के बुनियादी सिद्धांत का प्रतिपादन किया। तब बुर्जुआ, खून चूसने वालों के सभी गुंडे कॉट्स्की के साथ मनमानी का राग आलापने लगे।

—लेनिन (पृ. 76)

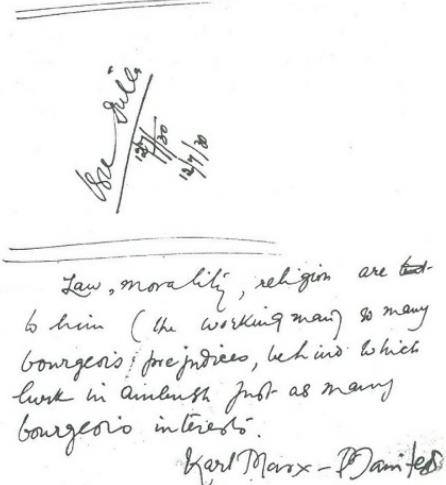
## पार्टी

लेकिन यह स्पष्ट हो गया है कि जब तक नेतृत्व करने के लिए कोई पार्टी न हो, तब तक कोई क्रांति संभव नहीं है।

—लेसंस ऑफ अक्टूबर (1917)

सर्वहारा क्रांति के लिए पार्टी रूपी माध्यम अपरिहार्य है।

—ट्रॉट्स्की की वही पुस्तक



## हस्ताक्षर/(बी.के. दत्त)

12/7/30

12/7/30

कानून, नैतिकता, धर्म उसके (मजदूर) लिये उतने ही बुर्जुआवादी पूर्वग्रह हैं, जिनकी आड़ में इतने ही बुर्जुओं के स्वार्थी हित छुपे हैं।

—काले मार्क्स, मैनिफेस्टो



Autograph  
 of Mr. B K Datta  
 taken on 12<sup>th</sup> July '30  
 in Cell No: 137  
 Central Jail Lahore,  
 four days before his final  
 departure from this jail.  
 (Signed B K D)

\* पेज 66 खली है

## हस्ताक्षर (बी.के. दत्त)

12 जुलाई, '30

बी.के. दत्त का ऑटोग्राफ  
 जो सेंट्रल जेल लाहौर  
 की सेल नंबर 137 में 12 जुलाई, '30 को  
 जेल से अंतिम विदाई  
 के चार दिन पहले लिया गया था।

भगतसिंह

\* पेज 68 खली है

*Sixty of Communists*  
 69  
 "The Communists demand to conceal their views  
 and aims. They openly declare their  
 aims and can be attained only by the forcible  
 overthrow of all existing social conditions. Let  
 the ruling classes tremble at a Communist  
 revolution. The proletarians have nothing to  
 lose but their chains. They have a world  
 to win. Working men of all countries, unite!"

*Sixty of Communists*  
 69  
 "We have said above, that the first step in the  
 revolution by the working class, is to raise  
 the proletariat to the position of ruling class,  
 to win the battle of democracy, without any  
 decisive, all capitalist form in bourgeoisie,  
 to centralize all instruments of production  
 in the hands of the state, i.e. of the proletariat  
 organized as the ruling class; and to increase  
 the total of productive forces as rapidly as  
 possible."

*Communist Manifesto*

## साम्यवादियों का मकसद

"साम्यवादी अपने विचारों तथा मकसदों को छुपाने से नफरत करते हैं। वे खुलकर ऐलान करते हैं कि उनका मकसद सिर्फ मौजूदा सामाजिक हालात को ताकत से बदलकर ही पाया जा सकता है। साम्यवादी क्रांति से सत्ताधारी वर्ग को काँपने दो। सर्वहारा के पास अपनी जंजीरों के अलावा खोने को कुछ नहीं है। जीतने के लिए एक दुनिया है। सभी देशों के मजदूरों, एक हो जाओ।

————— : \* : —————

## साम्यवादी क्रांति का मकसद

"हमने ऊपर देखा कि मजदूर वर्ग द्वारा क्रांति में पहला कदम सर्वहारा को सत्ताधारी वर्ग बनाना, लोकतंत्र की लड़ाई जीतना, क्रमिक रूप से बुर्जुआ से सारी पूँजी छीन लेना, उत्पादन के सभी साधन राज्य के हाथों में केंद्रित करना, अर्थात् सत्ताधारी वर्ग के रूप में संगठित सर्वहारा, और सभी उत्पादक ताकतों को अधिकतम तेजी के साथ बढ़ाना है।"

70 To point out the mistakes of Karl Marx:

... And it certainly looks as if Trotsky belongs to what Germans called the "school of real politics" and was as innocent as Bismarck of any ideology at all. And it is therefore rather curious to note that even Trotsky is not revolution enough to say that Marx had made a mistake, but feels obliged to devote a few pages to the task of saying that, proving that he need not have meant something quite different from what they said.

(Preface to the lesson  
of October 1917  
by Trotsky  
Preface by A. Senn  
conference.)

Voice of the People: —

The Gods we know have all ruled,  
in the main, by indifference of the people; they  
have always been gods of a minority, of  
this or that fraction of the country which is  
politically conscious. And when the grand waves  
he will have his way, and all that granules to  
the world is together he will walk in triumph.

## कार्ल मार्क्स की गलतियाँ

...निश्चय ही ऐसा लगता है कि मानो ट्राट्स्की उस विचारधारा से ताल्लुक रखते हैं, जिसे जर्मन लोग 'रियल पॉलिटिक्स' कहते हैं और वे किसी भी विचारधारा से उतने ही अछूते हैं, जितने बिस्मार्क। लिहाजा, यह बड़ी बात है कि ट्राट्स्की इतने क्रांतिकारी नहीं हैं कि यह कह सकें कि मार्क्स ने कोई गलती नहीं की, बल्कि उन्हें व्याख्या के रूप में एक पृष्ठ या उससे कुछ अधिक लिखना पड़ा—यह सिद्ध करने के लिए कि पवित्र ग्रंथों का अर्थ उससे एकदम अलग होता है, जो वे कहते हैं।

ट्राट्स्की की पुस्तक 'लेसन ऑफ अक्टूबर' 1917 की प्रस्तावना

प्रस्तावना

ए. ऑसन बारेंस द्वारा लिखित

————— : \* : —————

## लोगों की आवाज

हम जिन भी सरकारों को जानते हैं, उन्होंने मुख्यतः लोगों के बीच मतभेद के कारण ही शासन किया; वे सरकारें हमेशा अल्पमत में रहीं, देश के किसी-न-किसी गुट से संबंधित, जो राजनीतिक रूप से सजग हों। लेकिन जब दैत्य (यानी जनता-सं.) जागता है, तो वह अपनी मर्जी का काम करता है और दुनिया के लिए सिर्फ इस बात का महत्व है कि वह कब जागता है?

—प्रस्तावना

"It too often happens," wrote Lenin, in July 1917, "that when events take a sudden turn, even so advanced a party cannot adapt itself for some time to the new conditions. It goes on repeating yesterday's resolutions, watchwords which, under the new circumstances, have become simply of meaning and which have lost meaning 'especially', just in proportion as the change of events has been 'unexpected'."

*Lessons of Oct. 1917*

Tactics and Strategy:

In politics as in war, tactics means the art of conducting isolated operations; strategy means the art of victory, that is the actual seizure of power.

P. 18

Propaganda and action:

This is extremely sudden change, when the party of the Proletariat ~~and~~ passes from preparation, from propaganda and organization and agitation, to an actual struggle for power and an actual insurrection against the bourgeoisie. Those in the party who are irresolute, or sceptical, or compromising, or cowardly ... oppose the insurrection, they look for theoretical arguments to justify their opposition, and any new ones have already made, among their opponents of yesterday.

*Trotsky*

लेनिन ने जुलाई 1917 में लिखा—“ऐसा अवसर आता है, घटनाक्रम अचानक कोई मोड़ लेता है, तो कोई उन्नत दल भी नई स्थितियों से स्वयं का तालमेत नहीं बैठा पाता। यह बीते दिनों के आदर्श वाक्य दोहराता रहता है, जिनके अर्थ नई परिस्थितियों में खोखले होते हैं, और जो ‘अनपेक्षित’ रूप से अपना अर्थ खो चुके होते हैं तथा जिस अनुपात में घटनाओं में ‘अप्रत्याशित’ परिवर्तन हो चुका होता है।”

—लेसंस ऑफ अक्टूबर (पृ. 17)

————— : \* : —————

## दाव-पेंच और रणनीति

राजनीति में युद्ध की तरह दाव-पेंच का अर्थ होता है—तटस्थ काररवाइयों के संचालन की कला; रणनीति का अर्थ होता है—जीत की कला, जो वास्तव में सत्ता पर कब्जा करना है। (पृ. 81)

————— : \* : —————

## प्रोपेंडा और काररवाई

यह बड़ा अचानक परिवर्तन तब होता है, जब सर्वहारा का दल तैयारी के साथ प्रचार और प्रचार अथवा संगठन और आंदोलन से सत्ता के वास्तविक संघर्ष तथा बुर्जुआ के खिलाफ वास्तविक विद्रोह की ओर बढ़ता है। दल में जो लोग दुलमुल अथवा शंकालु अथवा समझौतापरस्त अथवा कायर होते हैं, वे विद्रोह का विरोध करते हैं। वे अपने विरोध को सही ठहराने के लिए सैद्धांतिक जन दलीलें तलाशते हैं, और वे उन्हें मिल भी जाती हैं, बिल्कुल तैयार, अपने पिछले समय के विरोधियों के बीच।

—द्राद्स्की

72

*If it is necessary to direct ourselves,  
not by old formulas, but by new  
realities." Lenin (P. 25)  
He always fought for the future  
against the past - 41*

*... Don't a moment comes when  
the habit of thinking that the enemy  
is stronger becomes the main obstacle  
to victory. Trotsky 48*

*... Don't in such circumstances  
not every party will have its  
Larin.*

*What does this it mean  
to lose the moment?  
All the art of tactics consists  
in this, to catch the moment when  
the combination of circumstances is  
most favourable...  
(Circumstances had produced the  
combination and Lenin said) The  
crisis must be settled in one way  
or another. 'Never or never' reported  
Lenin.*

0. 52

“हमें स्वयं को निर्देशित करने की जरूरत है, लेकिन पुराने फॉर्मूलों से नहीं, बर्तिक नई वास्तविकताओं से।”

—लेनिन (पृ. 25)

उसने हमेशा भविष्य के लिए अंतीत से लड़ाई लड़ी।

…लेकिन ऐसा क्षण आता है, जब यह सोचने की आदत जीत में सबसे बड़ी रुकावट बन जाती है कि दुर्मन ज्यादा ताकतवर है।

—द्राद्स्की (पृ. 48)

————— : \* : —————

…लेकिन ऐसी परिस्थितियों में हर एक दल के पास उसका लेनिन नहीं होगा।

…कोई क्षण गँवाने का मतलब क्या होता है?

…दाव-पेंच की सारी कला इस बात में निहित है कि जब परिस्थितियों का जोड़ सबसे ज्यादा अनुकूल हो, तब उस क्षण को उसके साथ मिला दो—

(परिस्थितियों ने जोड़ को बनाया है और लेनिन ने कहा (संकट का समाधान किसी-न-किसी तरह करना ही होता है)। लेनिन ने दोहराया कि 'अभी या कभी नहीं'।

: \* :

73

The strength of a revolutionary party grows to a certain point, after which the contrary may happen.

"To hesitate is crime" wrote at the beginning of October, "To wait for the Congress of Soviets is a childish playing with formalities, a disgraceful playing like formalists, it is betraying the revolution."

#### Opportune moment.

Time is an important factor in politics; it is thousand times more so in war and revolution. Things can be done today that can not be done tomorrow. To rise in arms, to defeat the enemy, to seize power, may be possible to-day, and tomorrow may be impossible. But, you will say, to seize power means changing the course of history; is it possible that such a thing can depend on a delay of 24 hrs? Even so. When it comes to an armed insurrection, events are not measured by the long years of politics but by short yards of war. To do a few weeks, a few days, sometimes even one day, may mean giving up the revolution, may mean capitulation. Political cunning is always dangerous, especially in a revolution. You may deceive the enemy but you may confuse the masses who are following you.

किसी क्रांतिकारी दल की ताकत एक सीमा तक बढ़ती है, जिसके बाद इससे विपरीत हो सकता है—

(लेनिन ने) अक्तूबर की शुरुआत में लिखा कि "संकोच करना अपराध है, सोवियतों की कांग्रेस का इंतजार करना बचपन है, औचित्य के साथ बेशर्मा से खिलवाड़ करना क्रांति के साथ विश्वासघात है।"

————— : \* : —————

## उपयुक्त अवसर

राजनीति में समय एक महत्वपूर्ण कारक है; जंग और क्रांति में इसका महत्व हजारों गुना बढ़ जाता है। वे चीजें आज की जानी चाहिए, जिन्हें कल नहीं किया जा सकता। हथियार उठाना, दुश्मन को हराना, हुक्मत हासिल करना आज संभव हो सकता है, लेकिन कल शायद यह संभव न हो। लेकिन तुम कहोगे कि हुक्मत हासिल करने का मतलब इतिहास की दिशा बदलना है; क्या यह संभव है कि ऐसी कोई बात 24 घंटे बाद हो सके? फिर भी, जब हथियारबंद विद्रोह की बात आती है, तो घटनाओं को राजनीति के गज से नहीं, बल्कि युद्ध के छोटे गजों से मापा जाता है। कुछ सप्ताह, कुछ दिन, कभी-कभी एक दिन भी गँवा देने का मतलब क्रांति को छोड़ देना, समर्पण करना हो सकता है।

राजनीति धूरता हमेशा खतरनाक होती है, खासकर क्रांति में। तुम दुश्मन को धोखा दे सकते हो, लेकिन ऐसा करने से जनता भ्रमित हो सकती है, जो तुम्हारे पीछे चल रही है।

74

Hesitation: Hesitation on the part of the leaders, and felt by their followers, is generally harmful in politics; but in the case of an armed insurrection it is a deadly danger.

War: War is hell; come what may, there must be no hesitation or loss of time.

The inefficient leaders: There are two kinds of leaders who incline to drag import back at the moment when it should go forth. One kind always tends to see overwhelming difficulties and obstacles in the way of revolution, and looks at them—consciously or unconsciously—with the desire of avoiding them. They allow Marxism into a system for explaining why revolutionary action is impossible.

The other kind are mere superficial agitators. They see never any obstacles until they break their heads against them. They think they can avoid real difficulties difficulties by floods of oratory. They look at everything with supreme optimism, and naturally change right over when something has actually to be done.

(P) 88

दिल्लीक

नेताओं का द्विजकर्मा और अनुयायियों का उसे महसूस करना आमतौर पर राजनीति में नुकसानदेह होता है, लेकिन हथियारबंद विद्रोह में यह घातक रूप से खतरनाक है।

---

 : \* : 

---

४८

…“युद्ध तो युद्ध है”, जो भी हो, कोई द्विज्ञक नहीं होनी चाहिए और वक्त नहीं गँवाना चाहिए।

----- : \* : -----

अक्षम नेता

‘‘दो तरह के नेता होते हैं, जो उस वक्त अपने दल को बापस खींच लेते हैं, जब उसे तेजी से आगे बढ़ना चाहिए। एक तरह के नेता क्रांति के रास्ते में बहुत अधिक मुश्किलें और रुकावटें देखते हैं और उन्हें ही देखते रहते हैं—जान-बूझकर या अनजाने में इस इच्छा के साथ कि उसे टाला जाए। वे मार्क्सवाद को एक सिस्टम में बदल देते हैं, यह समझाने के लिए कि क्रांतिकारी कारवाई क्यों असंभव है।

दूसरी तरह के नेता सिर्फ उथले अंदोलनकारी होते हैं। वे तब तक रुकावटें नहीं देखते, जब तक उनसे टकराकर उनका सिर नहीं फूट जाए। वे समझते हैं कि भाषण की बाढ़ से वे वास्तविक कठिनाइयों से बच सकते हैं। वे हर चीज को चरम आशावाद के साथ देखते हैं, और स्वाभाविक रूप से उस वक्त रास्ता बदल लेते हैं, जब वास्तव में कछु किया जाना जरूरी होता है।

(प. 80)

\* नोट : पृष्ठ 75 से 100 तक खाली हैं।

## Sociology:-

101

Value :-

"I quarter corn =  $\times$  Corn-free. What does this equation tell us? It tells us that in two different things - in equivalents of corn and of both, the two things mixed, therefore to equal something to itself a neither the one nor the other - let us never consider the equivalents of each of those products; it consists of the sum of the labor of laborers, a mere compilation of homogeneous human expectations. All these things must have been taken into account in their production, and whatever is deducted in them, when looked at as equivalents of this social substance, comes to all they are Valuable."

Same - 'Tabibul' English Translation PD 34-5

✓ Law: - "Society, however, does not rest upon law-making, it is a legal fiction. Rather the law must rest on society. It must be in the interests of the interest" and needs of society which results from the social and irreversibly material methods of production as against the anti-socialities of the individual. As for Antimonopoly Code, which there is no law, that does not consider members. And Society, the Society which arose in the 19th Century and developed in the 19th & 20th in the USA by a legal expression. The term now no longer corresponds to social conditions, it merely is made whole paper... The laws never again changed with the changing conditions of life. The main thing of the old law against the new needs and aims of the social development is at bottom nothing but a legalistic conception (in accord with the spirit of the age) of social relations against the American interest." There, [before the Committee on Colonies]

## समाज शास्त्र—

### मूल्य

“1 क्वार्टर कॉर्न = X/ लोहे का मूल्य। यह सवाल हमें क्या बताता है? यह हमें बताता है कि दो अलग-अलग चीजों में—एक क्वार्टर कॉर्न में और X लोहे के मूल्य—कोई ऐसी चीज समान मात्रा में है, जो दोनों में साझा रूप से उपस्थित है। लिहाजा, ये दो चीजें किसी तीसरे के बराबर होनी चाहिए, जो अपने आप में न एक है न दूसरी—अब हम इनमें से प्रत्येक उत्पाद के अवशेष पर विचार करें; यह प्रत्येक में सारहीन वास्तविकता के रूप में मौजूद है, मानवीय श्रम की महज समरूप जमावट, उस श्रमशक्ति की, जो इसके खर्च के स्वरूप पर विचार किए बिना खर्च कर दी गई। ये सभी चीजें हमें बताती हैं कि मानवीय श्रमशक्ति उनके उत्पादन में खर्च हुई है, यही श्रम उनका साकार रूप है। सभी में साझा रूप से विद्यमान, इस सामाजिक सारतत्त्व को क्रिस्टल के रूप में देखा जाने पर यही मूल्य है।”

—मार्क्स, ‘कैपीटल’ अंग्रेजी अनुवाद (पृ. 3, 4, 5)

### कानून

“बहरहाल, समाज कानून पर आधारित नहीं होता। यह एक कानूनी कल्पित कथा है। इसके विपरीत, कानून समाज पर आधारित होना चाहिए। इसमें समाज की रुचि तथा आवश्यकताओं की अभिव्यक्ति होनी चाहिए, जो व्यक्तिगत निरंकुशता के बरक्स सामाजिक और आवश्यक रूप से उत्पादन की भौतिक विधि का परिणाम हो। जहाँ तक नेपोलियन कोड का सवाल है, तो मेरे मुताबिक, इसने आधुनिक सभ्य समाज को उत्पन्न नहीं किया है। जो समाज 18वीं शताब्दी में उत्पन्न और 19वीं शताब्दी में विकसित हुआ, उसे इस कोड में सिर्फ एक कानूनी अभिव्यक्ति मिलती है।

“जैसे ही वह सामाजिक स्थितियों के अनुकूल नहीं रह जाता, वैसे ही यह सिर्फ कागज की बरबादी हो जाता है—कानून जीवन की स्थितियों में बदलाव के अनुसार बदलना ही चाहिए। सामाजिक बदलाव के खिलाफ पुराने कानून को नई आवश्यकताओं तथा माँगों के अनुरूप युग की भावना के अनुसार न बदला जाना सिर्फ विशेष सामान्य हित के विरुद्ध पाखंडपूर्ण दुराग्रह है।”

—मार्क्स, जूरी ऑफ कॉलोन्ज के कोर्ट के समक्ष

✓ "Marx" —  
 "The people is a fat and mostly least ignorant of its own  
 and hence understanding continually less and smaller. Be it not by a  
 foolish child, who has got off his mark, but it is from that child  
 that the world is to be educated. It is the same person, who has  
 itself educated by that child. How unfortunate! They do not know what  
 they are doing, and somehow or other to judge and to give them advice  
 was such a blunder in itself, for nothing is to their end of the  
 that they themselves have given to the world. Everything which is human  
 and earth belongs to them, but they do not know it, and should  
 anyone tell them that, they would himself think them crazy and  
 kill him." — Tommorrow (unpublished).

102

"Marxism Versus Socialism" by Maxine  
 (1908-12) G. Schlesinger, Ph.D.  
 Columbia University.

The authorise all the Theories of Marx are wrong  
 and rejects all of them.  
 1. Theory of Value  
 2. Economic Determination of History  
 3. Concentration of wealth in fewer hands i.e.  
 No Capitalists and Elimination of Middlemen  
 and other and Protection of Poor Workers  
 4. Theory of increasing misery  
 5. Inevitable Crisis of the Modern State and social order.  
 He concludes that the Marxist theory rests on  
 these three fundamental theories and refutes  
 them one by one, concluding that all the  
 large movements along the surviving  
 areas of the world have been progressive  
 till now. The middle class is not disappearing  
 but growing. Rich class is growing in numbers  
 and the mode of production and consumption is  
 also changing along with the "Cultural Process"  
 however the reforms in the condition of the  
 workers can not be done by force.  
 He does not grow much like in the case of the  
 Socialism but the concentration of  
 the rich class in Industrial Centres make  
 the poor class consciousness is  
 growing all the time and they

### आम जनता

आम जनता एक मोटा और बेढ़ंगा भारवाही पशु है, जिसे अपनी ताकत का पता नहीं है, और इसीलिए बोझा ढो रहा है, चाबुक और डंडे खा

रहा है, एक कमज़ोर बच्चे द्वारा हाँका जा रहा है, जिसे वह एक पल में झटक सकता है। लेकिन वह बच्चे से डरता है और उसकी मनमर्जी से चलता है। उसे कभी यह महसूस नहीं होता कि वह बच्चा भी उससे कितना डरा हुआ है—आश्चर्य ! वे अपने हाथों से फाँसी पर लटक जाते हैं और खुद जेल चले जाते हैं तथा उसी बहुत सारे पैसे में से एक दमड़ी के लिए युद्ध और मौत को स्वयं पर झेल लेते हैं, जो उन्होंने स्वयं राजा को दिया था। स्वर्ग और धरती के बीच सबकुछ उनका है, लेकिन उन्हें नहीं पता, और अगर उन्हें कोई यह बात बताए, तो वे उसे लात मार देंगे और मार डालेंगे।”

—टोमासो कैंपानेल

————— : \* : —————

## मार्क्सवाद बनाम समाजवाद

(1908-12) लेखक ब्लादिमीर जी. सिखोविच पी-एच.डी. कोलंबिया विश्वविद्यालय,

वह एक के बाद एक मार्क्स के सिद्धांतों की आलोचना करता है और निम्नलिखित बातों के आधार पर उनका खंडन करता है—

1. मूल्य का सिद्धांत
2. इतिहास की आर्थिक व्याख्या
3. संपदा का कुछ हाथों में एकत्र होना अर्थात् पूँजीपतियों के हाथों में, और मध्यम वर्ग का पूरी तरह विनाश तथा सर्वहारा वर्ग का उभार
4. बढ़ता लालच
5. आधुनिक राज्य और सामाजिक व्यवस्था के लाजिमी संकट

उसका निष्कर्ष है कि मार्क्सवाद सिर्फ इन बुनियादी सिद्धांतों पर आधारित है और वह उनका एक-एक कर खंडन करता है। वह निष्कर्षतः यह मानता है कि क्रांति से अचानक आई विपत्ति के बारे में धृण्डली शंकाएँ अब तक खोखली साबित हो चुकी हैं। मध्यम वर्ग कम नहीं हो रहा, बल्कि बढ़ रहा है। संपन्न वर्ग के लोगों की संख्या बढ़ रही है, और उत्पादन तथा उपभोग के तरीके भी परिस्थितियों के साथ बदल रहे हैं। लिहाजा, मजदूरों की स्थिति में सुधार से किसी भी प्रकार के टकराव को टाला जा सकता है। सामाजिक अशांति का कारण बढ़ती गरीबी नहीं, बल्कि औद्योगिक केंद्रों में गरीब वर्गों का इकट्ठा हो जाना है। इसी कारण वर्ग चेतना बढ़ रही है। इसीलिए यह सब हाय-तौबा मची है।

102

Refugee to his' Novels.

In long as man shall exist, by virtue of having created a social domination artificially creating classes in the world of civilization, and complicating the condition which induces all a faculty which is human; so long as these problems of the age — the degradation of man through poverty, the vice of women through chivalry; the crippling of children through ignorance — are not solved; so long as in certain regions social subjugation is possible — in other words, and from a still wider point of view, so long as ignorance and superstition exist on the earth, books like this can not be useless.

With love!

If judge suffers to the pain he inflicts  
Defends) — loses the right to judge." "Robinson with Yezo."

But what unresisting martyrdom fails to do,  
resistance and resisting force did and render  
hypocritism to reformer human.  
✓ "Robins got killed" was in death  
Cry provalence amongst the India Then - Paul  
Roude was and explained, "It's not true, 'Beten  
got killed' their brained" is good enough. But it would be  
better do to think as reader to get killed no violent  
killed by him self or his forces of violence itself. And  
to conquer - conquer in the name of Righteousness.

Heidi Paul P. 1887

1887 P. 1887

## लेस मिजरेबल्स की प्रस्तावना

जब तक कानून और रिवाजों के कारण एक सामाजिक लानत-मलामत मौजूद है, जो सभ्यता के बीच बनावटी नरक पैदा करती है, और जो प्रारब्ध को जटिल बनाकर, जो मानवीय होकर भी दिव्य रूप दिए जाने से घातक हो जाता है; जब तक युग की तीन समस्याओं—गरीबी के कारण आदमी का पतन, भूख के कारण औरत की तबाही, अज्ञान के कारण बच्चों की पंगुता—का समाधान नहीं हो जाता; जब तक कुछ क्षेत्रों में सामाजिक नाड़ी रुकना (साँस रुकना) संभव है—अन्य शब्दों में, और अधिक व्यापक दृष्टिकोण से, जब तक धरती पर अज्ञान और दुष्टता मौजूद है, तब तक इस तरह की पुस्तकें बेकार नहीं हो सकतीं।

—विक्टर ह्यूगो

## जज की परिभाषा

“जज, जो दर्द के प्रति बेरहम है, वह जज के अधिकार का हनन करता है।”

—रवींद्रनाथ टैगोर

————— : \* : —————

“लेकिन बिना विरोध की शहादत जो नहीं कर पाती, वह सच्ची और विरोध करनेवाली ताकत कर जाती है और जालिम को नपुंसक बनाकर उसे और सितम करने लायक नहीं छोड़ती।”

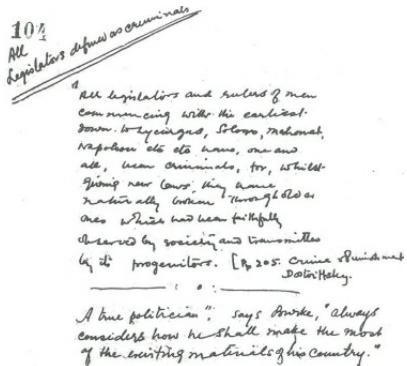
\*घुटन— भगमसिंह (पृ. 82)

————— : \* : —————

“उस वक्त हिंदुओं में यह आवाज थी कि धर्म बदलने के बजाय मर जाओ। लेकिन रामदास ने उठ खड़े होकर घोषणा की, “नहीं, ऐसा नहीं हो ! धर्म बदलने से बेहतर है, मारे जाओ। यह पर्याप्त रूप से अच्छा है; लेकिन इस बात के लिए संघर्ष करना बेहतर है कि न मारे जाओ, न आवेग में धर्म बदलो, बल्कि हिंसा की ताकतों को ही मार डालो। ऐसा करते हुए विजेता को मारते हुए मरना पड़े तो मर जाओ—धर्म की खातिर।”

—हिंदू पादशाही

\* नोट : विक्टर ह्यूगो 1802-1855 : फ्रांसीसी कवि, नाटककार, उपन्यासकार और रोमांसकाद के एक प्रवर्तक। लेस मिजरेनल्स उनका 1862 में लिखा एक क्लासिक उपन्यास है।



A true politician", says Burke, "always considers how he shall make the most of the existing maladies of his country."

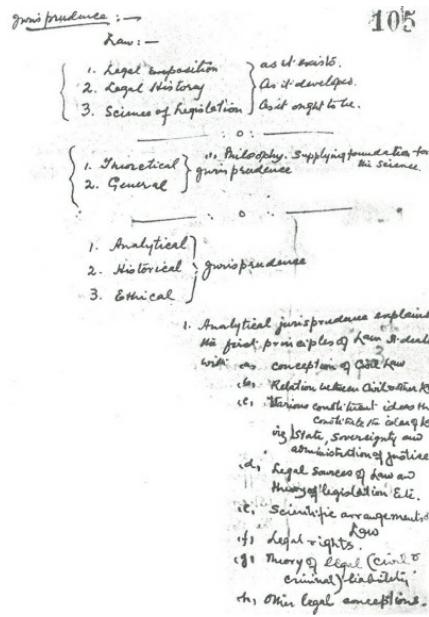
## सभी लेजिस्लेटर अपराधियों के रूप में परिभाषित

“शुरू से लेकर लिक्युरग्स, सोलोन महोमेट, नेपोलियन आदि तक सभी लेजिस्लेटर और शासक अपराधी रहे हैं, क्योंकि नए कानून देते समय पुराने कानूनों को तोड़ा, जिनका समाज ने निष्ठा से पालन किया और अपनी संतानों को इसका दायित्व सौंप गए।”

(पृ. 205, क्राइम एंड पनिशमेंट)

—दोस्तोवस्ती

बर्क ने कहा, “एक सच्चा राजनीतिज्ञ हमेशा यह मानता है कि वह अपने देश की वर्तमान सामग्री का सर्वश्रेष्ठ उपयोग करेगा।”



## न्याय शास्त्र

### कानून

1. कानूनी व्याख्या—जैसी मौजूद है
2. कानून का इतिहास—जैसा बनाया गया
3. कानून का विज्ञान—जैसा होना चाहिए

————— : \* : —————

1. सैद्धांतिक (i) दर्शन। विज्ञान के लिए आधार देने वाला न्याय शास्त्र
2. सामान्य (i) दर्शन। विज्ञान के लिए आधार देने वाला न्याय शास्त्र

————— : \* : —————

1. विश्लेषणात्मक न्याय शास्त्र
2. ऐतिहासिक न्याय शास्त्र
3. नैतिक न्याय शास्त्र

1. विश्लेषणात्मक न्याय कानून के प्रथम सिद्धांत की व्याख्या करता है। यह निम्नलिखित विषयों पर चर्चा करता है—
  - (ए) सिविल कानून की अवधारणा
  - (बी) सिविल और अन्य कानूनों के बीच संबंध
  - (सी) कानून के विचार का निर्माण करनेवाले अनेक घटक विचार, अर्थात् राज्य की संप्रभुता और न्याय प्रशासन
  - (डी) कानून के विधिक स्रोत, और कानून का सिद्धांत आदि
  - (ई) कानून की वैज्ञानिक व्यवस्था
  - (एफ) कानूनी अधिकार
  - (जी) कानूनी (सिविल और क्रिमिनल) दायित्व का सिद्धांत
  - (एच) अन्य कानूनी अवधारणाएँ

106

2. Historical Jurisprudence deals with—  
General principles governing the origin and development of law; legal conceptions  
It is the history.

3. Ethical Jurisprudence— is concerned  
with the theory of justice in its relation  
to law.

Law & Justice—  
The total disregard of the ethical  
implications of the law tends to  
reduce analytical jurisprudence  
to system rather than formulation  
Two different words 'law' and  
'justice' are contrasted reminder  
that there are two different things  
and not the same thing. And  
there was tends to hide from view  
the real and ultimate relationship  
exists between them.

Law in England  
[Right & Duty]—  
Justice are contrasted reminder  
that there are two different things  
and not the same thing. And  
there was tends to hide from view  
the real and ultimate relationship  
exists between them.

Continent  
[Law & Justice]—  
Contrast of speech conceals the  
difference between law and right  
express English speech conceals  
the connection between them.

\* नोट : ऐसा प्रतीत होता है कि भगतसिंह ने विभिन्न न्यायशास्त्र संबंधी व्यापक अध्ययन की रूपरेखा बनाई थी, जो नोटबुक के अगले कई पृष्ठों तक जारी है।

(2) ऐतिहासिक न्यायशास्त्र में कानून की उत्पत्ति और विकास को शासित करनेवाले सामान्य सिद्धांतों; कानूनी अवधारणाओं की चर्चा होती है। यह इतिहास है।

(3) नैतिक न्यायशास्त्र न्याय के साथ कानून के संबंध का अध्ययन है।

### कानून और न्याय

कानून और नैतिक न्यायशास्त्रीय निहितार्थों की पूर्ण आलोचना विश्लेषणात्मक विभिन्न न्यायशास्त्र की एक बेजान प्रणाली में तबदील कर सकती है।

## इंग्लैंड में

दो विभिन्न शब्द 'कानून' और 'न्याय' लगातार याद दिलाते हैं कि ये दोनों अलग-अलग चीजें हैं, एक ही नहीं। उनका उपयोग करते समय दोनों के बीच वास्तविक और घनिष्ठ संबंध को नहीं देखा जाता।

## और महाद्वीप में

(रीचेट : अधिकार = ड्रॉइट : कानून)

महाद्वीपीय भाषा में 'कानून' और 'अधिकार' के बीच भेद छुप जाता है, जबकि अंग्रेजी भाषा में उनके बीच संबंध को छुपाया जाता है।

107

Law:—  
"No law, any kind of rule or canon whereby  
actions are framed, a law." [Dover]  
Law in its most general sense signifies a rule  
of action, and is indiscriminately applied to  
action whether rational or irrational,  
animal or inanimate. Thus we say,  
the Law of motion, of gravitation, of optics  
of nature and of nations. {Blackstone}

Kinds of Laws:—

1. Imperative Law
2. Physical Law or Scientific Law
3. Natural or Moral Law
4. Conventional Law
5. Customary Law
6. Practical or Technical Law
7. International Law
8. Civil Law or the Law of the State.

## कानून

“हम उस किसी भी किस्म के नियम या सिद्धांत को कानून नाम दे देते हैं, जिसके द्वारा कार्यों को कानून का रूप दिया जाता है।”

—हूकर

“कानून अपने सर्वाधिक सामान्य अर्थ में कार्य के नियम का द्योतक है, और सभी तरह के कार्यों में भेदभाव नहीं करता, चाहे संगत हो या असंगत, जड़ हो या चेतन।”

इस तरह हम कहते हैं, गति के सिद्धांत, गुरुत्वाकर्षण के सिद्धांत, प्रकाश के सिद्धांत, प्रकृति के सिद्धांत और राष्ट्रों के सिद्धांत।

—ब्लेकस्टोन

## कानूनों के प्रकार

- (1) अनिवार्य कानून
- (2) भौतिक कानून अथवा वैज्ञानिक कानून
- (3) प्राकृतिक अथवा नैतिक कानून
- (4) पारंपरिक कानून
- (5) प्रथागत कानून
- (6) व्यावहारिक अथवा तकनीकी कानून
- (7) अंतरराष्ट्रीय कानून
- (8) सिविल कानून अथवा राज्य का कानून

108

1. Imperative Law means a rule of action imposed upon man by some authority which enforces obedience to it.



'A law is a command which obliges a person or persons in course of action conduct. {Austin}

Positive morality in society also amounts to the Imperative laws. It is man and arms that make the force and power of the laws. (Hobbes).

2. Physical Law is an expression of actions as they are. (moral law or the law of reason, is an expression of actions as they ought to be)

3. Natural or Moral Law means the principles of natural right and wrong — the principles of natural justice including all rightful actions.

Justice being of two kinds.

i) Positive and Natural.

ii) Natural justice is justice as it is indeed and in truth.

Positive justice is justice as it is conceived, recognized and expressed.

1. अनिवार्य कानून का अर्थ है, कार्य का वह नियम, जो लोगों पर किसी ऐसे अद्वितीय दबावारा लागू किया जाता है, जो इसका पालन करने को मजबूर करता है। “कानून एक ऐसा आदेश है, जो किसी व्यक्ति अथवा व्यक्तियों को एक विशेष प्रकार के आचरण के लिए मजबूर करता है।”

अनिवार्य कानून का अनुमोदन : सजा, युद्ध आदि समाज में सकारात्मक नैतिकता भी अनिवार्य कानून है।

—ऑस्टिन

{हॉक्स के विचार : मानव और हथियार कानून की ताकत और बल का निर्माण करते हैं।

2. भौतिक कानून : कार्यों की उसी स्वरूप में अभिव्यक्ति है। (नैतिक कानून अथवा तर्क का कानून ऐसे कार्यों की अभिव्यक्ति है, जो होना चाहिए।)

3. प्राकृतिक अथवा नैतिक कानून का अर्थ है सही और गलत के प्राकृतिक सिद्धांत—नैसर्गिक न्याय के सिद्धांत, जिनमें सही न्यायपूर्ण कार्य शामिल हैं। न्याय दो तरह का होता है—सकारात्मक और नैसर्गिक

नैसर्गिक न्याय वह है, जो वास्तव में है और सत्य है।

सकारात्मक न्याय : ऐसा न्याय है, जिसकी अवधारणा की गई है, जिसे मान्य तथा अभिव्यक्त किया गया है।

## 109

4. Conventional Law :— is any rule or system of rules agreed upon by persons for the regulation of their conduct. Agreement is a law for the parties to it.
5. Customary Law :— is any rule of action which is actually observed by men—any rule which is the expression of some actual uniformity of voluntary action. Custom is law for those who observe it.
6. Practical or Technical Law :— consists of rules for the attainment of some practical end, e.g., games. There are two kinds of laws, i.e., practical laws, i.e., formal, having the rules agreed upon by players, the latter being the rules to make the play a success or for the successful playing of the game.
7. International Law :— consists of those rules which govern sovereign states in their relations and conduct towards each other.  
1. Express laws, [Treaties etc.]  
2. Implied laws, [Customary, Again divisible into two kinds—  
1. Common laws (between all nations)  
2. Particular laws (between two or more particular nations)]
8. Civil Law :— 1. Law of the State of law land, is applied to Civil of Justice.

4. पारंपरिक कानून : कोई भी ऐसे नियम अथवा नियमों की व्यवस्था है, जिस पर लोग अपने आचरण के विनियमन के लिए सहमत हों। अनुबंध संबंधित पक्षों के लिए एक कानून है।
5. प्रथागत कानून ऐसा कार्य का नियम है, जिसका वास्तव में लोगों द्वारा पालन किया जाता है—कोई नियम, जो स्वैच्छिक कार्य की किसी वास्तविक समानता को अभिव्यक्त करता है।
6. व्यावहारिक अथवा तकनीकी कानून में किसी व्यावहारिक लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए नियम होते हैं। खेलों में ये दोनों होते हैं—‘पारंपरिक कानून’ और ‘व्यावहारिक कानून’। पहले वाले कानून पर खिलाड़ियों की सहमति होती है, जबकि दूसरे वाले कानून में ऐसे नियम होते हैं, जो खेल को सफल बनाने अथवा खेल को सफलतापूर्वक खेले जाने के लिए होते हैं।
7. अंतरराष्ट्रीय कानून में वे नियम होते हैं, जो संप्रभुता संपन्न राज्यों के अन्य राज्यों के साथ संबंधों तथा आचरण को शासित करते हैं।
- (1) एक्सप्रेस कानून (संधियाँ आदि)
  - (2) संकेतिक कानून (प्रथागत)
  - (3) साझा कानून (सभी देशों के बीच)
  - (4) विशिष्ट कानून (दो अथवा अधिक विशिष्ट राष्ट्रों के बीच)
8. सिविल कानून : राज्य अथवा देश का कानून—जो न्याय की अदालतों में लागू होता है।

## दंड

### राजनीति अपराध

“हम बड़ी संख्या में उन लेजिस्लेटर्स के इस विचार से सहमत हैं कि आमतौर पर कोई व्यक्ति, जो किसी ऐसी राजनीतिक साजिश का हिस्सा रहा हो, जिसे अंजाम न दिया गया हो, उसे कठोर दंड नहीं दिया जाना चाहिए। फिर भी, राज्य के विरुद्ध होनेवाले बड़े अपराधों के मामले में इस नियम का अपवाद होना चाहिए: क्योंकि राज्य के विरुद्ध अपराध, विशेषकर अत्यंत जघन्य और भयंकर अपराध इस प्रकार के होते हैं कि यदि उन्हें सफलतापूर्वक अंजाम दे दिया जाए, तो अपराधी हमेशा दंड से बच जाता है। कातिल उसके शिकार की मौत के बाद पहले से ज्यादा खतरे में हो जाता है। चौर उसके शिकार की मौत के बाद पहले से ज्यादा खतरे में आ जाता है। चौर पर्स लिये जाने के बाद पहले से ज्यादा खतरे में आ जाता है, लेकिन राजद्रोही जब सरकार का तख्ता पलट देता है तो वह खतरे से बाहर हो जाता है। चूँकि दंड देने वाला कानून कामयाब बागी के विरुद्ध नपुंसक होता है, लिहाजा यह बहुत जरूरी है कि इसे बगावत के शुरू होते ही अधिक कठोर और तीखा बना दिया जाए।”

—II एल.सी.सी. जजमेट, 1906

(पृ. 120)

111	
<i>Punishment:</i>	Within <u>Mercy's</u> dreams that he has cut <u>Burgundy's</u> throat, the Tyrael put him to death, arguing that he would have never dreamt of such a thing by night, had he not thought of it by day.
<i>Capital punishment and Brace's Law:</i>	The Law of Brace offered the penalty of death to almost all offences alike, surely murder, for instance, as well as, to cannibalism and robbery, and the only qualification Brace is said to have given of that is, that minor offences deserve that penalty, and he could find no greater for more serious.
<i>Punishment is thought by many philosophers to be a necessary evil:</i>	
<i>State and man:</i>	The State is not really an end in itself and man is not here for the sake of Law or the State but that those rather exist for <u>Honest men</u> .

## मृत्युदंड का सपना

जब मार्सियस ने सपना देखा कि उसने डायोनिसिस का गला काट दिया, तो जालिम शासक ने उसे मौत के घाट उतार दिया, यह दलील देते हुए कि यदि उसने दिन में यह सोचा न होता, तो वह कभी रात में यह सपना देख ही नहीं सकता था।

----- : \* : -----

## मृत्युदंड और डेको का कानून

डेको के कानूनों ने प्रायः सभी अपराधों के लिए मृत्युदंड निर्धारित किया था, छोटी-मोटी चोरी के लिए भी, धर्मस्थान को अपवित्र करने और हत्या के लिए भी। कहते हैं कि डेको ने इसकी एकमात्र सफाई यह दी थी कि छोटे अपराधों के लिए यह सजा मिलनी चाहिए और बड़े जुर्माँ के लिए इससे बड़ी सजा वह सोच नहीं सकता।

----- : \* : -----

दंड को अनेक दार्शनिक एक आवश्यक बुराई समझते हैं।

----- : \* : -----

## राज्य और आदमी

राज्य अपने आप में कोई लक्ष्य नहीं है और आदमी कानून अथवा राज्य के लिए नहीं, बल्कि ये दोनों आदमी के लिए

112

justice :— The maintenance of right within a political community by means of the physical force of the State.  
It has replaced the personal vengeance, when men avenged their own wrongs by themselves or with the help of their kinsmen. In those days the principle of 'right is right' worked.

Civil & Criminal Justice } Civil justice enforces rights  
                                  } Criminal justice punishes wrongs  
A man claims a debt that is due to him, or the restoration of property wrongfully detained from him. This is Civil.  
In a criminal case the defendant is accused of a wrong. Court visits the accused with a penalty for the duty already disregarded and for a right already violated as where he is hanged for murder and imprisoned for theft.

## न्याय

किसी राजनीतिक समुदाय के भीतर राज्य की भौतिक ताकत के माध्यम से अधिकार को कायम रखना।

जब मनुष्यों ने अपने पर किए गए अन्यायों का स्वयं अथवा अपने परिजनों के साथ मिलकर बदला लिया, तब इसने व्यक्तिगत प्रतिशोध की जगह ले ली। उन दिनों 'जिसकी लाठी उसकी भेंस' का सिद्धांत चलता था।

## सिविल और आपराधिक न्याय

सिविल न्याय अधिकारों को लागू करता है। आपराधिक न्याय गलत कामों पर दंड देता है।

कोई व्यक्ति उसके द्वारा दिए गए कर्ज अथवा उससे गलत तरीके से छीनी गई संपत्ति को वापस लेने के लिए दावा करता है। यह सिविल है।

आपराधिक मामले में प्रतिवादी पर कुछ गलत करने का आरोप होता है। अदालत आरोपी को उसके कर्तव्य का पालन न करने तथा किसी अधिकार के हनन के लिए सजा देती है। उसे हत्या के लिए फाँसी और चोरी के लिए कैद की सजा दी जाती है।

112

Both in Civil and Criminal law proceedings, here  
is a wrong complained of.  
In Civil, it amounts to a claim of right;  
In Criminal it amounts merely to an accusation of wrong.  
Civil Justice is concerned primarily with the plaintiff  
and his rights; Criminal with defendant and his offence.

The Purposes of Criminal Justice

Punishment:

1. Deterrent:— Chief end of the law is now  
the威慑 an example and a warning  
all that are like-minded with him.  
It makes every offender aware again  
to the offender. (Curing motive)
2. Punitive:— In its second place, it is punishing  
or punishing. Its general purpose is to prevent a  
replication of wrongdoing by the attachment of  
the offender. We hang murderer, not merely  
that it may deter others, but for the time.  
Capital punishment  
gentle form of  
punishment of  
offender
3. Reformatory:— Offences are committed  
the influence of motives upon characters,  
and may be prevented either by a change  
of motives or by a change of character.  
Deterrent punishment acts in the former way,  
while Reformatory deals with the latter.

सिविल और मूल प्रक्रियाओं, दोनों में किसी गलत काम की शिकायत होती है। सिविल में किसी अधिकार का दावा होता है। आपराधिक में यह प्रायः गलत का आरोप होता है। सिविल न्याय प्राथमिक दृष्टि से बादी और उसके अधिकारों से संबंधित है। आपराधिक का संबंध प्रतिवादी और उसके अपराध से है।

————— : \* : —————

## आपराधिक न्याय के उद्देश्य

1. दंड : कानून का मुख्य उद्देश्य गलत काम करनेवाले को एक मिसाल बनाकर उसके समान सोचने वालों के लिए चेतावनी देना है। इससे प्रत्येक “अपराधी को अपराध करना कठिन हो जाता है।”
2. अभिप्राय (motive) बदलकर
3. रोकथाम : इसका दूसरा उद्देश्य अपराध की रोकथाम करना अथवा अपराध करने के अयोग्य बनाना है। इसका विशेष उद्देश्य अपराधी को अपराध करने के अयोग्य बनाकर अपराध की पुनरावृत्ति को रोकना है।

## मृत्युदंड का औचित्य

हम हत्यारे को सिर्फ इसलिए फाँसी नहीं देते कि इससे दूसरों को हत्या करने से रोका जा सकता है, बल्कि उसी कारण से देते हैं, जिस कारण से हम साँप को मारते हैं, यानी हमारे लिए यह बेहतर है कि वह दुनिया में रहने के बजाय दुनिया से बाहर रहे।

3. सुधारात्मक : अपराध चरित्र पर अभिप्राय के असर के कारण होते हैं, और अभिप्राय बदलकर अथवा चरित्र बदलकर उन्हें रोका जा सकता है। अवरोधक दंड पहली घटना में काम करता है, जबकि सुधारात्मक दंड दूसरे में।

114

*Advocates of 'Reformatory theory' admit only 'moral forms of penalty' as befitting to the education and discipline of the criminal, and reject all those which, profitable only, are degrading or brutalizing. Death is in their view no fitting penalty; we must cure our criminals not kill them! Flogging and other corporal punishments are condemned as species of barbarism. Such penalties are conceived by them to be degrading and brutalizing both to those who suffer and to those who inflict them.*

*Efficient but Result of severe punishment.* *The more coercive action of the State, the more successful it is in restraining all normal human beings from the dangerous paths, and the higher becomes the proportion of degeneracy among those who break the law.*

*4. Retributive Punishment:* *To gratify the instinct of revenge or retaliation, which exists, not merely in the individual wronged, but also by way of sympathetic extension in the society at large.*

*According to this view, it is right and proper, that evil should be returned for evil. An eye for an eye and a tooth for a tooth is deemed plain and self-sufficient rule of natural justice. Punishment becomes an end in itself.*

*Very much terrible theory!* *People thinking in these terms are really madmen.* *the best form of punishment is the infliction of pain.*

‘सुधारात्मक सिद्धांत’ के समर्थक दंड के सिर्फ उन स्वरूपों को स्वीकार करते हैं, जो अपराधी को शिक्षा दें और अनुशासित करें, और उन सभी दंडों को अस्वीकृत करते हैं, जो निवारक तथा अपराधी को अपराध के अयोग्य बनाने वाले (हों)। उनकी नजर में मृत्युदंड उचित नहीं है। कोड़े मारने तथा अन्य शारीरिक दंड देने को बर्बरता की निशानी मानकर उनकी आलोचना की जाती है। उनके द्वारा ऐसे दंडों को दंड पाने वाले तथा दंड देने वाले, दोनों के लिए तथा क्रूरतापूर्ण माना जाता है।\*

राज्य की बलपूर्वक काररवाई जितनी अधिक सक्षम होगी, वह सामान्य लोगों को खतरनाक रास्ते पर जाने से रोकने में उतनी ही सफल होगी, और कानून तोड़ने वालों के लिए वह उसी अनुपात में पतनकारी होगी।

4. प्रतिकारात्मक दंड : इससे बदले अथवा प्रतिशोध की प्रवृत्ति की तुष्टि होती है, जो न सिर्फ उस व्यक्ति में होती है, जिसके साथ गलत

हुआ हो, बल्कि व्यापक समाज में यह सहानुभूतिपूर्ण विस्तार के रूप में भी होती है। इस दृष्टिकोण के अनुसार, यह सही और उचित है कि बुरे के बदले बुरा किया जाए। आँख के बदले आँख फोड़ी जाए और दाँत के बदले दाँत। इसे ही नैसर्गिक न्याय का आत्मनिर्भर पर्याप्त सीधा नियम माना जाता है। दंड स्वयं एक बुराई बन जाता है।

Punishment as evil:— Punishment is itself an evil, and can be justified only as the means of attaining a greater good.

Point the — Suffering plus Justice theory argue  
their theory:— "Crime plus punishment is  
 Equal to innocence."  
 "The wrong whereby he has transgressed  
 the law of right, has incurred a debt. Justice  
 requires that the debt be paid." The final  
 object of punishment is to satisfy the wrong  
 Law."

Peive forte due was death with torture ... judgment  
 for which we delivered as follows:—

"That you be taken back to the prison whence you came,  
 To a long dungeon side where no light can enter; there  
 You be laid on your back on the bare floor, with  
 & both hands bound behind your loins, and elsewhere naked;  
 That there be set upon your body a weight of iron  
 to grieve you, can bear, and greater; that you  
 have not salt free water, on the first day, the  
 morsels of the coarsest bread; on the second  
 day, three draughts of stagnant water from  
 the foul reservoir by the prison door; on the third  
 day again three morsels of bread in water  
 and such bread and such water alternately  
 from day to day until you die."

This punishment was inflicted on people  
 of whom the law allows to all sorts  
 of persons not exceeding.

## दंड : एक बुराई

दंड अपने आप में एक बुराई है, और उसे किसी बड़े भलाई के काम के साधन के रूप में ही उचित ठहराया जा सकता है।

लेकिन प्रतिकारात्मक सिद्धांत के समर्थक दलील देते हैं कि “अपराध और दंड मिलकर निर्दोषता बन जाते हैं।”\*\*

\* कठोर दंड का परिणाम: अपराधियों का खतरनाक और गुस्सैल वर्ग उत्पन्न हो जाता है।

\*\* सबसे भयानक सिद्धांत! इस तरह से सोचने वाले लोग वास्तव में प्राचीन और सध्यता-पूर्व की बर्बर प्रवृत्तियों को कायम रखते हैं।

## भगतसिंह की टिप्पणी

“उस अपराध से जिसमें किसी ने सच्चे व्यक्ति के अधिकार का हनन किया है, उसका कर्ज उस पर हो गया। न्याय की माँग है कि यह कर्ज चुकाया जाए—दंड का पहला उद्देश्य तोड़े गए कानून को संतुष्ट किया जाए।

————— : \* : —————

Peive forte due तड़पाकर दी जानेवाली मौत थी, उसके लिए निम्नलिखित निर्णय दिया गया—

“यह कि तुम्हें उसी जेल में वापस ले जाया जाएगा, जहाँ से तुम आए हो, एक लंबी काल कोठरी में, जिसमें रोशनी नहीं जा सकती। इसके बाद तुम्हे नंगे फर्श पर पीठ के बल लिटाया जाएगा, तुम्हारी कमर में एक कपड़ा बाँध दिया जाएगा, बाकी सारा शरीर नंगा होगा। इसके बाद तुम्हारे शरीर पर लोहे का डतना बजन रखा जाएगा, जितना तुम सहन कर सकते हो, और उससे भी ज्यादा, उस दिन तुम्हारी बरदाशत की ताकत खत्म हो जाएगी, पहले दिन तुम्हें सबसे मोटे अनाज की रोटी के कौर दिए जाएँगे। दूसरे दिन जेल के दरवाजे के सबसे पास स्थित पोखर के ठहरे हुए पानी की तीन बूँदें दी जाएँगी। तीसरे दिन, पहले की तरह फिर रोटी के तीन कौर दिए जाएँगे, और यह रोटी और पानी तुम्हें मरने तक बारी-बारी से दी जाएँगी।”\*

Foreign Subjection:-

Subjection to foreign yoke is one  
of the most potent causes of the decay  
of nations. — Prof. E. A. Ross.

*Domination of a democratic nation by a foreign nation* } No rule over a foreign people is so  
restricting and so merciless in its operation  
as that of a democracy. Lataji

Marriage  
Dr. Tagore holds that the  
marriage system all over the  
world — and not only in India —  
from the earliest ages till now,  
is a barrier in the way of  
the true union of man and  
woman, which is possible only  
when society shall be  
able to offer a large field for  
the creative work of woman's  
special faculty, without checked  
the creative work in his  
own.

\* यह सजा असाधारण अपराध के लिए नहीं, बल्कि सभी तरह के अपराधों के लिए स्त्रियों और पुरुषों, दोनों को समान रूप से दी जाती थी। — भगतसिंह

## विदेशी गुलामी

विदेशी गुलामी राष्ट्रों की तबाही के सबसे बड़े कारणों में एक है।

— प्रो. ए.ई. रोस

जनतंत्र का प्रभुत्व और विदेशी राष्ट्र एक विदेशी जनता के ऊपर एक जनतंत्र की कार्रवाइयाँ जितनी निरंकुश और निर्मम होती हैं, उतनी और किसी भी शासन की नहीं होतीं।

— लालाजी

## शादी

डॉ. टैगोर का मानना है कि पूरी दुनिया में शादी की व्यवस्थाएँ — सिर्फ भारत में नहीं — प्रारंभिक काल से अब तक स्त्री और पुरुष के वास्तविक मिलन में एक बाधा हैं। यह मिलन तभी संभव है, जब समाज स्त्रियों की विशेष प्रतिभा को रचनात्मक कार्य करने के लिए बड़ा क्षेत्र प्रदान करे, घर में सृजनात्मक काम से उनका ध्यान हटाए बिना।

————— : \* : —————

Orison & New  
 The Spartan Pheredes presented himself for admission to the council of the Three Hundred and was rejected; he went away repining and there were 200 Spartans better than himself. I suppose he was in earnest; there is no reason to doubt it.

That was a silly boy.  
 A Spartan mother had five sons with the army. A Herobt arrived, trembling. She asked his news.  
 "Ten give ours are slain." "Old slave, was that what I asked thee?" "We have won the victory," she answered.  
 "A fine thing to render thanks to the gods!"  
 That was a silly woman.

Emile' 1968

Life & Education:—  
 People think only of preserving their child's life; this is not enough, he must be taught to procure his own life when he is a man. & has no wife or fortune, a brave wealth more properly, to him at least among the sons of Iseland or on the marching roads of Italy. In vain you guard against death; he must needs die; and even if you do not kill him with your present tools, they are not better suited him to live rather than to avoid death; life is not breath, but action, the use of your senses, our mind, our faculties, every part of ourselves which makes us conscious of being. Life consists less in length of days than in keen sense of living. I may be buried at a hundred and never have lived at all. He would have died better had he died young.

Emile' 1968

\* नोट : लाला लाजपत राय (1865-1928) : लाहौर में साइमन कमीशन का विरोध करने पर ब्रिटिश पुलिस ने बर्बर लाठीचार्ज किया, और इसी में लगी सांघातिक चोट के फलस्वरूप बाद में लालाजी की मृत्यु हो गई। उनकी मौत और पंजाब के अपमान का बदला लेने के लिए भगतसिंह और उनके क्रांतिकारी सास्थियों ने ब्रिटिश पुलिस अफसर सांडर्स की गोली मारकर हत्या कर दी।

## नागरिक और मानव

स्पार्टन, पेड़ेरेट्स काउंसिल ऑफ दि श्री हंड्रेड में प्रवेश के लिए गए, लेकिन उन्हें खारिज कर दिया गया; वह खुशी मनाते हुए लौटे कि 300 स्पार्टन उनसे बेहतर हैं। मैं मानता हूँ कि वह सही थे, इसमें शक की कोई गुंजाइश नहीं है।

यह था नागरिक।

एक स्पार्टन माँ के पाँच बेटे फौज में थे। एक हेलॉट आया। माँ ने काँपते हुए उससे समाचार पूछा, “तुम्हारे पाँचों पुत्र मारे गए।”

“तुच्छ दास, क्या मैंने तुमसे यह पूछा था?”

“हमने विजय हासिल कर ली है।” वह देवताओं को धन्यवाद देने के लिए दौड़ी-दौड़ी मंदिर चली गई। वह एक सच्ची नागरिक थी।

—एमिली (पृ. 8)

————— : \* : —————

## जीवन और शिक्षा

लोग सिर्फ बच्चे के जीवन की सुरक्षा की बात सोचते हैं; यह काफी नहीं है। उसे इस तरह शिक्षित किया जाए कि बड़ा होकर वह स्वयं के जीवन की रक्षा कर सके। संपत्ति तथा गरीबी में धैर्य के साथ जी सके। आइसलैंड में बर्फ के बीच अथवा माल्टा की झुलसा देने वाली चट्टानों पर जरूरत पड़ने पर यों निकल सके। तुम मौत के विरुद्ध बेकार सुरक्षा जुटा रहे हो, उसे मरना ही होगा। और अगर तुम उसे अपनी सावधानियों से न भी मारो, तो फिर वह अपनी गलतियों से मर जाएगा। उसे मौत से बचने की बजाय मरना सिखाओ। जीवन साँस नहीं, बल्कि कर्म है। हमारी इंद्रियों, हमारे दिमाग, हमारी क्षमताओं, हमारे प्रत्येक अंग का उपयोग हमारे अस्तित्व को चैतन्य बनाता है। जीवन का महत्त्व इसमें नहीं है कि यह कितने दिन का है, बल्कि इसमें है कि हमने उसे कितनी जिंदादिली से जिया। किसी व्यक्ति को भले ही सौ साल की उम्र में दफनाया गया हो, लेकिन हो सकता है कि उसने जिंदगी कभी जी ही नहीं हो। वह अगर जवानी में मर जाता तो ज्यादा बेहतर होता।

—एमिली (पृ. 10).

118

*Sophie.— Truth however does not lead to fortune, and the people confer neither embassies, nor friendships, nor pensions.*  
—Rousseau in S.C.

*Crime and Criminals }  
With ready-made opinions one cannot judge of crime. Its philosophy is a little more complicated than people think. It is acknowledged that neither confinement, nor the hulks, nor any system of hard labour ever cured a criminal. These forms of chastisement only punish him and revenge society against his offences he might commit. Confinement, regulation, and exacting work have no effect but to develop with these some profound hatred, a mind for forbidding enjoyment and frightful retributions. On the other hand I am convinced that the celebrated cellular system gives results which are specious and deceitful. It deprives a criminal of his force, of his energy, weakens his soul by overeating, and frightening it, at least exhibits a dried up man as a model of repentence and amendment."*  
The House of the Lord pp 7  
now Dated 1868

## सत्य

बहरहाल, सत्य से दौलत नहीं मिलती, और लोग दूतावास या प्रोफेसरशिप या पेंशन भी नहीं देते।

—रौसियो एस.सी.  
रूसी, 122

————— : \* : —————

## अपराध और अपराधी

“…तैयार मान्यता से कोई अपराध के तथ्यों का आकलन नहीं कर सकता। इसका दर्शन, लोग जितना सोचते हैं, उससे ज्यादा जटिल है। यह स्वीकार किया जाता है कि न तो सजायापता, न कठोर परिश्रम की किसी व्यवस्था ने कभी किसी अपराधी को सुधारा है। इनसे उसे सिर्फ सजा मिलती है और समाज आश्वस्त होता है कि वह फिर से अपराध नहीं करेगा। बंदीकरण, नियत्रण तथा अधिक काम का कोई असर नहीं पड़ता। सिर्फ इन लोगों के मन गहरी नफरत से भर जाते हैं। उनके मन में निषिद्ध काम करने की इच्छा बढ़ जाती है और भयानक अक्खड़पन पैदा होता है। दूसरी ओर, मुझे भरोसा है कि प्रसिद्ध काल-कोठरी के जो परिणाम मिलते हैं, वे झूठे और फरेबी होते हैं। इससे अपराधी की ताकत और ऊर्जा खत्म हो जाती है। उसकी आत्मा कमज़ोर और भयभीत हो जाती है। अंततः उसकी स्मृति सूख जाती है और वह पश्चात्ताप और सुधार की मिसाल दिखाई देता है।

—दि हाउस ऑफ दि डेड  
फेडोर दोस्तोवस्की (पृ. 17)

119

*Dear vs  
Continent!*

A concession living whose powers were equal  
to his desires would be perfectly happy.  
... The mere limitation of our desires is  
not enough, for if they were less than our powers,  
part of our faculties would be idle, and we  
should not enjoy our whole being; neither  
is the mere extinction of our powers enough, for if our  
desires were also increased, we should not only  
be the more miserable. True happiness consists  
in decreasing the difference between our desires  
and our powers.

W. Smiley

नोट : फ्योदोर सिखाइलोविच दोस्तोवस्की (1821-1881) का उपन्यास 'द हाउस ऑफ डेड', जो स्वयं उनके कारावास के अनुभवों के आधार पर 1861 में लिखा गया।

## कामना बनाम संतोष

कोई चेतन प्राणी, जिसकी शक्ति उसकी इच्छाओं के बराबर होगी, वह पूरी तरह प्रसन्न होगा।...सिर्फ हमारी कामनाओं की सीमाएँ पर्याप्त नहीं हैं, क्योंकि अगर वे हमारी शक्ति से कम हुईं, तो हमारी क्षमता का एक भाग बेकार हो जाएगा, और हम जीवन का पूरा आनंद नहीं ले पाएँगे। सिर्फ हमारी शक्ति का विस्तार भी पर्याप्त नहीं है, क्योंकि यदि हमारी कामनाएँ भी बढ़ जाएँ, तो हम और अधिक दयनीय ही बनेंगे। सच्ची प्रसन्नता हमारी कामनाओं तथा शक्तियों के बीच अंतर को कम करने में निहित है।

—एमाइल

120

Bourgeois revolution is germinated by the circumstances already existing in the predecessor regime.

"The bourgeois revolution usually ends with the seizure of power. For the proletarian revolution, the seizure of power is only a hasty beginning; power, when seized, is used as cover for the transformation of the old economy and for the organization of a new one." P.20.

"There still remain two gigantic and extremely difficult tasks — (one after the overthrow of the existing regime in one country — say Russia).

First of all comes the internal organization.  
The second crucial problem is that of the world revolution: "the need to solve international problems, the need to promote the world revolution — (without which communism can not be quite safe from the international Capitalist threat.)" P.21-22

“बुर्जुआ क्रांति का जन्म उन परिस्थितियों में हुआ, जो पूर्व शासन के दौरान पहले से मौजूद थीं। आमतौर पर बुर्जुआ क्रांति का अंत सत्ता हासिल करने में होता है। सर्वहारा क्रांति के लिए सत्ता की प्राप्ति सिर्फ शुरुआत है। प्राप्त होने के बाद सत्ता का उपयोग पुरानी अर्थव्यवस्था को बदलकर नई अर्थव्यवस्था बनाने के लिए एक साधन के रूप में किया जाता है।”

“अभी दो बहुत बड़े और कठिन काम बाकी हैं—(एक देश, यानी रूस में वर्तमान शासन व्यवस्था को उलट देने के बाद भी)।”

सबसे पहली समस्या आंतरिक संगठन है। दूसरी बड़ी समस्याओं को सुलझाने की जरूरत, विश्वक्रांति को आगे बढ़ाने की जरूरत—(जिसके बिना साम्यवादी व्यवस्था अंतरराष्ट्रीय पूँजीवादी खतरे से पूरी तरह सुरक्षित नहीं हो सकती)।

(पृ. 21-22)

121

- I. If the proletariat is to win over the majority of the population, it must first of all overthrow the bourgeoisie and seize the powers of the State.  
 II. Next, it must establish the Soviet authority, breaking up the old State apparatus, and thus at once blow counteracting the influence which the bourgeoisie and its petty bourgeois accomplices of the Czarist collaboration exercise over the working (through non-proletarian) masses.  
 III. Thirdly, the proletarian must completely and finally destroy the influence which the bourgeois and petty bourgeois Compromisers exercise over the majority of the working (through non-proletarian) masses; it must do so by the revolutionary satisfaction of the economic needs of these masses at the cost of the exploiters.

*Nedra Lewis*

Soviet leadership of the proletarian masses  
 the masses guided and directed by the Communists Party. Through party exercises substantial influence or control still, it is not all absent from its guidance. The 'will' of the masses is necessary for the achievement of any particular object.

"We have to admit that the broad masses of the workers must be led and guided by the class-conscious minority," and that is the Party. Party has 'Trade unions' to link the Party with proletarian masses; 'Soviets' to link it with all the labouring masses in the political field; 'Co-operatives' in the economic field especially.

I. अगर सर्वहारा को ज्यादातर लोगों पर विजय प्राप्त करनी है, तो उसे सबसे पहले बुर्जुआ को उखाड़कर राज्य की सत्ता पर काबिज होना होगा।

II. उसके बाद, उसे पुराने राज्यतंत्र को तोड़कर सोवियत सत्ता स्थापित करनी होगी, और इस तरह एक ही झटके में उस असर को खत्म करना होगा, जो बुर्जुआ और शत्रु-सहयोगी छुटभैया-बुर्जुआ का मजदूर मजदूर वर्गों (यद्यपि गैर-सर्वहारा) पर था।

III. तीसरी बात, सर्वहारा को उस असर को पूरी तरह और अंतिम रूप से खत्म करना होगा, जो बुर्जुआ और छुटभैया-बुर्जुआ से समझौता करनेवाले अधिकतर मजदूर (यद्यपि गैर-सर्वहारा) लोगों पर रखते हैं; उसे यह काम शोषकों की कीमत पर आम लोगों की आर्थिक आवश्यकताओं को क्रांतिकारी रूप से संतुष्ट करके करना होगा।

—निकोलाइ लेनिन (पृ. 82)

———— : \* : —————

सर्वहारा की तानाशाही का अर्थ है—वे लोग, जो कम्युनिस्ट पार्टी से मार्गदर्शित और निर्देशित हैं। हालाँकि पार्टी का काफी असर या नियंत्रण है, लेकिन यह पूरा नहीं है। इस मार्गदर्शन के अलावा, लोगों में किसी विशेष लक्ष्य को प्राप्त करने की 'इच्छाशक्ति' आवश्यक है।

हमें यह मानना होगा कि मजदूरों के बड़े वर्ग का नेतृत्व और मार्गदर्शन वर्ग चेतना युक्त अल्पसंख्यकों द्वारा होना

122

*To link the peasantry, 'League of youth' to  
train communists from amongst the  
young generation. Finally Party itself is the  
sole guiding force within the Dictator-  
ship of the proletariat.*

चाहिए। और यह पार्टी है। पार्टी को सर्वहारा मजदूर से जोड़ने के लिए पार्टी के पास ट्रेड यूनियनें हैं... इसे राजनीति-क्षेत्र में सभी मजदूर वर्गों से जोड़ने के लिए सोवियतें हैं, आर्थिक क्षेत्र में, विशेषकर किसानों के लिए कोऑपरेटिव्स हैं।

(शेष अगले पृष्ठ पर)

122

Figures: Inequality of incomes:

Production	Pre-war United Kingdom's (England's)
	Annual production amounted to :-
	£, 200,000,000
	Gained through foreign investment:-
	£, 200,000,000
	Total £ 220,000,000

Distribution	$\frac{1}{9}$ of the whole population i.e. Capitalist took away $\frac{1}{3}$ of the total production i.e. £, 110,000,000. <small>least income annual - £ 160</small>
	$\frac{2}{9}$ of the whole population i.e. Petty bourgeois took away $\frac{1}{3}$ of the remaining half or $\frac{1}{6}$ of the whole i.e. £, 30,000,000. <small>average income less than £ 160 a year</small>
	$\frac{2}{3}$ of the population i.e. manual labourer took away $\frac{1}{3}$ of the remaining half or $\frac{1}{6}$ of the whole i.e. £, 80,000,000. <small>average income more than £ 160 a year</small>
	United States America in 1890:
	40% of total production was received by owners of means
	60% " was given to all workers.

इसी तरह नई पीढ़ी के कम्युनिस्टों

# आँकडे

आमदनी में असमानता  
उत्पादन

मुद्रा से पहले यूनाइटेड किंगडम (इंग्लैण्ड)	
का वार्षिक उत्पादन	: 2000,000,000 पाउंड
विदेशी निवेश से प्राप्त	: 200,000,000 पाउंड
	2200,000,000

## वितरण

कुल आबादी का 1/9वाँ भाग, अर्थात् पूँजीपति अथवा बुर्जुआ	न्यूनतम औसत आमदनी
ले गए	वार्षिक
उत्पादन का 1/2 भाग, अर्थात् 1100,000,000	160 पाउंड
कुल आबादी का 2/9वाँ भाग, अर्थात् छुटभैया बुर्जुआ शेष	अौसत आमदनी एक वर्ष
आधे का 1/3 भाग अथवा कुल 300,000,000 का 1/6वाँ में 160 से कम	
भाग ले गए	
अथवा शेष 800,000,000 आबादी का 2/3 भाग अर्थात् औसत आमदनी 60 पाउंड	वार्षिक
मजदूर या सर्वहारा ले गए।	

————— : \* : —————

## संयुक्त राज्य अमेरिका : 1890 में कुल उत्पादन का

4% भाग साधनों के स्वामियों को मिलता था। कुल उत्पादन का

60% भाग सभी मजदूरों को मिलता था।

124

Purushottam Das Tandon  
A Life of Service  
 "The aim of life is not more to control mind,  
 but to develop it harmoniously, not to achieve  
 salvation merely, but to make the best use of it  
 here below, and not to realize truth, beauty  
 and good only in contemplation, but also in the  
 actual experience of daily life; social progress  
 depends not upon the unromanticism of the few but  
 on the achievement of the many; and spiritual  
 democracy or universal brotherhood can be achieved  
 only when there is an equality of opportunity in all  
 social, Political and industrial life."

## जिंदगी का मकसद

"जिंदगी का मकसद अब मन पर काबू करना नहीं, बल्कि इसका समरसतापूर्ण विकास है। मौत के बाद मुक्ति पाना नहीं, बल्कि दुनिया में जो है, उसका सर्वश्रेष्ठ उपयोग करना है। सत्य, सुंदर और शिव की खोज ध्यान से नहीं, बल्कि रोजर्मर्टा की जिंदगी के वास्तविक अनुभवों से करना भी है। सामाजिक प्रगति सिर्फ कुछ लोगों की नेकी से नहीं, बल्कि अधिक लोगों के नेक बनने से होगी। आध्यात्मिक लोकतंत्र अथवा सार्वभौम भाईचारा तभी संभव है, जब सामाजिक, राजनीतिक और औद्योगिक जीवन में अवसरों की समानता हो।"

Ancient Polis:-  
 Rome & Sparta:-  
 Aristotle  
 Plato:-

The dominant feature of these ancient polities, Sparta & Rome. In Sparta or in Rome the citizen had only a few personal rights; his conduct was largely subject to public censorship, and his religion was imposed by State authority. The only true citizens and members of the sovereign body being an aristocratic caste of freemen, whose manual work is performed by slaves possessing no civil rights.

Socrates:-

Socrates is represented as contending that whenever, after reaching man's estate, voluntarily remaining in a city, should submit to the State, even when he deems its laws unjust, accordingly, on the ground that he would then have no connection with the State by escaping from broken in any way determinants to avoid the consequences of such a course.

Plato:

[Social Contract]

He traces the origin of society and the State to mutual need, for men as isolated beings are incapable of satisfying their manifold wants. He while depicting a kind of ideal State says, "In an ideal State philosophers should rule; and to this minister, or government of the best, the body of citizens would owe implicit obedience." He emphasizes the careful training and education of citizens.

Aristotle:-

He was the first to disentangle politics from ethics. Though he careful not to sever them. The majority of men, he argued, are ruled by their passions rather than by reason, and the State must therefore train them to render by a lifelong course of discipline, as in Sparta. Under freedom Society is instituted there is no administration of justice... (and) it is necessary to enquire into the best constitution.

\* :

## राज्य का विज्ञान

प्राचीन राज्य व्यवस्था : रोम और स्पार्टा : अरस्तु और प्लेटो

इन प्राचीन राज्य-व्यवस्थाओं में व्यक्ति का शासन के अधीन होना सबसे बड़ी विशेषता थी। रोम के हेलास में नागरिक को बहुत कम व्यक्तिगत अधिकार प्राप्त थे। उसका आचरण व्यापक रूप से सार्वजनिक निगरानी में था, उसका धर्म राज्य प्राधिकार द्वारा थोपा गया था। वास्तविक नागरिक और सोवरिन बॉडी के सदस्य सिर्फ कुलीन लोग थे और उन्हें ही पूरी स्वतंत्रता प्राप्त थी। उनका सभी मेहनत का काम दासों द्वारा किया जाता था, जिनके पास कोई नागरिक अधिकार नहीं थे।

## सुकरात

सुकरात को यह दलील देते हुए प्रस्तुत किया जाता है कि कोई भी नागरिक राज्य में पहुँचने के बाद यदि स्वेच्छा से एक नगर में रहने लगे तो उसे सरकार की अधीनता स्वीकार करनी चाहिए, भले ही उसे इसके कानून अनुचित क्यों न लगें। तदनुसार ही इस आधार पर कि यदि वह जेल से फरार होकर भाग जाए तो राज्य के साथ उसका करार भंग हो जाएगा। वह एक अनुचित सजा के लागू होने का भी इंतजार करते रहने के लिए तैयार रहे।

## प्लेटो

### (सामाजिक संविदा)

वह समाज और राज्य की उत्पत्ति पारस्परिक आवश्यकता से बताता है, क्योंकि मनुष्य अकेला रहकर अपनी विभिन्न आवश्यकताओं को पूरा नहीं कर सकता। वह एक तरह के आदर्श स्पार्टा की व्याख्या करते हुए कहता है—“एक आदर्श राज्य में दार्शनिकों को शासन करना चाहिए और इन सर्वश्रेष्ठ लोगों के अभिजात वर्ग अथवा सरकार की आज्ञा का नागरिकों द्वारा पूरी तरह पालन किया जाना चाहिए।” वह नागरिकों के सजग प्रशिक्षण और शिक्षा पर जोर देता है।

## अरस्तु

वह पहला व्यक्ति था, जिसने राजनीति को नीतिशास्त्र से मुक्त किया, हालाँकि वह सतर्क भी था कि दोनों एक-दूसरे से बिल्कुल पृथक् न हो जाएँ। उसकी दलील थी, लोगों की बहुसंख्या विवेक के बजाय अपनी भावनाओं में शामिल होती है। इसलिए राज्य के लिए जरूरी है कि वह उन्हें जीवन पर्याप्त अनुशासन में रहने का प्रशिक्षण दे, जैसा कि स्पार्टा में है। जब तक राजनीतिक समाज स्थापित नहीं होता, तब तक न्याय का कोई प्रशासन नहीं हो सकता—लेकिन इसके लिए आवश्यक है कि सर्वोत्तम संविधान और विधि निर्माण की सर्वोत्तम प्रणाली की खोज की जाए।

(शेष अगले पृष्ठ पर)

166

and the best system of legislation.

"The queen of the State is found in the family or household, from the union of many house-holds across the Village Community, now here being subject to patriarchal government.

"By an association of several villages now forms the State, a natural, independent, and self-sufficient organization.

"But while the household is ruled monarchically in patriarchal government, the subjects are free and in majority with their master.

"Natural breeding and mutual advantage impel men to union. This is by nature a political (social) animal.

"The State is made more than an alliance which individuals can join or leave without effect, for the individual is only here when it is necessary and enough, something essentially different from a club you."

Plato had anticipated this conception of the State as a body where members combine harmoniously for common ends.

Aristotle said that man is born and grows up in social conditions.

These bonds are either rule and subjection, and it is best if bonds bind not too closely, but moderately.

On reflection of Plato's own conception, he argued in favor of only regulated private property, considering that only a small amount is possible or beneficial in this State.

He divided government into monarchical, aristocratic, and popular; and these respectively form the best, intermediate, and least despotic and despoticising, according to the proportion prevalent in the elements of one or the other, and according as the one is the general good or the private interest of the members, regard also being paid to freedom, wealth, and ease and quiet living.

Such policy consists of three parts—the deliberative, the executive and the judicial. Citizenship is confined to those who are in possession, nearly or fully, of legal rights, and by participation in political power and public office.

The many, being numerous, are not fit sharers of prosperity, therefore rule; for, though all are equally dignified by birth, birth, and fortune, there have been such great differences, that, had undivided all been investing one particular function, they should be overwhelmed by having but few executive offices.

The best Plato's is that in which the middle classmen, the city rich and the very poor control the government, so that

Classes have a set permanent life, and is harmonious.

“राज्य का बीज परिवार या कुटुंब में होता है। कई कुटुंबों के संयुक्त होने से ग्राम समुदाय की उत्पत्ति हुई है, (जिसके) सदस्य पिरुसत्तात्मक सरकार के अधीन होते हैं।”

कई गाँवों को मिलाकर राज्य का निर्माण हुआ, जो एक प्राकृतिक स्वतंत्र और आत्मनिर्भर संगठन था। “लेकिन जहाँ कुटुंब एक व्यक्तित्व द्वारा शासिल होता है, वही संवैधानिक सरकारों में व्यक्ति स्वतंत्र और अपने शासकों के समान होते हैं।”

“प्राकृतिक, सामाजिकता और परस्पर लाभ से भी एकता संभव होती है। मनुष्य अपने स्वभाव से एक राजनीतिक (सामाजिक) प्राणी है।”

“राज्य एक संश्रय से कहीं अधिक है; जिससे व्यक्ति जुड़ सकते हैं या बिना कोई फर्क पड़े छोड़ सकते हैं, लेकिन स्वतंत्र या नागरिकता रहित मनुष्य अविश्वसनीय, असभ्य, और एक नागरिक सेभिन कोई चीज होती है।”

## प्लेटो

प्लेटो ने राज्य की अवधारणा एक ऐसी संस्था के रूप में की, जिसके सदस्य किसी एक सामान्य उद्देश्य के लिए समरसता के साथ संयुक्त होते हैं।

## अरस्तु

अरस्तु का मानना है कि जहाँ स्वतंत्रता और समानता होती है, वहाँ वैकल्पिक शासन तथा अधीनता होनी चाहिए, लेकिन इसके श्रेष्ठतम रूप में, यदि संभव हो तो, वे ही लोग हमेशा शासन करें।

प्लेटो के साम्यवाद के विरोध में उसकी दलील बाकायदा नियम निर्धारित निजी संपत्ति के पक्ष में थी, जिसके पीछे उसका विचार यह था कि राज्य में सिर्फ एक नैतिक एकता ही संभव या वांछनीय है।

## सरकारों के प्रकार

उसने सरकारों को राजतंत्र, कुलीनतंत्र तथा गणराज्यों में बाँटा था। उनकी विकृतियाँ, अत्याचार, कुलीनतंत्र और लोकतंत्र, तदनुसार उनकी सारी शक्तियाँ किसी एक व्यक्ति अथवा कुछ अथवा बहुत से लोगों के हाथ में होती हैं। इनका अंतिम उद्देश्य जनकल्याण अथवा शासकों के खुद के हित होते हैं। स्वतंत्रता, संपत्ति, संस्कृति तथा कुलीनता का भी सम्मान किया जाता है। हर शासन व्यवस्था के तीन भाग होते हैं—(1) विचारक, (2) कार्यपालिका और (3) न्यायिक संस्थाएँ। नागरिकता का निर्धारण न निवास से होता है, न कानूनी अधिकारों की प्राप्ति से, बल्कि यह न्यायिक शक्ति तथा सार्वजनिक पद में भागीदारी से होता है।

अनेक लोगों को, जिन्होंने एक सीमा तक नैतिकता का स्तर प्राप्त कर लिया हो, शासन करना चाहिए। वे व्यक्तिगत रूप से कमतर हो सकते हैं, लेकिन सामूहिक रूप से कुछ चुनिंदा लोगों की तुलना में अधिक समझदार और गुणवान होते हैं। लेकिन सभी विचारण और न्यायिक कार्य करते हुए उन्हें सर्वोच्च कार्यपालिक पदों से अलग रहना चाहिए।

167

*Conformable to reason, as well as the most capable of constitutional action.  
This is evidently an off-hand note overruled, though it would receive in the margin:  
of the old year, slaves of course being ignored.*

*Democracy agrees in being based on equality in respect of  
personal liberty, which implies the singularity of all citizens to make  
in class is the offices of State, and the rule of each man all and of all  
over each in turn.*

*Another, like Plato, treated democracy as a relaxed form of  
Goths, and held that it is more suitable to large cities than small.*

*Stories:-*

*Cyrus:-*  
*Epicureanism :- "justice" like Epicureanism, is nothing in itself, but merely a comfort  
(to the sense of justice) of reflecting on mortal mutual injury.*

*Socrates:-*  
*(born c. 460-399 B.C.) who opened  
his school in a Athenian called the "Stoa Poikile" [painted porch] at  
Athens. Later Roman stories were, that he was Socrates, [Hercules]  
and Hercules. The word State literally means, one is different to  
pleasure or pain. Socrates is a school of philosophy strongly opposed to Epicureanism  
in its view of life and death's being indifferent to pleasure or pain.*

*Cynicism:-*  
*A sect of philosophers founded by Antisthenes of Athens.  
(born c. 444-360 B.C.) characterised by an ascetic life content for  
nothing but pleasure and immorality. They are called Cynics  
because of their name named. Cynicism is sometimes used  
to denote the last contempt for human nature.*

*Epicureanism:-*  
*Epicurus [341-270 B.C.] from Greek Andhra, his chief  
that pleasure was the chief good. Epicureanism is used to denote an  
endeavour to minimise the trials or give to sensual enjoyment.*

सर्वश्रेष्ठ शासन व्यवस्था वह है, जिसमें बहुत अमीर और बहुत गरीब के बीच का मध्य वर्ग शासन पर नियंत्रण करता है, क्योंकि इस वर्ग का जीवन सर्वाधिक स्थायित्व वाला और सर्वाधिक तर्कसंगत होता है। इस वर्ग के लोग संवैधानिक कार्य करने के लिए सर्वाधिक सक्षम होते हैं। यह एक तरह से इस बात को सिद्ध करता है कि प्रभुसत्ता नागरिकों की बहुसंख्या में होनी चाहिए। दासों की लाजमी रूप से अनदेखी होती है।

लोकतांत्रिक व्यवस्थाएँ व्यक्तिगत स्वतंत्रता में समानता पर आधारित होने के लिए सहमत हैं, जिसका अर्थ है कि सभी नागरिकों को राज्य के पदों पर रहने, अथवा उनके पदाधिकारियों का चुनाव करने की प्राप्ति है। प्रत्येक का सब पर और सबका प्रत्येक पर शासन होता है। प्लेटो की तरह अरस्तु लोकतंत्र को शासन का हीन स्वरूप मानता था और कहता था कि यह किन्हीं अन्य की तुलना में बड़े राज्यों के लिए अधिक उपयुक्त है।

## स्टॉइक्स

### सिनिक्स

### एपीक्यूरियंस

एपीक्यूरस ने कहा कि “न्याय अपने आप में कुछ नहीं, सिर्फ परस्पर हानि को रोकने का एक अनिवार्य समझौता (न्याय का आधार) है।”

### स्टॉइक (वाद)

दार्शनिक झेनो (340-360 बी.सी.) का शिष्य, जिसने यूनान के एक कॉलोनाइज में ‘स्टोका पोइकाइट’ (पेटेड पोच) नाम का स्कूल खोला था। वाद में जो रोमन स्टॉइक्स हुए, उनमें ‘केटो दि यंगर’, सेनेका शामिल हैं। मार्क्स और लियसा। ‘स्टॉइक’ शब्द का अर्थ है, “जो प्रसन्नता और दुःख से उदासीन हो।”

स्टॉइसिज्म एक ऐसा प्राचीन दर्शन है, जो जीवन तथा कर्तव्य के संबंध में एपीक्यूरियनिज्म से बहुत विपरीत है।

### कसनिसिज्म

यह एंटीस्थेनेस ऑफ एथेन्स (जन्म लगभग 444 बी.सी.) द्वारा स्थापित दार्शनिकों का एक संप्रदाय है, जो संपन्नता, कलाओं, विज्ञान तथा आमोद-प्रमोद से खुलकर नफरत करता है। इन्हें उनके रूखे आचरण के कारण ‘सिनिक्स’ कहते हैं। सिनिसिज्म ऐसी चीज है, जो मानव स्वभाव के प्रति हिकारत से भरी है।

### एपीक्यूरियंस

एपीक्यूरियंस (341-270 बी.सी.) एक यूनानी दार्शनिक था, जिसने शिक्षा दी कि आनंद ही सबसे अच्छी चीज है। ‘एपीक्यूरियन’ शब्द का उपयोग ऐसे व्यक्ति के लिए किया जाता है, जो खाने-पीने अथवा ऐंट्रिक सुखों में पूरी तरह ढूबा हो।

168

*Roman Polity* — “Hence of direct importance was added to political theory by the Romans but in a clearly allied department, i.e., jurisprudence — they made another division of class interest and ruled.”  
*Two Cities* — “In the Republic there has grown up inside the ‘City Law’ (*Ubi Civitas*) a collection of rules and principles called *Proletarian* (comes of nothing) which represented the common features prevailing among the Italian tribes.  
 The great Roman general (*Scipio* in his *Orations*) fearing his idea from the *Scipio* could gradually & identify the laws of Nature [*Naturalis*] with the *Ubi Civitas*. They taught that the City was a means and end, and that it was superior in capacity and ability to the Army of particular States. Natural Law was supposed to be relatively stationary and could not be violated.  
 In the *Latinum* Empire when Roman (*Ubi Civitas*) in high development and other Justinian were most influential, its priests formulated no private code but rather on political principles the measures that  
 “All men were born free”  
 now in the *Ubi Civitas* (*Ubi Cives*), all men were equal. The application here is that although the Italian recognised other distinctions all mankind were equal before the law of Nature.  
*Aristotle* (*Ubi Cives*) — “That the Roman priests did not pollute  
 Continued on the origin of civil society, nor have in a Country & cities recognis’d any such distinctions  
 from a *Proletarian* and some *Ubi Cives* contrast.”  
 Aristotle’s report is interesting. The citizens assembled in the *Comitia* actually exercised the supreme power during the greater part of the Republic.  
 Under the *Ubi Cives* the executive authority was vested in the *Procurator* who was responsible to the *Cohors* (i.e. mostly the people). By the *Ubi Cives*, distributed the supreme command. To make himself at the beginning of his reign, however, confirming our known old *Procurator* as *Procurator* and *Ubi Cives*.

### रोमन शासन व्यवस्था

रोमनों के राजनीति सिद्धांत में प्रत्यक्ष महत्व की बहुत कम बातें जोड़ी गई, लेकिन नजदीकी रूप से संबंधित विभाग, अर्थात् ‘न्यायशास्त्र’ में उन्होंने बहुत गहरा तथा मूल्यवान योगदान किया।

## जस्ट-सिविक जस्ट-जॉटियम

रिपब्लिक के अंतर्गत 'सिविल लॉ' के साथ ही नियमों और सिद्धांतों का एक संग्रह विकसित हो गया, जिसे 'जस जॉटियम' (लॉ ऑफ नेशंस) कहा गया। यह इटेलियन प्रजातियों में प्रचलित सामान्य विशेषताओं का प्रतिनिधित्व करता है।

## जस नेचुरले

महान् रोमन ज्यूरिस-कंसल्ट (विधि विज्ञान में विशेषज्ञ) [स्टॉइक्स से विचार ग्रहण करनेवाला] धीरे-धीरे लॉ ऑफ नेचर (जस नेचुरले) तथा जस जॉटियम ही माना जाने लगा।

उन्होंने कहा कि यह कानून ईश्वरीय और शाश्वत है, और यह प्रभुत्व और वैधता में विशिष्ट राज्यों के कानूनों की तुलना में श्रेष्ठ है। यह माना गया कि नेचुरल लॉ वास्तविक रूप से लागू है और सिविल लॉ से आबद्ध है।

एंटोनियम युग में, जब रोमन लॉ का काफी विकास हो गया और स्टॉइक सिद्धांत बहुत प्रभावशाली थे, तब न्यायविदों ने न्यायिक, परंतु राजनीति सिद्धांत नहीं बनाए। सिद्धांत यह था कि "सभी मनुष्य स्वतंत्र पैदा होते हैं" और यह कि लॉ ऑफ नेचर के द्वारा "सभी मनुष्य बराबर हैं।"

इसका निहितार्थ यह हुआ कि हालाँकि सिविल लॉ वर्गभेद को मान्य करता है, लेकिन लॉ ऑफ नेचर के समक्ष पूरी मानव जाति समान है।

## रोमन शासन व्यवस्था में सामाजिक संविदा

यद्यपि रोमन विधिवेत्ताओं ने नागरिक समाज की उत्पत्ति के तौर पर किसी समझौते को स्वीकार नहीं किया था, फिर भी स्वीकृत अधिकारों और दायित्वों को एक किल्पित, लेकिन गैर-मौजूद समझौते से निगमित करने का एक रुक्णान मौजूद था।

संप्रभुता के संबंध में, कॉमिशिया ट्रिबुटा में एकत्र नागरिकों ने रिपब्लिक के स्वर्णिम दिनों में सर्वोच्च शक्ति का प्रयोग किया। एंपायर के अंतर्गत संप्रभु अधिकार सम्प्राट में निहित था और बाद में ज्यूरिस कंसल्ट्स के अनुसार, लोगों ने लेक्स रेगिया के द्वारा उसके शासन के प्रारंभ के समय प्रत्येक सम्प्राट को सर्वोच्च सत्ता सौंप दी। इस प्रकार उसे शासन करने और कानून बनाने के सभी अधिकार मिल गए।

*Thomas Aquinas :-*  
Thomas Aquinas [1225-1274] is said to be his chief exponent of the medieval political theory. He followed Roman jurists, recognized an "natural law", the principles of which have been directly implemented in human reason, together with positive law that vary in different States.  
He held that the legislative power, the executive - the rule of government - should be divided. To the monarch, and body, for the administration of this power, he assigned "the sword"; to the nobility or those representing the prince, "the sword of justice".  
The government of governors, nobles, and people, with the Pope, formed another, seemed to him the best.

*Machiavelli :-*  
In his "Discourses on the First Decade", Machiavelli advocated the doctrine of popular sovereignty, and concluded the great bourgeoisie to temporal power that had been based on the Tiber River.  
Since man's natural desire is for temporal dominion, he must resort to the body of his goods; for laws are not likely to be in the state, unless they be readily obeyed, and executed by those whose interests are closely affected by those whom they rule.  
He advised that the legislative power belongs to the people, and that the legislative should make both the execution, which may be change or destroy.

*Renaissance*      *Reformation*  
In Renaissance, old departmental knowledge was violated and the classical philosophy having given way to a new philosophy of History and Man, more liberal, more frequent and more comprehensive.  
Ptolemy visualized man from earth physics to universe and actually Ptolemy began with universal scepticism. But one fact is soon found to be indubitable: the existence of a thin ring of circle in man. The first idea of God/Universality!  
The effort to salvation continues, to the authority of the church, which was strongly emphasized in the Reformation, thus becomes the very basis of Christian Philosophy.  
Catholic - Reaching to a French Philosophy.  
René Descartes [1596-1650 A.D.] gave his Philosophy.

## मध्य युग

### थॉमस एक्वीनस

थॉमस एक्वीनस (1225-1274) को मध्य युग की पॉलिटिकल ४्योरी का सबसे प्रमुख प्रतिनिधि माना जाता है। रोमन न्यायविदों का समर्थन करते हुए वह एक नेचुरल लॉ को मान्यता देता है, जिसके सिद्धांत मानवीय तक में दिव्यता से समाविष्ट हैं। वह इसके साथ ही सकारात्मक नियमों को भी मान्य करता है, जो हर राज्य के अलग-अलग होते हैं।

उसका मानना है कि विधायी शक्तियाँ, जो संप्रभुता की अत्यावश्यक अंग हैं, आमजन की भलाई के लिए होनी चाहिए और इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए ये जनसाधारण अथवा उनके प्रतिनिधि, प्रिंस के पास होनी चाहिए। सम्प्राट, कुलीनों तथा लोगों की मिश्रित सरकार, जिसमें पोप

अंतिम प्राधिकार हो, सर्वश्रेष्ठ प्रतीत होती है।

## संविदा का विचार\*

अपनी पुस्तक 'डिफेंसर पेकिस' में मार्सिलियो ऑफ पड़ुआ ने लोकप्रिय संप्रभुता का पक्ष लिया और लौकिक शक्ति पर पोष के अधिकार के आडंबर का विरोध किया, जो फाल्स डिक्रेटल्स पर आधारित रहे थे।

## मार्सिलियो ऑफ पड़ुआ लोगों की प्रभुसत्ता

चूंकि मनुष्यों ने परस्पर लाभ के लिए नागरिक जीवन को अपनाया, अतः इसके कानून भी लोगों की संस्था द्वारा बनाए जाने चाहिए। कानून संभावित रूप से श्रेष्ठतम तभी हो सकते हैं, और उनका तत्परता से पालन तभी हो सकता है, जब उन्हें वे लोग बनाएँ, जिनके हित सीधे प्रभावित होते हैं और जिन्हें पता हो कि उन्हें क्या चाहिए। उसने दृढ़ता से कहा कि विधायिका जनता की है, और यह कि विधायिका द्वारा कार्यपालिका का गठन किया जाए, जिसे यह बदल सके अथवा हटा सके।

## रेनिसांस—रिफॉर्मेशन

रेनिसांस में ज्ञान के सभी विभागों को सशक्त किया गया और सीमित दर्शन, जिसने एक हजार वर्ष तक धर्म-शास्त्र का चाकर बनकर काम किया, की जगह तेजी से एक नए दर्शन नैचर ऐंड मैन द्वारा ली जा रही है, जो अधिक उदार, अधिक गहरा और अधिक समग्र है। बेकन मनुष्य को अतींद्रिय से निकालकर प्रकृति और वास्तविकता की ओर ले गया। दर्शन की शुरुआत सार्वभौम संशयवाद के साथ होनी चाहिए, लेकिन एक तथ्य शीघ्र ही असंदिग्ध बन जाता है—मनुष्य में विचार के सिद्धांत का अस्तित्व।

## चेतना का अस्तित्व : कार्टेशियन दर्शन (कार्तवादी दर्शन)

सुधारकाल में आत्मगत सच्चाई पर विश्वास और व्यक्ति की सत्ता का जिस जोर-शोर के साथ आत्मान किया गया, वही कार्तवादी दर्शन का आधार बना। कार्तवादी-फ्रांसीसी दार्शनिक रेने द कार्त (1596-1650) और उसके दर्शन से संबंधित है।

170

New Period:- After Reformation the Papal authority having been shaken off a wave of freedom swept both the rulers and his people. But there was confusion. In settle new situation great many thinkers began work in the question of state. Different schools group.

Machiavelli:- Machiavelli—the famous Italian political thinker thought the Republican form of Govt. to be the best one, but fearing doubtful of the stability of such a form of Govt. he incalculable measures of securing a strong princely rule and wrote the book 'The Prince'. His advocacy of centralized Govt. had greatly affected political thought and practice in Europe.

Other Thinkers:- Machiavelli was perhaps the first writer who treated 'Politics' from a purely secular point of view. Majority of them favours the theory of pact or Contract. [In Roman law a pact or contract was an agreement among individuals, and not of a contract, which was a pact plus an obligation.]

There were two different sets of these thinkers. The first one expounded the theory based on the Biblical idea of covenant between God and man supplemented by the Roman idea of contract. So particularized a covenant between the government and the people. The second or modern form, relates to the institution of public social by means of compact among individuals. Prominent thinkers of this school were Hooker, Hobbes, Locke and Rousseau.

Defenders of Popular Liberty:- [Huguenots] 1. In 'Vindiciae contra Tyrannos' (1679), ascribed to Jules and Languet, contended that King derive their power from the people's will, and hence if a king violates the compact to observe the laws which he and the people promise originally at the institution of royalty, the latter are absolved from allegiance.

[Buchanan etc] 2. Buchanan also held that the King and people are naturally bound by a pact, and that its violation by the former entails forfeiture of his rights.

\* मार्सिलियो की मृत्यु 1328 में हुई—भगतसिंह

रिफॉर्मेशन के बाद पोप का अखिलयार कमज़ोर होने के बाद शासकों तथा जनता, दोनों के मन में स्वतंत्रता की लहर दौड़ गई, लेकिन भ्रम की स्थिति थी। नई स्थिति से निपटने के लिए अनेक महान् विचारकों ने राज्य के प्रश्न पर विचार किया। अनेक विचारधाराएँ उठ खड़ी हुईं।

## मैकियावेली

प्रसिद्ध इटेलियन विचारक मैकियावेली ने सरकार के गणतांत्रिक स्वरूप को सर्वश्रेष्ठ माना, लेकिन इस प्रकार की सरकार के स्थायित्व पर संदेह करते हुए उसने सशक्त राजा के शासन के सिद्धांत को प्रतिपादित किया। उसने 'दि प्रिंस' नामक पुस्तक लिखी। उसके द्वारा केंद्रीकृत सरकार का पक्ष लिया गया, जिसका यूरोप में राजनीति सिद्धांत और व्यवहार पर गहरा प्रभाव हुआ।

मैकियावेली शायद पहला ऐसा लेखक था, जिसने 'राजनीति' को विशुद्ध रूप से सेक्युलर दृष्टि से देखा।

## अन्य विचारक

### (समझौता और संविदा)

अन्य विचारक करार और समझौता—अन्य विचारकों में से ज्यादातर ने करार या समझौते के सिद्धांत का समर्थन किया। रोमन कानून में (करार) व्यक्तियों के बीच एक सहमति का नतीजा हुआ करता था और इसका दायरा समझौते से छोटा हुआ करता था, जबकि समझौता करार के साथ-साथ एक बाध्यकारी दायित्व भी होता था।

इन विचारकों के दो प्रमुख संप्रदाय थे। पहला संप्रदाय ईश्वर और मनुष्य के बीच समझौते के हिन्दू (यहूदी) विचार पर आधारित सिद्धांत का प्रतिपादन करता है। संविदा का रोमन विचार इसका पूरक था। यह सरकार और लोगों के बीच मौन संविदा को स्वीकार करता है।

दूसरा अथवा आधुनिक संप्रदाय व्यक्तियों के बीच संविदा के माध्यम से पॉलिटिकल सोसाइटी की स्थापना से संबंधित है। इस विचारधारा के प्रमुख विचारकों में हूकर, हॉब्स, लॉक और रूसो शामिल हैं।

## लोगों की स्वतंत्रता के हिमायती

### स्थगुनांट

(1) दि विडिसिया कॉण्ट्रा टीब्रानोस (1576) को ट्यूगुनांट द्वारा लिखा हुआ माना जाता है, जिसमें कहा गया है कि राजा अपनी शक्ति लोगों की इच्छा से प्राप्त करता है, और यदि कोई राजा कानून का पालन करने के समझौते को तोड़ दे, जिसका कुलीन तथा लोग संयुक्त रूप से पालन करने की शपथ लेते हैं, तो ऐसी स्थिति में लोगों को इसमें निष्ठा रखने की अनिवार्यता से मुक्ति मिल जाती है।

### बुचानन

(2) बुचानन का भी मानना है कि राजा और लोग एक समझौते से बँधे हैं, और राजा द्वारा इसका उल्लंघन किए जाने पर उसके अधिकार छिन जाते हैं।

<u>Jean Bodin</u>	1586	I know it. Gentil Bellarmino and Mariana argued that king derived their authority from the people, but they are silly not to do so.
<u>[King James I]</u>	(1609)	I admitted this theory in a speech to Parliament in 1609, saying that "every living just king in a settled kingdom is bound by solemn oath made unto his people by his laws, in framing his government agreeable thereto."
<u>[Convention Parliament]</u>	1689	Convention Parliament declared in 1689 in James II's, "using endeavours to subvert the constitution by breaking the original contract between the king and people", has rendered him vacant.
<u>Bodin</u>	1586	"The first comprehensive political philosophy of modern times?" Bodin, author of the "République" [1576 and 1577] says that "force and not a contract is the origin of a commonwealth". Positive political governments were nevertheless by conquest, and natural liberty was thus lost. In his opinion, Sovereignty was the supreme power over the state. He regarded "sovereignty as independent, indivisible, preexisting, inalienable, and absolute power. He confined his idea of sovereignty little to those having kingship".
<u>Machiavelli</u>	[1513-1633]	He is notable for clearly asserting that sovereignty resides in the people alone, kings being only their magistrates or administrative, and that the sovereign rights of the community are inalienable.
<u>Covetius</u>	[1628]	In the book, "De Jure Belli et Pacis" [1628], Covetius says that man has a strong desire for a private and secured society, but he indicates his theory of non-resistance and claims that the people are always and everywhere free subjects of their own government to establish for its safety its government. Sovereignty arises either from conquest or from consent, but he largely emphasizes on the idea that sovereignty is the inalienable power.
<u>Hobbes</u>	-	He in his "Ecclesiastical Polity" [1591-8] postulates an original state of nature in which all men were equal and subjected to no law, desiring for a life suitable to man's dignity, and according to God's will, impelled them to unite in "public society". Natural inclination and an order expressly & secretly agreed upon touching the manner of their union in living together, were the two foundations of the former public society, & the latter that we call "The Law of a Commonwealth".

## जीस्युइट्स

(3) यहाँ तक कि जीस्युइट्स बेलरमाइन और मरियाना ने दलील दी कि राजा अपना अधिकार लोगों से प्राप्त करता है, लेकिन वे लोग प्रजा पोप की ही होते हैं।

### किंग जेम्स प्रथम (1609)

जेम्स प्रथम ने अपने इस सिद्धांत को 1609 में पार्लियामेंट में दिए गए भाषण में यह कहते हुए स्वीकार किया कि "किसी स्थापित राज्य में प्रत्येक न्यायित्र राजा उसके कानूनों के माध्यम से लोगों के साथ किए गए समझौते का पालन करने के लिए बात्यहै। उसे अपनी सरकार इसी के अनुसार चलानी चाहिए।"

### कन्वेशन पार्लियामेंट (1688)

कन्वेशन पार्लियामेंट ने 1688 में घोषणा की कि जेम्स द्वितीय ने राजा और जनता के बीच मूल समझौते को तोड़कर संविधान का उल्लंघन करने का प्रयास किया। इसीलिए उसने सिंहासन को खाली छोड़ दिया।

### बोडिन (1586)

आधुनिक युग के प्रथम समग्र राजनीति विचारक बोडिन ने 'दार्शनिक और रिपब्लिक' (1577 और 1586) की रचना की। वह कहता है कि "कॉमनवेल्थ की उत्पत्ति संविदा से नहीं, शक्ति से हुई है।"

आदिम पेट्रिआर्क सरकारों को पराजित कर उलट दिया गया और इस प्रकार नैसर्गिक स्वतंत्रता खो गई। उसकी राय में, "सोवरिन नागरिकों पर परम सत्ता है।" वह सोवरिन को स्वतंत्र, अविभाजनीय, चिरस्थायी, अभिन्न और परम सत्ता मानता था। वह सोवरिन के विचार को भ्रमवश उस समय प्रचलित किंगशिप समझ बैठा।

### अल्थूसियस (1557-1638)

उसने यह उल्लेखनीय बात स्पष्ट रूप से कही कि प्रभुसत्ता केवल लोगों में निहित है, और राजा सिर्फ उनके न्यायाधीश अथवा प्रशासक होते हैं। समुदाय के संप्रभु अधिकार उनसे अलग नहीं किए जा सकते।

### ग्रोटियस (1625)

ग्रोटियस ने अपनी पुस्तक 'डी ज्यू बेल्ली एट पेरिस' (1628) में कहा कि मनुष्य में एक शांतिपूर्ण और व्यवस्थित समाज की तीव्र लालसा होती है। लेकिन वह अ-प्रतिरोध के सिद्धांत को पोषित करता है और इस बात से इनकार करता है कि लोग हमेशा और हर जगह संप्रभु होते हैं, अथवा सभी सरकारें शासित होती हैं। संप्रभुता या तो विजय से आती है या सहमति से; परंतु वह इस विचार पर जोर देता है कि संप्रभुता अविभाजनीय शक्ति है।

### हूकर

उसने अपनी पुस्तक 'एक्टेस्टिकल पॉलिटी' (1529-30) में एक ऐसी मौलिक प्राकृतिक स्थिति की बात कही, जिसमें सभी मनुष्य समान

होते हैं और किसी कानून के अधीन नहीं होते। मनुष्यों की गरिमा के अनुरूप जीवन की कामना और अकेले रहने की अरुचि ने उन्हें 'राजनीति समाजों' में एकजुट कर दिया। 'स्वाभाविक रुझान' और व्यवस्था अथवा गुप्त रूप से उनकी साथ रहने की सहमति ही वर्तमान 'राजनीति समाजों' की दो बुनियादें हैं। साथ में रहने के तरीके को ही हम 'दि लॉ ऑफ ए कॉमनवेल्थ' कहते हैं।

172

[Origin of state]

Sovereignty is delegation power emanates from the people so will  
Sovereignty of the people

'To take away all mutual grievances, injuries and wrongs, the only way was to ordain some kind of government; or common judge.'  
But he says, 'Laws not only teach what is good, and also have a constraining force, derived from the consent of the governed expressed either personally or through representatives.'  
'Laws human of what kind ever, are available [i.e. valid]  
'Laws they are not which public opposition hath not made so.'  
Thus he clearly affirms that Sovereignty or legislative power, resides ultimately in the people.

1620:-

Famous Declaration of the "Pilgrim Fathers" on board the "Mayflower" (1620), "We do solemnly and mutually in the presence of God and of one another covenant and combine ourselves together into a civil Body Politic."  
See Scope of the People's Power (Another famous Puritan document), which emanated from the Army of the Parliament.  
[1647] also indicates the same tendency of mind.

1647:-

Pilgrim

Sovereignty of the People

In his 'Treatise of Kings and magistrates' (1649) he also propounds similar principles. He affirms that 'All men naturally were born free', they 'agreed by common league to live together from mutual injury and jointly to defend themselves against any that gave disturbance or opposition & such agreement became towns, cities and commonwealths.' This authority and power of self-defence and preservation being naturally and naturally in every man and usually well, was vested in King and magistrates as executive and commanding.

The power of kings and magistrates is nothing else but what is by derivation, transmission, and commitment to them in trust from the people to the Common good of all, in whom the power of government naturally and can not be taken from them without a violation of their natural birth-right. Hence nations may choose or despatch kings, merely by the right and liberty of freedom how to be governed as seems them best.'

### राज्य की उत्पत्ति

संप्रभुता: विधायनी शक्ति कार्यपालिका पर भी नियंत्रण करती है।

"सभी परस्पर शिकायतों, तिरस्कार और अन्यायों को दूर करने का एक ही उपाय है कि किसी सरकार अथवा कॉमन जज की व्यवस्था की जाए।" उसने अरस्टु की इस बात से सहमति जारी कि सरकार की उत्पत्ति किंगशाप में है। लेकिन वह कहता है कि "कानून सिर्फ अच्छी बातें नहीं सिखाते, बल्कि शासितों की सहमति से प्राप्त शक्ति को भी नियंत्रित करते हैं, जो व्यक्तिगत रूप से अथवा प्रतिनिधियों के माध्यम से व्यक्त होती है। सभी प्रकार के मानवीय कानून (अर्थात् वैय) सहमति से उपलब्ध हैं। वे कानून नहीं हैं, जो लोगों की सहमति से नहीं बने हैं।"

### लोगों की संप्रभुता

इस प्रकार, उसने स्पष्ट रूप से प्रतिपादित किया कि संप्रभुता अथवा विधायी शक्ति अंततः लोगों में निहित है।

1620

मेफलावर के बोर्ड पर 'पिलिग्रिम फादर्स' की प्रसिद्ध घोषणा (1620) : हम ईश्वर की उपस्थिति में पूरी निष्ठा से परस्पर सहमति के साथ एकजुट होकर सिविल बॉडी पॉलिटिक के अभी रहने की घोषणा करते हैं।

1647

एश्री ऑफ दि पीपुल ऑफ इंग्लैंड : (एक अन्य प्लॉरिटन दस्तावेज, जो आर्मी ऑफ पार्लियामेंट से निकला) (1647)। इसमें भी मन की यही प्रवृत्ति इंगित होती है।

मिल्टन

1649 (लोगों की संप्रभुता)

पिलिग्रिम पादस इंग्लैंड के चर्च के प्लॉरिटन विद्रोहियों का एक जत्था, जो पेरेशन किए जाने से बचने तथा उत्तरी अमेरिका में जा बसने के लिए मेफलावर नामक जहाज से भाग निकला।

जॉन मिल्टन (1608-1674) : अंग्रेज कवि, 'पैराडाइज लॉस्ट' और 'पैराडाइज रिंड' के रचयिता

अपनी पुस्तक 'टेन्योर ऑफ किंग्स ऐंड मजिस्ट्रेट्स' (1649) में वह भी इसी प्रकार के सिद्धांतों का प्रतिपादन करता है। वह दृढ़ता से कहता है कि "सभी मनुष्य स्वाभाविक रूप से स्वतंत्र जन्म लेते हैं। वे परस्पर तकलीफ के कारण एक-दूसरे से जुड़ जाते हैं और इस अनुबंध के उल्लंघन अथवा विरोध का एकजुट होकर मुकाबला करते हैं। इसीलिए कस्बों, नगरों तथा कॉमनवेल्थों का जन्म हुआ!" आत्मरक्षा तथा सुरक्षा का यही अधिकार और शक्ति मूल रूप और स्वाभाविक रूप से उनमें से प्रत्येक में होती है। उन्होंने इन्हें राजाओं तथा मजिस्ट्रेटों को डिप्टी और कमिश्नर के रूप में सौंप दिया।

राजाओं तथा मजिस्ट्रेटों की शक्ति प्राप्त की हुई, स्थानांतरित और लोगों द्वारा सर्वजन हित के लिए विश्वासपूर्वक सौंप गए अधिकार के सिवा कुछ भी नहीं है, जो अभी भी बुनियादी तौर पर उसी में (यानी जनता में-से-) निहित होती है। यह सत्ता मूलरूप से अब भी उन्हीं में है और स्वाभाविक जन्मसिद्ध अधिकार का उल्लंघन किए बिना इसे उनसे छीना नहीं जा सकता। इस प्रकार, राष्ट्र अपनी स्वतंत्रता के अधिकार का उपयोग करके राजा का चयन कर सकते हैं और उन्हें पद से हटा सकते हैं, जिससे स्वतंत्रता के आधार पर कि वे किन में शासित होना सर्वोत्तम समझते हैं।

Theory of Divine Right of Kings: In this very age when great many think that  
there are now no principles of "sovereignty of the people"  
there were other theorists, who tried to prove that kingdom  
being enlarged families, the patrimonial authority of the head of  
household was transferred by primogeniture descent to the  
representatives of the first marriage who could prove to have  
rights over any nation. Consequently another one pronounced it  
was an indefeasible right, and the king was fully responsible  
to God alone! This was known as the "Divine  
Right of Kings!" This was known as the "Patrimonial Line!"

Thomas Hobbes: In his various works written in 1642 - 1650 - 1651  
he combined the doctrine of the unlimited authority of the  
sovereign, with the most solemn of original compact of the  
people. Hobbes' theory of absolutism - positive government -  
was secular and rationalistic rather than theological. He regarded the  
regarding the happiness of the community (as a whole) as the  
great end of government.

Hobbes' philosophy is cynical. According to him a man's  
impulses are naturally directed to his own preservation and  
pleasure and he can not care for anything but their grati-  
fication. Therefore man is understandable by Natural Law only  
if the natural state "every man is not his brother to all men";  
and the living among us is "a dangerous, solitary, poor, and  
afraid; full of fear and doubt; and always exposed  
to the life of death and death." Since we're not content  
to, hence the establishment of a supreme common power,  
the GOD!

Society is founded by "negotiation" i.e. by compact,  
or "invention" i.e. by mutual contract or compact.  
In our case, once the sovereign authority is established  
all must obey, anybody rebelling must perish. He should be  
destroyed.

He gives the rights of legislature, judiciary  
and executive - one and all to the sovereign. To be  
effective, he writes, "The sovereign power must be  
unlimited, irreclaimable and inviolable.  
Unlimited power may in itself give rise to mischief  
(but the worst of these is not to live in Civil War or anarchy).

हो सकता है, लेकिन इनसे जो सबसे बुरा हो सकता है, वह गृहयुद्ध अथवा अराजकता के समान बुरा नहीं होगा।”

उसकी राय में राजतंत्र, कुलीनतंत्र अथवा लोकतंत्र शक्ति में एक-दूसरे से भिन्न नहीं होते। व्यापक शांति और सुरक्षा संबंधी उनकी उपलब्धि जनता अथवा उनके अधीन लोगों की आज्ञाकारिता पर निर्भर होती है। बहरहाल, वह राजतंत्र को तरजीह देता है। उसकी राय में ‘सीमित राजतंत्र’ सर्वश्रेष्ठ है, लेकिन उसका बल इस बात पर है कि सोवरिन को धर्म तथा नागरिकों से संबंधित मामलों पर नियंत्रण रखना चाहिए और यह तय करना चाहिए कि कौन से सिद्धांत शांति के लिए अनुकूल हैं।

174

In his opinion, monarchy, aristocracy or democracy do not differ in their power. Their achievement lies in general peace and security rests on the obedience of the public or people they command. Anyhow in my 'monarchy' limited monarchy is the best in his opinion. But he perceives that the sovereign must regard certain exclusive right as well as civil affairs, and determine what certain are exclusive to peace.

Thus he holds a clear and valid doctrine of sovereignty while retaining the right of a social contract to govern the king or sovereign.

Sparta— [In his work *Treatise on Politics*, 1677] regarded man as originally having equal right over all things; hence the state of nature was a state of war. Men, led by their reason freely, combined their forces to establish Civil Government. As man had absolute power, hence the Sovereign himself has absolute (or) and the absolute power. In his opinion 'Right' and 'Power' are identical. Hence the sovereign being vested with the power has all the right (power) of each. Hence he favours 'absolute'.

Holland— [See of Holland and of Hobbes 1672]. In his opinion man is a sociable animal, naturally inclined towards family and peaceful life.

Expression of injuries and one man can inflict on another who has Civil Government, which is constituted (1) by a unanimous mutual consent of a number of men to make a common wealth; (2) by the resolution of the majority; (3) by certain rulers shall be placed in authority; (4) by a covenant between the North and the South Subjects that the former shall rule and the latter shall obey lawful command!

इस प्रकार सोवरिन के वैध सिद्धांत के प्रति उसके विचार स्पष्ट हैं, वहीं वह राजा अथवा सोवरिन के निर्माण के लिए एक सामाजिक संविदा की कल्पना (मिथ्या) कहानी को भी मान्य करता है।

## स्पिनोजा (1677)

मनुष्य की असामाजिकता (अपनी पुस्तक टेक्टेस पॉलिटिक्स, 1677) में वह मानता है कि मूल रूप से मनुष्य को सभी चीजों पर समान अधिकार है। लिहाजा, प्रकृति की स्थिति युद्ध की स्थिति है। मनुष्य अपने विवेक से प्रेरित होकर सिविल सरकार बनाने के लिए अपनी शक्तियों को स्वतंत्र रूप से संयुक्त करता है। चूँकि मनुष्य के पास निरपेक्ष शक्ति होती है, अतः इस प्रकार स्थापित सोवरिन के पास निरपेक्ष शक्तियाँ होती हैं। उसकी राय में, ‘अधिकार’ और ‘शक्ति’ एक ही है।

अतः ‘शक्ति’ से संपन्न सोवरिन के पास सभी ‘अधिकार’ अपने आप आ जाते हैं। इस प्रकार वह निरंकुशता का पक्ष लेता है।

## पुफेंडर

(लॉ ऑफ नेचर ऐंड नेशंस, 1672) : उसकी राय में मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है, जिसका परिवार और शांतिपूर्ण जीवन के प्रति स्वाभाविक रुझान होता है।

एक मनुष्य द्वारा दूसरे मनुष्य को दिए जानेवाले कष्ट के अनुभव से सिविल सरकार प्रेरित होती है, जिसका गठन किया जाता है—(1) एक कॉमन वेल्थ के गठन के लिए अनेक लोगों द्वारा परस्पर सर्वसम्मति से, (2) बहुसंख्यकों द्वारा इस संकल्प से कि कतिपय शासक को प्राधिकार में रखा जाएगा, (3) सरकार और प्रजा के बीच एक अनुबंध द्वारा इस संकल्प से कि सरकार शासन करेगी और प्रजा सभी विधिसम्मत आदेशों का पालन करेगी।

\* नोट : स्पिनोजा (1632-1677) द्वारा से प्रभावित डच दार्शनिक। उसने अपनी पुस्तक एथिक्स 1677 में यह विचार प्रकट किया कि मानव-जीवन (या प्रकृति) से ओत-प्रोत है। पुफेंडर या सैमुअल बैरन फान पुफेंडर (1632-1684) जर्मन विद्विता और इतिहासकार। उसका विचार था कि राज्य के कानून प्राकृतिक कानून में ही शामिल है।

Locke — [Two Treatises of Civil Government - 1690]

<u>State of Nature</u> :	<p>"No man has a natural right to govern."</p> <p>No perhaps the State of Nature — a state of freedom and equality in respect of jurisdiction and dominion, limited only by natural law or reason, which prohibit men from harming one another in life, health, liberty and possession; the punishment requisite by way of restraint or reparation being in everyone's hands.</p>
<u>Private Property</u> :	<p>"The living together according to reason without a common superior on earth with authority to judge between them is properly the State of Nature!"</p> <p>Every man has a natural right of property in his own person and in the product of his own labour exercised over the whole of nature. Personal land as man till, plants, improves, culti-vates, and can use the product of, so much is his property!</p>
<u>Property &amp; Civil Society</u> :	<p>According to him "property" is antecedent to "Civil Society!"</p> <p>But it appears man were in some sort of dangers and fears, and therefore they renounced their natural liberty in favor of civil liberty. In short, necessity, convenience, and inclination urged men into society.</p>
<u>Definition of Civil Society</u> :	<p>Those who are united into one body, and have a common established law and juries' courts to appeal to, with authority to decide controversies between them and provide officia-ries and a Civil Society.</p>
<u>Consent</u> :	<p>Consent is not an "original" of government. Consent was and could be the sole origin of any lawful government.</p> <p>The legislative Assembly is not absolutely arbitrary over the lives, liberties and property of the people, for it processes only the joint power which no separate members had prior to the formation of the Society, and which they resigned to it for their mutual and distinct purposes. The end of Law is not to abolish or restrain, but to preserve and enlarge freedom.</p>
<u>Law</u> :	<p>The legislative being only a fiduciary power for certain acts the people may remove or alter it when it violates the trust reposed in it.</p> <p>Thus the community always retains an supreme power.</p> <p><u>Ultimate sovereignty</u> / <u>of the People</u>! / or ultimate sovereignty, but does not assume it unless the government is dissolved.</p>

### लॉक

(सिविल गवर्नमेंट की दो संधियाँ, 1690)

"किसी भी व्यक्ति को शासन करने का प्राकृतिक अधिकार नहीं है।"

वह प्रकृति की अवस्था की व्याख्या करते हुए कहता है कि कार्यक्षेत्र और राज्य के संबंध में स्वतंत्रता और समानता की स्थिति, सिर्फ़ प्राकृतिक नियम अथवा तर्क तक सीमित है, जो जीवन, स्वास्थ्य, स्वतंत्रता तथा आधिपत्य में एक-दूसरे को नुकसान पहुँचाने से रोकता है। संयम अथवा क्षतिपूर्ति के जरिए दंड प्रत्येक व्यक्ति के हाथ में है।

प्रकृति की अवस्था

"विवेक के अनुसार इस प्रकार पृथ्वी पर साथ रहना कि जिसमें कोई श्रेष्ठ न माना जाता हो, जिसे लोगों के बीच भेदभाव करने का अधिकार न हो। यही प्राकृतिक अवस्था है।"

निजी संपत्ति

"प्रत्येक व्यक्ति को अपनी व्यक्तिगत संपत्ति रखने तथा प्राकृतिक संसाधनों का उपयोग कर उसने जो कुछ अपने परिश्रम से प्राप्त किया है, उस पर उसका प्राकृतिक अधिकार है। मनुष्य जितनी जरूरी जाता है, उपज प्राप्त करता है, उसमें सुधार करता है, खेती करता है, उसे उस उत्पाद के उपयोग का अधिकार है और इतनी ही उत्पक्षी संपत्ति है।"

संपत्ति और नागरिक समाज

उसके अनुसार 'संपत्ति' नागरिक समाज का पिछला रूप है।

नागरिक समाज की उत्पत्ति

लेकिन ऐसा लगता है कि मनुष्य किन्हीं खतरों और भयों में थे, इसीलिए उन्होंने नागरिक स्वतंत्रता के पक्ष में अपनी प्राकृतिक स्वतंत्रता को त्याग दिया। संशेष में, मनुष्य को आवश्यकता, सुविधा तथा रुद्धान ने 'समाज में प्रवेश' के लिए प्रेरित किया।

नागरिक समाज की परिभाषा

नागरिक समाज में जो लोग किसी एक संस्था के रूप में संगठित होते हैं, जिनका एक साझा स्थापित कानून होता है और जिसमें अपील की व्यवस्था होती है। उसे उनके बीच विवादों पर निर्णय लेने तथा अपराधियों को दंड देने का अधिकार होता है।

सहमति

सरकार की उत्पत्ति विजय से नहीं, सहमति से हुई, और किसी विधिसम्मत सरकार की उत्पत्ति का एकमात्र आधार यही हो सकता है। विधायिका, लोगों के जीवन, उनकी स्वतंत्रताओं तथा संपत्ति की निरपेक्ष रूप से निरंकुश नहीं हो सकती, क्योंकि उसके पास सिर्फ़ संयुक्त शक्ति होती है, जो समाज की चरना से पहले अलग-अलग सदस्यों के पास थी, और विशिष्ट तथा सीमित उद्देश्यों के लिए वे उसके अधीन थे।

कानून

"कानून का उद्देश्य स्वतंत्रता को समाप्त करना अथवा सीमित करना नहीं, बल्कि उसकी रक्षा करना और उसे बढ़ाना है।"

विधायिका

विधायिका कुछ निश्चित उद्देश्यों के लिए सिर्फ़ न्यायधारी सत्ता है, जो यदि इसमें न्यस्त किए गए विश्वास को खांडित करे, तो जनता द्वारा भंग या परिवर्तित की जा सकती है।

लोगों की निरपेक्ष संप्रभुता

सर्वोच्च शक्ति अथवा निरपेक्ष संप्रभुता हमेशा समुदाय के पास होती है, लेकिन वह तब तक उसे धारण नहीं करती, जब तक सरकार भंग न हो जाए।

Legislative & Executive: It is expedient that the legislative and executive powers should be in different hands, the latter being subordinate to the former.  
In a civil government, the powers are vested in an absolute monarch. There is no common judge with authority between him and his subjects.  
The forms of different governments in free societies are Democracy, Republic, or despotism in monarchies by other titles.

Right of Revolution!: "A revolution is justifiable when the government ceases to fulfil its part of contract — the protection of personal rights."

### Rousseau Rousseau:

Equality: No one should be rich enough to buy another nor poor enough to be forced to sell himself. Great inequalities pave the way for tyranny.

Property: The first man who, having enclosed a piece of land, thought of saying 'This is mine', and found people simple enough to believe him, was the true founder of Civil Society.  
Civil Society: What wars, Crimes, and horrors would have been spared to the race of Some one had exposed this imposture, and declared that the earth belonged to no one, its fruits to all.

## विधायिका और कार्यपालिका

निजी हितों की खातिर जनसामान्य के कल्याण की बलि को रोकने के लिए यह उचित है कि विधायी और कार्यपालिक अधिकार अलग-अलग हाथों में हों। कार्यपालिका को विधायिका के अधीन होना चाहिए।

जहाँ ये दोनों शक्तियाँ किसी निरंकुश राजा के हाथ में होती हैं, वहाँ नागरिक सरकार नहीं होती, क्योंकि उसके और उसकी प्रजा के बीच कोई अधिकार संपन्न साझा न्यायाधीश नहीं होता।

मुक्त समाज में जो विभिन्न प्रकार के कॉमनवेल्थ होते हैं, वे लोकतंत्र, कुलीनतंत्र, अथवा निर्वाचित राजतंत्र का मिला-जुला स्वरूप होते हैं।

————— : \* : —————

## क्रांति का अधिकार

"जब सरकार संविदा में निर्धारित अपनी भूमिका — व्यक्तिगत अधिकारों की सुरक्षा — निभाना छोड़ दे, तो ऐसी स्थिति में क्रांति औचित्यपूर्ण है।"

—रूसो

## समानता\*

किसी को भी इतना अमीर नहीं होना चाहिए कि वह किसी दूसरे को खरीद सके और किसी को भी इतना गरीब नहीं होना चाहिए कि वह खुद को बेचने को मजबूर हो जाए। अधिक असमानता से जुल्म का मार्ग प्रशस्त होता है।

————— : \* : —————

## संपत्ति और नागरिक समाज

वह पहला व्यक्ति, जिसने जमीन के एक टुकड़े को घेरकर यह कहने का सोचा कि 'यह मेरा है', और लोग इतने भोले निकले कि उन्होंने इसे मान लिया, वही व्यक्ति नागरिक समाज का वास्तविक संस्थापक था।

यदि किसी ने इस छल को उजागर कर घोषणा कर दी होती कि जमीन किसी की नहीं है, इसके फल पर सबका अधिकार है, तो मानव समाज न जाने कितने युद्ध, अपराध और वीभत्सताओं से बच जाता।

\* यह और अन्य उद्धरण रूसो के सोशल कॉटेंट से हैं।

"The man who meditates is a defeated animal."

Civil  
Law

Paving & the oppression of the weak ... the  
insecurity of all, the rich craftily devised rules  
of justice and peace, by which all should be  
guaranteed their possessions, and established a  
supreme ruler to enforce the laws.

This must have been the origin of society  
and of the law, which gave new chains to the  
weak, and new strength to the rich, finally  
destroyed natural liberty, and, for the profit of  
a few numberless men, fixed for ever the  
law of property and of inequality; converted a  
clever usurpation into an invincible right  
and subjected the whole human race hence-  
forward to labour, servitude and misery.

Re: inequality

But it is manifestly opposed to natural  
law that a handful of people should  
have superfluities while the furnished  
multitude lack the necessaries of  
life.

"वह व्यक्ति जो चिंतन करता है, एक दुष्ट जीव है।"

## सिविल कानून

कमजोरों के दमन और सब की असुरक्षा की बात कर अमीरों ने चालाकी से न्याय और शांति के नियम बना लिये, जिनके द्वारा सभी लोगों को संपत्ति की गारंटी दी जानी चाहिए। इन कानूनों को लागू करने के लिए उन्होंने एक सर्वोच्च शासक को स्थापित कर दिया।

समाज और कानून की उत्पत्ति निश्चय ही इसी प्रकार हुई होगी, जिसने कमजोरों को नई जंजीरों से बाँध दिया और अमीरों को नई ताकत मिल गई। इससे अंततः प्राकृतिक स्वतंत्रता नष्ट हो गई और कुछ नए महत्वाकांक्षी लोगों के फायदे के लिए संपत्ति का अधिकार और समानता सदा के लिए निर्धारित हो गई। फलस्वरूप, चालाकी से किया गया अवैध अधिग्रहण, एक चालाकी भरी लूट को एक अटल अधिकार में तब्दील कर दिया। इसने पूरी मानव जाति को मजदूर और गुलाम बनाकर उनकी दुर्दशा कर दी।

## संदर्भ : असमानताएँ

परंतु यह स्पष्ट रूप से प्राकृतिक नियम के विरुद्ध है कि कुछ मुट्ठी भर लोगों के पास सभी चीजें इफरात में हों और जनसाधारण के पास जीवन के लिए जरूरी चीजें भी न हों।

date of  
his  
writing

Emile & Social Contract, both published in 1762, the former burnt in Paris. Rousseau narrowly escaping arrest, the latter being publicly burnt in Geneva, his native place whence he expected greater response.

sovereignty  
of  
monarchs  
to  
that of  
the people

Rousseau retains the French idea of unity and centralisation; but while in the Seventeenth Century the State (or sovereignty) was confounded with the monarchy, Rousseau's influence caused it in the 18th Century to be identified with the people.

Pact

By pact men exchange natural liberty for civil liberty and moral liberty.

Right  
of  
private  
occupancy

Right of property:-  
Its justification depends on these conditions:  
1. that the land is uninhabited; i.e. that a man occupies only the area required for subsistence, & that he takes possession of it not by an empty ceremony, but by labour and cultivation.

## उनके लेखन की नियति

ईमाइल और सोशल कॉण्ट्रैक्ट, दोनों का प्रकाशन 1762 में हुआ। पहली पुस्तक को पेरिस में जलाया गया। रूसो बड़ी मुश्किल से गिरफ्तारी से बचा। इसके बाद दोनों पुस्तकों को जेनेवा में जलाया गया। यह उसका गृहनगर था और वहाँ से उसे भारी समर्थन मिलने की उम्मीद थी।

शासक की प्रभुसत्ता से लोगों की प्रभुसत्ता तक रूसो ने एकता और केंद्रीयकरण के फ्रांसीसी विचार को कायम रखा; लेकिन सत्रहवीं शताब्दी में राज्य का (अथवा प्रभुसत्ता) राजतंत्र के साथ घालमेल हो गया। रूसो के प्रभाव से 18वीं शताब्दी में यह प्रभुसत्ता लोगों की मानी जाने लगी।\*

## समझौता

समझौते के जरिए मनुष्य ने नागरिक स्वतंत्रता और नैतिक स्वतंत्रता के बदले प्राकृतिक स्वतंत्रता दे दी।

----- : \* : -----

## प्रथम स्वामित्व का अधिकार

इसका औचित्य इन स्थितियों पर निर्भर करता है—(अ) यह कि भूमि पर कोई रहता न हो; (ब) यह कि किसी व्यक्ति ने उतनी ही जीवन पर अधिकार किया हो, जितनी उसके गुजारे के लिए जरूरी है; कि वह इस पर महज खोखली औपचारिकता के जरिए नहीं, बल्कि मेहनत और खेती-बाड़ी करने के नाते दखल रखता है। (स) यह कि वह इसका आधिपत्य किसी खोखले दस्तूर से नहीं, बल्कि परिश्रम और उस पर खेती कर के ले।

179

Religion :— { Rousseau places even religion under the  
tyranny of the sovereign.

Introductory Note.—

I wish to enquire whether, taking men as they are now, as they can be made, it is possible to establish some just and certain rule of administration in civil affairs....

I shall be asked whether I am a prince or a legislator that I write on politics. I reply that I am not. If I were one, I should not waste time in saying what ought to be done, I should do it or remain silent.

Man is born free, and everywhere he is in chains.

Shaking off the yoke of slavery by force!  
I should say that so long as a people is compelled to obey and does obey, it does well; but that, so soon as it can shake off the yoke and does shake it off, it does better; for, if men recover their freedom by virtue of the same right (i.e. force) by which it was taken away, either they are justified in recovering it, or there was no justification for depriving them of it.

## धर्म

रूसो धर्म तक को सोवरिन के अत्याचार के अंतर्गत रखता है।\*

## परिचयात्मक टिप्पणी

मैं यह जानना चाहता हूँ कि लोग जैसे हैं, उन्हें वैसा ही स्वीकार कर और कानून जैसे बने हैं उन्हें वैसा ही मंजूर कर, क्या नागरिक मामलों में प्रशासन का कोई न्यायपूर्ण और निश्चित नियम स्थापित किया जाना संभव है।

“...मुझसे पूछा जाएगा कि क्या मैं कोई प्रिंस अथवा लेजिस्लेटर हूँ कि राजनीति पर लिखूँ? इसका जबाब मैं ‘न’ में दूँगा। अगर मैं वो (प्रिंस या लेजिस्लेटर) होता, तो यह कहने में वक्त बरबाद नहीं करता कि क्या किया जाना चाहिए। मैं इसे कर देता या चुप रहता।

“मनुष्य जन्म से स्वतंत्र होता है, लेकिन हर जगह वह बेड़ियों में जकड़ा हुआ है।”

## दासता के जुए को ताकत से उतार फेंको

मैं कहूँगा कि जब तक किसी देश के लोगों को आज्ञा मानने के लिए मजबूर किया जाता है और वे इसे मानते हैं, तो यह ठीक है, लेकिन जैसे ही वे इस जुए को ताकत से उतार कर फेंक सकने में समर्थ होते हैं और इसे उतार फेंकते हैं, तो यह उससे बेहतर है, क्योंकि यदि मनुष्य इसी अधिकार (अर्थात् ताकत) के बल पर अपनी स्वतंत्रता वापस प्राप्त करते हैं, जिस अधिकार से यह उनसे छीनी गई होती है तो या तो उनका ऐसा न्यायसंगत है या उनसे इसे छीन लिये जाने का कोई औचित्य नहीं था।

180

*force* | "Power which is acquired by violence is only a usurpation, and lasts so long as the force of him who commands, prevails over that of those who obey; so that if the latter become the strongest in their turn and shake off the yoke, they do so with as much right and justice as the others who had imposed it on them. The same law (of force) which has made the authority then unmakes it; it is the law of the strongest."

Diderot. Encyclopédie  
"Authority"

| Slaves lose everything in  
their bonds, even the desire  
to escape from them!

The Right of the Strongest } "Obliging the powers that be. If that means, Yield to force, no precept is good but superfluous; I reply that it will never be violated.

Right of slavery } "Do subjects, then, give up their persons on condition that their property also shall be taken? I do not see what is left for them?"

"It will be said that the despot secures to his subjects civil peace. Be it so; but what do they gain by that,

## ताकत

“जो ताकत हिंसा से प्राप्त की जाती है, वह बलपूर्वक अधिग्रहण है, और यह तब तक ही चलती है, जब तक हड़पने वाले की आज्ञा मानने वाले उसकी बात मानते हैं; वे लोग फिर सबसे ताकतवर बन जाते हैं और जुए को उतार फेंकते हैं। वे यह कार्य उतने ही अधिकार और न्यायपूर्वक करते हैं, जितना कि उन पर यह लादनेवाले ने किया था। वही कानून (ताकत का), जिसने प्राधिकार को बनाया था, उसे नष्ट कर देता है। यही सबसे ताकतवर का कानून है।

—दिदरो, इनसाइक्लोपीडिया  
'अथारटी'

दास लोग अपने बंधनों में सबकुछ खो देते हैं, यहाँ तक कि उनसे निकलने की इच्छा भी।

————— : \* : —————

## सबसे ताकतवर का अधिकार

“जो सत्ता में हो, उसकी आज्ञा मानो। अगर इसका मतलब ताकत के सामने झुकना है, तो यह उपदेश अच्छा, लेकिन फिजूल है; मेरा जवाब है कि इसका कभी उल्लंघन नहीं होगा।”

————— : \* : —————

## दासता का अधिकार

“तो क्या, तब जनता इस शर्त पर अपना व्यक्तिगत अधिकार छोड़ देती है कि उसकी संपत्ति भी ले ली जाएगी? मुझे दिखाई नहीं देता कि उनके लिए क्या बचा है?”

“यह कहा जाएगा कि तानाशाह अपनी प्रजा को नागरिक शांति प्रदान करता है। हो सकता है,

(शेष अगले पृष्ठ पर)

\* नोट : डेनिस दिदरो (1713-1784) प्रबोधन काल का फ्रांसीसी दार्शनिक

181

If he were which his ambition brings upon them,  
Together with his insatiable greed and the vocations  
of his administration, harass them more than their  
own dissensions would?

To say that a man gives himself for nothing  
is to say what is absurd and inconceivable.

Whether addresses by a man to a man, or by a  
man to a nation, such a speech as this will always be  
equally foolish: "I make an agreement with you  
wholly at your expense and wholly  
for my benefit, and I shall observe  
it as long as I please, whilst you  
also shall observe it as long as I  
please."

Equality:

If then you wish to give stability to the  
State, bring the two extremes as near  
together as possible; tolerate neither rich nor  
beggars. These two conditions, naturally  
inseparable, are equally fatal to the general  
welfare; from the one class springing tyrants, from  
the other, the supporters of tyranny; it is always  
carried on; the one buys the other.

लेकिन यदि उसकी महत्वाकांक्षाओं के कारण उन पर युद्ध थोपे जाते हों और उसके लालच का अंत न हो और उसका प्रशासन जटिल हो, उन्हें उतना परेशान करता हो, जितना कि उनकी असहमति भी नहीं करती; तो फिर इससे उन्हें क्या मिलता है?

“यह कहना कि मनुष्य बिना कुछ प्राप्त किए स्वयं को सौंप देता है, बेहूदा और अकल्पनीय बात है। इस तरह की बात व्यक्ति किसी व्यक्ति से अथवा व्यक्ति राष्ट्र से कहे तो यह उतनी ही मूर्खतापूर्ण होगी”—मैं पूरी तरह तुम्हारी कीमत पर और पूरी तरह अपने फायदे के लिए तुमसे यह समझौता करता हूँ और जब तक मैं चाहूँ, इसका पालन करूँगा और जब तक तुम चाहो, इसका पालन करोगे।

————— : \* : —————

## समानता

यदि तुम राज्य को स्थायित्व देना चाहते हो, तो दोनों अिथतियों को यथासंभव पास ले आओ; न अमीरों को सहन करो, न भिखारियों को। ये स्वाभाविक रूप से अभिन्न स्थितियाँ—जनकल्याण के लिए समान रूप से घातक हैं। एक वर्ग से जालिम पैदा होते हैं, तो दूसरे वर्ग से जालिमों के हिमायती; इन्हीं दोनों के बीच से लोक स्वतंत्रता का सौदा होता है। एक खरीदता है, दूसरा बेचता है।

————— : \* : —————

182

Hail lays waste a few cantons, but it rarely causes scarcely. Riots and civil wars really settle the chief scenes; but they do not produce the real misfortunes of nations, which may be abated, while it is being disputed who shall tyrannize over them. It is from their permanent conditions that their real prosperity or calamities spring; when all is left crushed under the yoke, it is then that everything perishes; it is then that the chief men, destroying men at their leisure, "where they make a solitude, they call it peace." "P.P. 176"

तेज बारिश से कुछ भू-खंड नष्ट हो जाते हैं, लेकिन उनकी कमी कभी नहीं होती। फसादों और गृहयुद्धों से मुखिया लोग बहुत ज्यादा चौकन्ने हो जाते हैं, लेकिन वे राष्ट्रों के लिए ऐसे वास्तविक संकट पैदा नहीं करते, जब तक इस बात को लेकर विवाद चलता रहता है कि कौन उन परनिरंकुश शासन न करे। उनकी वास्तविक समृद्धि या विपदाएँ तो उनकी स्थायी स्थितियों से पैदा होती हैं, जब सबकुछ जूते तले कुचलकर रख दिया जाता है, तभी सबकुछ नष्ट हो जाता है, तभी ये शासक इत्मीनान से सबकुछ नष्ट करने के बाद एक मुर्दा खापेशी पैदा कर देते हैं, जिसे वे 'शांति' कहते हैं।

(प. 176)

— : \* : —

*French Revolution:-*

183

America | American war of independence began.  
| effect on the French Monarchy. (1770)  
  
Treaty | Court or minister making anything under the use of the  
| royal. The king<sup>1</sup>, framed by advice of his council  
| used his own discretion and sent them to the Parliament.  
| which he rescripted; to make them were recognized  
| by the Parliament they were not operative.  
The court was told that the Parliament,  
authorities went no further than to show reasons  
against it, reserving to itself the right of determining  
whether the reasons were well or ill founded and  
in consequence thereof, either to sustain the act  
as a matter of choice, or to refuse to be carried out  
as a matter of authority.  
The Parliament on the other hand  
insisted for having the right of rejection.  
  
M. Calonne | The minister wanted money.  
He was aware of the Party distribution of the Parliament  
and with robust a voice, he called  
an "Assembly of Notables" (1787).  
It was not a <sup>Statis</sup> Council which was  
elected but all the members were nominated  
by the King and Consisted of 160 members. Even  
then he could not get the majority support. He  
divided it into 7 committees. Every  
committee consisting of 20 members.  
Every question was to be decided by majority  
vote in committee and by majority committee's  
votes in Assembly. He tried to have 11 members  
whom he could trust in case of any four  
Committees, thus to have a majority. But  
his devices failed.

## फ्रांसीसी क्रांति और अमेरिका

अमेरिका के स्वतंत्रता संग्राम का फ्रांस की स्थितियों (1776) पर बहुत प्रभाव हुआ।

### कर

'किंग' के नाम का उपयोग कर जो अदालत या मिनिस्ट्री काम कर रही थी, उसने अपनी मनमर्जी से करों के फरमान बनाकर पंजीयन के लिए पार्लियामेंट को भेज दिए, क्योंकि पार्लियामेंट में पंजीकृत हुए बिना वे लागू नहीं हो सकते थे। अदालत ने आग्रह किया कि पार्लियामेंट का प्राधिकार इसके विरुद्ध तर्क न दे। इस प्रकार उसने इस बात को तय करने का अधिकार अपने पास सुरक्षित कर लिया कि तर्क सही है या गलत। फलस्वरूप, फरमान को इच्छा से या अधिकार के साथ वापस लेने अथवा अपंजीकृत करने का अधिकार उसके पास रहा।

इसके विपरीत, पार्लियामेंट निरस्त करने के अधिकार पर अड़ी रही।

मंत्री, एम. केलोने को पैसा चाहिए था। उसे करों के मामले में पार्लियामेंट के अडियल रवैए का पता था। उसने 'असेंबली ऑफ नोटेबल्स' बुलाई (1787)। स्टेट्स-जनरल का निर्वाचन नहीं हुआ था, बल्कि सभी सदस्य किंग द्वारा नामांकित थे, जिनकी संख्या 141 थी। इसके बावजूद उसे बहुमत का समर्थन नहीं मिल सका। उसने इसे 7 कमेटियों में विभाजित कर दिया। प्रत्येक कमेटी में 20 सदस्य थे। कमेटियों में हर प्रश्न पर फैसला बहुमत वोटों से और असेंबली में यह बहुमत कमेटी वोटों से होता था। उसने ऐसे 11 सदस्यों का समर्थन प्राप्त करने की कोशिश की, जिन पर वह प्रत्येक अथवा/किसी चार कमेटियों में विश्वास कर सकता हो, और इस प्रकार उसे बहुमत प्राप्त हो जाए, लेकिन उसकी युक्तियाँ नाकाम हो गईं।

184

M. de Lafayette was vice president of  
Second convilile. He charged  
~~Colone~~ M. Calonne for having sold  
Crown land at the amount of two  
millions of livres. He gave it in writing  
too. Sometimes afterwards M. Calonne  
was dismissed.

The Archibishop of Tolouse was  
appointed the Prime Minister and  
Finance Minister. He placed  
before the Parliament two  
Taxes — Stamp Tax and a  
sort of land-tax. The Parliament  
returned for answer

that with such a revenue as  
the nation then supported the  
name of taxes ought not to be  
mentionned but for the purpose  
reducing them.  
and threw both the edicts out.  
Then they were moved to Versailles,  
where the king held 'a Bed of Justice'  
and excommunicated those edicts. Parliament  
returned to Paris. Held a session there.  
Ordered the registration to be struck off.  
Declaring everything done at Versailles to  
be illegal. All were seized with 'lettres de  
cachet' and exiled. And afterwards  
they were recalled. Again the same  
edicts were placed before them.

एम. दे लाफायते सेकेंड कमेटी का वाइस प्रेसीडेंट था। उसने एम. केलोने पर दो मिलियन जिंदगियों की कीमत पर क्राउन लैंड को बेचने का आरोप लगाया। उसने यह लिखित में भी दिया। कुछ समय पश्चात् एम. केलोने को बर्खास्त कर दिया गया।

टोलाउस के आचिवाप को प्राइम मिनिस्टर और फायनेंस मिनिस्टर नियुक्त किया गया। उसने पार्लियामेंट के समक्ष दो टैक्स—स्टैंप टैक्स और एक प्रकार का लैंड टैक्स प्रस्तुत किए। पार्लियामेंट उत्तर के लिए लौट आई।

यह एक ऐसा रेवेन्यू था, जिसको उस समय राष्ट्र का समर्थन प्राप्त था। कम करने के उद्देश्य के अलावा टैक्सों के नाम उल्लंघित नहीं किए जाने चाहिए, ऐसा कहकर दोनों फरमान निरस्त कर दिए गए। इसके बाद उन्हें वर्सेलेस भेजने का आदेश दिया गया, जहाँ किंग ने इसे 'गलत न्याय' माना और उन फरमानों को पंजीकृत कर दिया। पार्लियामेंट वापस पेरिस आ गई। वहाँ इसका एक सत्र हुआ। पंजीकरण को समाप्त करने का आदेश दिया गया और यह घोषित किया गया कि वर्सेलेस में की गई हर चीज अवैधानिक है। सभी को 'लेटर डी के चेट्स एंड एक्जाइल्ड' दिए गए।

Then arose the question of calling a States-general.  
The King promised with the Parliament. And  
the King promised with the Parliament. And  
ministers opposed. They put forth a new  
proposal for the formation of a 'Full Court'.  
It was opposed on two grounds. First,  
for principles' sake Govt had no right  
to change itself. Such a precedent will  
be harmful. Secondly on the question of form  
it was contended that it was nothing but  
a enlarged Cabinet.  
The Parliament rejected this proposal.  
It was besieged by armed forces. For  
many days they were there. Still they  
persevered. Then many of them were  
arrested and sent to different jails.  
A delegation from Brittany came to  
remonstrate against it. They were sent to  
Bastille.

"Assembly of notables" again recalled,  
decided to follow the same course as adopted in  
1614 to call States-General.  
Parliament decided that 1200  
members should be elected, 600 from Commons,  
300 from Clergy and 300 from Nobility.  
States-General should meet in  
May 1789. Nobility and Clergy  
went to two different chambers.

इसके बाद उन्हें वापस ले लिया गया। इन्हीं फरमानों को पुनः उनके समक्ष रखा गया। इसके बाद स्टेट्स जनरल बुलाने का प्रश्न उठा। किंग ने पार्लियामेंट को वचन दिया, लेकिन मिनिस्ट्री ने इसका विरोध किया। उन्होंने एक 'फुल कोर्ट' के गठन का नया प्रस्ताव प्रस्तुत किया। इसका दो आधारों पर विरोध किया गया—प्रथम, सिद्धांतों की खातिर सरकार को स्वयं को बदलने का अधिकार नहीं है। इस तरह की नजीर नुकसानदेह होगी। दूसरा आधार यह था कि स्वरूप के प्रश्न पर यह कहा गया कि यह विस्तारित कैबिनेट के सिवा कुछ नहीं है। पार्लियामेंट ने इस प्रस्ताव को ठुकरा दिया। उसे सशस्त्र बलों ने घेर लिया। कई दिन तक वे वहाँ रहीं। फिर भी वे जिद पर अड़े रहे। तब उनमें से अनेक को गिरफ्तार कर विभिन्न जेलों में भेज दिया गया। ब्रिटेन से एक शिष्टमंडल इसका विरोध करने आया। उन्हें बेस्टाइल भेज दिया गया।

पुनः बुलाई गई 'असेंबली ऑफ नोटेबल्स' ने वही रास्ता अपनाने का निर्णय लिया, जो 1614 में अपनाया गया था। उसने स्टेट्स जनरल बुलाई।

'पार्लियामेंट ने फैसला किया कि 1,200 सदस्यों का निर्वाचन किया जाना चाहिए, जिनमें 600 जनसामान्य से हों, 300 पादरियों से और 300 अभिजात वर्ग से।'

स्टेट्स जनरल की बैठक मई 1789 में हुई। अभिजात और पादरी दो अलग-अलग चैंबरों में गए।

186

The third estate or the Commons refused to recognize this right of the clergy and nobility and declared themselves to be the 'Representatives of the Nation' denying the others any right whatsoever in any other capacity than the National representatives sitting alongside them in the same chamber. Hence the Habs General became the 'National Assembly'. They sent invitations to the chamber. Majority of Clergy came over to them. 45 of the Aristocracy also joined them, then their number increased to eighty and afterwards still higher.

थर्ड स्टेट अथवा कॉमंस ने पादरियों और अभिजात वर्ग के इन अधिकारों को मानने से इनकार कर दिया और स्वयं को 'राष्ट्र का प्रतिनिधि' घोषित कर दिया। उन्होंने अन्य लोगों को एक ही चैंबर में उनके साथ राष्ट्रीय प्रतिनिधि के रूप में बैठने के अलावा किसी भी अन्य अधिकार से वंचित कर दिया। इस प्रकार स्टेट्स जनरल नेशनल असेंबली बन गई। उन्होंने अन्य चैंबर को आमंत्रण भेजे। अधिकतर पादरी उनके पास आए; 45 अभिजात वर्ग के लोग उनसे जुड़ गए। बाद में उनकी संख्या बढ़कर 80 और फिर इससे भी ज्यादा हो गई।

187

Tennis court oath  
The malevolent & profligate nobility and clergy would have thrown the national treasury. The complaint with ministering the door of the chamber was that in the face of the Representatives of the Nation and were granted by militia. They then proceeded to a tennis court in a body and took an oath never to refer to until they had established a constitution.

In next day the chamber was again thrown open to them. And suddenly King's troops were mobilized & besiege Paris. The unarmed Parisian mob attacked Bastille; and Bastille was taken. 14<sup>th</sup> July 1789

Bastille:  
Versailles:  
5<sup>th</sup> Oct 1789. Thousands of men and women proceeded towards Versailles to demand satisfaction from "Garde du Corps" for their insolent behaviour in connection with national cockade. It is known as versailles expedition. As a result further developments the king was brought to Paris.

## टेनिस कोर्ट शपथ

अभिजात और पादरी वर्ग के असंतुष्ट लोग नेशनल असेंबली का तख्ता पलट करना चाहते थे। उन्होंने मिनिस्ट्री के साथ मिलकर षड्यंत्र किया। रिप्रजेंटेटिव ऑफ नेशन के लिए चैंबर के दरवाजे बंद कर दिए गए। फिर वे एकजुट होकर टेनिस कोर्ट की ओर गए और उन्होंने शपथ ली कि वे एक राष्ट्रीय संविधान की स्थापना तक अलग नहीं होंगे।

## बेस्टिले

अगले दिन चैंबर उनके लिए फिर खोल दिया गया परंतु 3,000 सैनिकों को पेरिस की घेराबंदी के लिए लामबंद किया गया। निशस्त्र पेरिस की भीड़ ने बेस्टिले पर हमला कर उस पर कब्जा कर लिया। (14 जुलाई, 1789)

## वर्सैल्स

(5 अक्टूबर, 1789)

हजारों महिलाएँ और पुरुष नेशनल कॉकेड के मामले में गर्दे इयु कॉप्स के अभद्र व्यवहार के लिए उससे क्षमा माँगने का आग्रह करने वर्सैल्स की ओर बढ़े। इसे 'वर्सैल्स अभियान' कहा जाता है। इसके बाद हुए घटनाक्रम के बाद किंग को पेरिस लाया गया।

The wisdom of every country when properly exerted, is sufficient for all its purposes,  
that if it chose wholly at the will of a government was  
to have a right to be a republic, it had a right,  
king. We have no longer any occasion to say be  
some of these Ministers Earl of Shrewsbury.

प्रत्येक देश की समझ का जब सही ढंग से उपयोग किया जाता है, तो इसके सभी उद्देश्यों को पूरा करने के लिए यह पर्याप्त होता है।

— आर.एस. ऑफ मैन (पृ. 112)

————— : \* : —————

सरकार का स्वरूप कैसा हो, यह हमेशा राष्ट्र द्वारा तथ किया जाता है। यदि यह राजतंत्र का चुनाव करता है, तो उसे ऐसा करने का अधिकार है और बाद में अगर यह रिपब्लिकन होना चाहे, तो उसे रिपब्लिकन होने का अधिकार है और राजा से कह दिया जाए, “हमारे पास तुम्हें देने को कोई अवसर नहीं है।”

— हाउस ऑफ लॉडर्स, मिनिस्टर अलं ऑफ शेलबर्न

————— : \* : —————

189

King:

If there existed a man so transcendently wise above all others, that his wisdom were necessary to instruct a nation, some reason might be offered for monarchical; but when we cast our eye about a country and observe how every part under God's it's own affords; and when we look around the world and see that of all men in it, the wise & king are the most insignificant in capacity, our reason fails to ask us — what are these men kept for? 112.

Liberator:

If to expose the fraud and imposition of monarchy and every species of hereditary government to lessen the oppression of man — to propose plans for the education of children in infancy, and the comfortable support of the aged and infirm — to endeavour to conciliate nations to each other — to extirpate the horrid practice of war — to promote universal peace, civilization and commerce — and to break the chains of political superstition and raise degraded man to his proper rank. If these things be libelous, let me live the life of a liberator, and let the name of "Liberator" be engraven on my tomb!

————— : o : ————— 21

## किंग

यदि कोई ऐसा व्यक्ति हो, जो बाकी सभी लोगों से बहुत ज्यादा समझदार हो, तो यह जरूरी है कि उसकी समझ से राष्ट्र को निर्देश मिले, राजतंत्र को कुछ ज्ञान प्राप्त हो; लेकिन जब हम किसी देश पर नजर डालते हैं, तो देखते हैं कि किस तरह हर एक व्यक्ति और वर्ग अपने ही मामलों को समझता है; और जब हम दुनिया पर नजर डालते हैं, तो सभी लोग देखते हैं कि राजाओं की नस्ल अपनी क्षमता में सबसे महत्वहीन है। हमारा विवेक यह नहीं पूछता कि ये लोग किसलिए रखे गए हैं?

————— : \* : —————

## लिबलर

“राजशाही तथा हर प्रकार की वंशानुगत सरकार द्वारा और हर प्रकार की वंशानुगत सरकारों की धोखेबाजी को उजागर करना, उनके द्वारा थोपे जानेवाले करों को कम करने को कहना और उनके द्वारा किए जानेवाले दमन को कम करने का प्रयास करना—असहाय बच्चों के लिए शिक्षा की योजना प्रस्तावित करने और वृद्ध तथा पीड़ित लोगों की सहायता के लिए योजना तैयार करना—राष्ट्रों को एक-दूसरे से सहमत करने का प्रयास करना—युद्ध की भयंकर परंपरा को समाप्त करना, विश्व में शांति, सभ्यता और व्यापार लाना—राजनीति अंधविश्वास की जंजीरों तोड़ना और दबे-कुचले व्यक्ति को ऊपर उठाना, यदि ये चीजें अवमानना हैं, तो फिर मुझे लिबलर का जीवन जीने दो, और मेरी कब्र पर ‘लिबलर’ (अपमानकर्ता) नाम खुदवाया जाए।”

————— : \* : —————

190

Point when principle and  
not place is the energetic cause  
of action, a man I find, is  
everywhere the same.

Death:—  
If we were immortal we should  
all be miserable; no doubt it is  
hard to die, but it is sweet to think that  
we shall not live for ever.  
[pp.45. Comte]

Socialism  
"is now each according  
to his ability, to each according  
to his need."

Audacity is the ~~soul~~ soul &  
Soulless in Revolution  
"Action, Action! Poor first  
discreet Dandia!"

लेकिन जब स्थान नहीं बल्कि सिद्धांत कर्म को ऊर्जस्वित करनेवाला कारण बन जाता है तो मैं देखता हूँ कि आदमी हर जगह एक ही जैसा हो जाता है।

————— : \* : —————

## मौत

अगर हम अमर होते, तो हमारी जिंदगी दुःखदायी होती। बेशक मरना कठिन है, लेकिन यह सोचकर अच्छा लगता है कि हम हमेशा जीवित नहीं रहेंगे।

————— : \* : —————

## सामाजिक व्यवस्था

“प्रत्येक से उसकी योग्यता के अनुसार काम लिया जाए और प्रत्येक को उसकी जरूरत के अनुसार दिया जाए।”

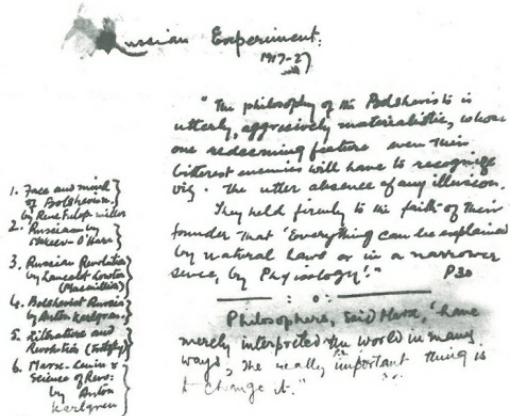
————— : \* : —————

क्रांति में दुःसाहस ही सफलता का मूलमंत्र है।

————— : \* : —————

दांतों की कारबाई। पहले ताकत, चर्चा बाद में, डेन्टन ने कहा।

नोट : जॉर्ज जाक दांतों (1769-1794) क्रांतिकारी, प्रखर वक्ता और क्रांतिकारी क्रांति के सबसे रैडिकल नेताओं में से एक। राजशाही की, जो बाद में क्रांतिकारी आतंक कायम करने का साधन बन गई।



## रूसी प्रयोग

1917-27

1. फेस ऐंड माइंड ऑफ बोल्शेविज्म

लेखक—रेने फुलोप-मिलर

2. रशिया

लेखक—माकीव-ओर हारा

3. रशियन रिवॉल्यूशन

लेखक—लेसेलोट लाउटन (मेकमिलियन)

4. बोल्शेविक रशिया

लेखक—एंटन कार्लग्रीन

5. लिटरेचर ऐंड रिवॉल्यूशन

लेखक—ट्राट्स्की

6. मार्क्स—लेनिन ऐंड साइंस ऑफ रिवॉल्यूशन

लेखक—एंटन कार्लग्रीन

“बोल्शेविकों का दर्शन अत्यधिक आक्रामक रूप से भौतिकवादी है, जिसमें एक बात ऐसी है कि जिसे सबसे कटु विरोधी भी स्वीकार करेंगे। वह है, इसमें भ्रम का नितांत अभाव।” (मुक्तिदायी विशेषता)

उन्हें अपने संस्थापक की इस बात में पवका भरोसा है कि “प्रत्येक चीज की व्याख्या प्राकृतिक नियमों अथवा एक संकीर्ण अर्थ में, शरीर-क्रिया विज्ञान (Physiology) द्वारा की जा सकती है।”

मार्क्स ने कहा, “दर्शनशास्त्रियों ने विश्व की सिर्फ बहुत तरह से व्याख्या की है। असली महत्वपूर्ण बात है—उसे बदलना।”

192 Religion and Socialism.  
Religion is an opium for  
mankind " said Marx.

"All idealistic considerations lead in the end to a kind of conception of Divinity, and art, therefore, pure non-sense in the eyes of Marxists. Even Hegel saw in God the concrete form of every thing good and reasonable "as" also the world; the idealist theory must put everything on the shoulders of his unfortunate gray beard, who, according to the teaching of his worshippers, is perfect; and who in addition to Adam, created fleas and harlots, murders and rapists, hunger and misery, plague and vodka, in order to punish the sinners whom he himself has created, and who sin in accordance with his will.... From the scientific standpoint this theory leads to absurdity. The only scientific explanation of all the phenomena of the world is supplied by absolute materialism. [ (P. 32.) Bakkeren ]

According to them,  
In "the beginning Nature; from it life;  
and from life, thought and all the manifestation  
we call mental or moral phenomena. There  
is no such thing as Soul, and Mind is nothing  
but a function of matter, organized in a particular  
way. . 33.

## धर्म और समाजवाद

मार्क्स ने कहा, "धर्म मानव जाति के लिए अफीम है।"

"सभी आदर्शवादी (भाववादी) विचार अंत में एक प्रकार की दिव्यता की अवधारणा की ओर ले जाते हैं। लिहाजा वे मार्क्स की नजर में कोरी बकवास हैं। यहाँ तक कि हीगल ने ईश्वर में हर अच्छी और चीज का ठोस रूप देखा जो दुनिया को शासित करती है; आदर्शवादी सिद्धांत को उसकी पक्की हुई अभागी दाढ़ी (अर्थात् ईश्वर-स.) के कंधे पर रख देना चाहिए, जो उसके पुजारियों की सीरत के अनुसार परिपूर्ण है, और जिसने आदम के अलावा और कातिलों और वेश्याओं, कोढ़ियों, भूख और कंजूसी, प्लेग और वोडवा को इसलिए बनाया कि वह उन पापियों को दंडित कर सके, जिन्हें उसने स्वयं बनाया था, और जो उसकी इच्छा के अनुरूप पाप करते हैं—वैज्ञानिक दृष्टि से यह सिद्धांत बेतुका है। विश्व की सभी चीजों की एकमात्र वैज्ञानिक व्याख्या निरपेक्ष भौतिकवाद द्वारा की गई है।

————— : \* : —————

उनके अनुसार, प्रारंभ में प्रकृति ने अपने जीवन से, जीवन से विचार और फिर उससे सभी स्वरूप निर्मित किए, जिन्हें हम मानसिक अथवा प्राकृतिक परिघटना कहते हैं। आत्मा जैसी कोई चीज है ही नहीं और मनः चेतना पदार्थ की एक खास ढंग से संगठित एक क्रिया के अलावा और कुछ नहीं है।

193.

Mark on insurrection. —

Firstly: — "never play with insurrection if there is no determination to drive it to a victory and (literally to face all the consequences of the play). An insurrection is an equation with very indefinite magnitudes, the value of which may change every day. The forces to be opposed have all the advantages of organization, discipline and traditional authority. If the rebels cannot bring great forces to bear against their antagonists, they will be crushed and destroyed."

Secondly: — The insurrection once started, it is necessary to act with the utmost determination and not over to the offensive. The definitive is the death of every armed rising; it perishes before it has measured forces with the enemy. The anti-slavery must be reinforced while their soldiers are still scattered, and new processes, however small, must be attained daily; the moral ascendancy, preceding the first success, must be kept up. One must rally to the side of insurrection the vacillating elements, which always follow us stronger, and which always look out for the safer side. — In other word, act according to the words of Stanton — the greatest master of Revolutionary policy yet known. — And again — and again and yet again  
Indefinitely. —

## क्रांति के विषय में मार्क्स के विचार

पहली बात, यदि क्रांति को उसके अंतिम परिणाम (अर्थात् इस खेल के सभी परिणामों) तक ले जाने का संकल्प न हो तो यह खेल कभी मत खेलो। क्रांति का समीकरण और आकार बहुत अनिश्चित होता है, जिसका मूल्य रोजाना बदल जाता है। जिन ताकतों का विरोध करना होता है, उनके पास संगठन की ताकत के साथ अनुशासन और पारंपरिक अस्थियार होता है। परंपरागत सत्ता की सारी अनुकूल स्थितियाँ होती हैं।

273

... Do you want an expansion of the Legislative council? Do you want that a few Indians shall sit on your representation in the House of Commons? Do you want a large number of Indians in the Civil Service? Let us see whether 50, 100, 200 or 300 civilians will make the Govt. our own... The whole civil service might be Indian, but the civil service must carry out orders—They can not direct. They can not decide the policy. One swallow does not make an summer. One civilian, 100, or 1000 civilians in the service of the British Govt. will not make the Govt. Indian. There are traditions, they are law, there are principles to which every civilian, be he black or brown or white, must submit, and as long as these tradition have not been altered, as long as these principles have not been unseated, as long as the policy has not been radically changed, the Government of England by Indian agency will not be made for self-government in this country...  
and tell  
If the Govt. were to come ~~to the colony~~  
"Like Swaraj," I would say thank you for the gift but I will not have that which I can not require by my own hand...  
or we shall in the imperative compell  
the submission to our will of any power that may set itself against us.

... the Pioneers bring in knowledge of law  
govt.: ... the Pioneers bring in knowledge of law

अगर क्रांतिकारी अपने विरोधी के सामने बड़ी ताकत खड़ी नहीं कर सकते, तो वे मिट जाएँगे और कुचल दिए जाएँगे।

दूसरी बात, क्रांति एक बार शुरू हो जाने पर यह जरूरी है कि पूरे संकल्प के साथ काम कर हमले का मुँहतोड़ जवाब दिया जाए। बचाव करने से हर एक सशस्त्र विद्रोह की मौत हो जाती है। दुश्मन से पूरी तरह लोहा लेने से पहले ही यह खत्म हो जाती है। दुश्मन को उस वक्त चौंकाया जाए, जब उसके सैनिक बिखरे हुए हों, और रोजाना नई कामयाबियाँ, चाहे कितनी भी छोटी हों, हासिल की जानी चाहिए। पहली कामयाबी से जो हौसला बढ़ा है, उसे बरकरार रखा जाना चाहिए। डाँवाँडोल तत्त्वों को आम बगावत के पक्ष में लामबंद करना जरूरी है, जो हमेशा ही ताकतवर के पीछे हो लेते हैं, और हमेशा अधिक सुरक्षित पक्ष तलाशते रहते हैं। एक शब्द में डेंटन के कहे अनुसार कार्रवाई करो, जो क्रांतिकारी नीति का सबसे बड़ा गुरु है। उसका एक ही मंत्र है—दुःसाहस...दुःसाहस...और फिर दुःसाहस!

\* नोटबुक में अगली लिखावट पृ. सं. 273 पर है। पृ. 272 तक सादे हैं। पीछे कभी ऐसे ही सादे पृष्ठ या अंतराल आए हैं। हो सकता है कि भगतसिंह ने अपनी 404 पृष्ठों की नोटबुक में अपने अध्ययन के विभिन्न विषयों के अनुसार अलग-अलग हिस्से निर्धारित किए हैं। यहाँ खत्म हुए हिस्से में पृ. 165 से 193 तक उनके नोट्स राज्य के विज्ञान पर स्वतंत्रता और संश्भूता की अवधारणाओं और उनके विकास पर तथा उसकी निरंतरता में फ्रांसीसी क्रांति और सोवियत पर केंद्रित रहे। अगले हिस्से में विभिन्न विविध विषयों पर उनकी टिप्पणियाँ और पुस्तकों के अवतरण दर्ज हैं। लेकिन इन सबसे एक सामान्य सूत्र यह है कि ज्यादातर तत्कालीन भारतीय स्थितियों और अन्य संबंधित मुद्दों के बारे में हैं। अगर समय या अवसर मिलता तो इनका विकास कैसा होता, यह सोचना अद्भुत है।

\* ऐज 194 से 272 तक खाली ऐज हैं।

...क्या तुम लेजिस्लेटिव काउंसिलों का विस्तार चाहते हो? क्या तुम चाहते हो कि कुछ भारतीय हाउस ॲफ कॉमंस में तुम्हारे प्रतिनिधि बनकर बैठें? क्या तुम सिविल सर्विसेज में बहुत अधिक संख्या में भारतीयों की उपस्थिति चाहते हो? आइए, देखें कि क्या 50, 100, 200 या 300 सिविलियन सरकार को हमारी अपनी बना देंगे—पूरी सिविल सर्विस भारतीय होनी चाहिए, लेकिन सिविल सर्वेंट्स को आदेशों का पालन करना होता है—वे आदेश नहीं दे सकते, वे नीति नहीं बना सकते। एक अबाबील से ग्रीष्म नहीं आती। ब्रिटिश सरकार की सेवा में एक

सिविलियन, 100 अथवा 1000 सिविलियन सरकार को भारतीय नहीं बना सकते। परंपराएँ हैं, कानून हैं, नीतियाँ हैं, जिनका पालन प्रत्येक सिविलियन को करना पड़ता है, चाहे वह काला हो या गोस; और जब तक ये परंपराएँ नहीं बदल जातीं, जब तक ये सिद्धांत नहीं बदल जाते, जब तक यह नीति आमूल रूप से नहीं बदल जाती, सिफ़ यूरोपियनों की जगह भारतीयों को बैठा देने से इस देश में स्वराज नहीं आ सकता।

अगर आज सरकार मेरे पास आकर कहे कि "स्वराज ले लो", तो मैं कहूँगा कि इस तोहफे के लिए शुक्रिया, लेकिन मैं उस चीज़ को कबूल नहीं करूँगा, जो मैंने अपने बल पर हासिल न की हो।

कोई भी सत्ता जो हमारे विरुद्ध जाती है, उसे हम बरबस अपनी मर्जी के आगे झुकने के लिए बुनियादी चीज़ सरकार की गरिमा है।

“मुख्य चीज़ है सरकार की प्रतिष्ठा।

278

Is really self-government within the Empire a practicable idea? What would it mean? It would mean either no real self-government for us or no real over lordship for England. Would we be satisfied with the means of self-government? If not, would England be satisfied with the means of over lordship? In either case England would not be satisfied with a necessary over lordship, and we refuse to be satisfied with a shadow self-government. And therefore no self-government compromise is possible under such circumstances between self-govt. in India and the over lordship of England. If self-govt. — (real) is conceded to us, what would be England's position not only in India, but in British Empire? Self-govt. means the right of self direction; it means no right of self control; it means no right of the people to impose protective and prohibitive tariffs on foreign imports. If we have the right of self direction, what shall we do? We shall not try to be engaged in this up-hill work of industrial boycott. And we shall do what every nation has done. Under the circumstances in which we live now we shall impose a heavy protective protective tariff upon every kind of textile fabric from Manchester, upon every blade of knife and candle from Leeds. We shall refuse to grant admittance to a British and into our territory, he would not allow British Capital to be engaged in a眷游 movement against us, as it is now engaged. We would not allow any right to the British capitalists to rig up

क्या एंपायर के भीतर स्वराज सचमुच एक व्यावहारिक विचार है? इसका क्या मतलब होगा? यह न तो हमारे लिए वास्तविक स्वराज होगा और न इंग्लैंड में बैठे हमारे आकाओं के लिए। क्या हम स्वराज की छाया से संतुष्ट हो जाएँगे? यदि नहीं, तो क्या इंग्लैंड अपने स्वामित्व की छाया से संतुष्ट हो जाएगा? दोनों ही मामलों में इंग्लैंड स्वामित्व की छाया से संतुष्ट नहीं होगा। हम स्वराज की छाया से संतुष्ट होने से इनकार करते हैं। लिहाजा, भारत में स्वराज और इंग्लैंड के स्वामित्व के बीच की स्थिति में कोई समझौता मुमकिन नहीं है। यदि हमें स्वराज (वास्तविक) दे दिया जाए तो इंग्लैंड की न केवल भारत बल्कि संपूर्ण ब्रिटिश एंपायर में क्या स्थिति होगी? स्वराज का मतलब है—स्व-कराधान का अधिकार, स्व-नियंत्रण का अधिकार। इसका मतलब है—विदेशी आयात पर लोगों को रक्षात्मक और प्रतिबंधात्मक टैरिफ लगाने का अधिकार। हमें स्व-कराधान का अधिकार मिल जाए, तो हम क्या करेंगे? हम औद्योगिक बहिष्कार के इस कठिन काम के पचड़े में पड़ने की कोशिश नहीं करेंगे। लेकिन हम वो करेंगे, जो हर एक राष्ट्र ने किया है। जिन परिस्थितियों में हम रह रहे हैं, उनमें हम मैनचेस्टर से आनेवाले कपड़े के हर एक इंच पर, लीड्स से आनेवाले चाकू के प्रत्येक ब्लेड पर एक भारी-भरकम, प्रतिबंधात्मक, रक्षात्मक टैरिफ लगा देंगे। हम अपने क्षेत्र में किसी भी अंग्रेज को प्रवेश की अनुमति नहीं देंगे। हम भारतीय संसाधनों के विकास में ब्रिटिश पूँजी नहीं लगाने देंगे, जो कि आज लगी है। हम ब्रिटिश पूँजीपतियों को खनिज संपदा का खनन कर अपने टापुओं में ले जाने का अधिकार नहीं देंगे। हमें विदेशी पूँजी की जरूरत होगी, लेकिन हम संपूर्ण विश्व के खुले बाजारों में विदेशी ऋण के लिए आवेदन करेंगे,

(शेष अगले पृष्ठ पर)

213

The mineral wealth of the land and to carry it to the market we shall want foreign capital. And we shall supply for foreign loans in the open markets of the whole world, guaranteeing the credit of the Indian Govt., the Indian Govt. for the expansion of the country. . . . And England's commercial with the world will increase in the way these are being furnished now under the condition of popular self-government. What if royal is within the Empire? Empress. And what would happen with in the Empire? It would mean that England would have to enter into some arrangement with us for some preferential tariff. England would have to come to our market as the condition that we would impose upon her for our purpose, of the right to open door in India, and after a while, when we have developed our resources a little and organized our individual life, we would want the same done not only to England, but to every part of the British Empire. When you think it is possible for a state existing like England with a peaceful population, although she fought so strenuously against us complete on fair and equitable terms with us, and next all India with immense natural resources, with her teeming population; when we most enormous population known to any part of the world?

If we have really self-government within the Empire, often 300 millions of people have that freedom, often 300 millions of people have that freedom of the Empire, the Empire would consist in British. It would be the Indian Empire. . . .

| B.C. Parl.  
New York 1907.

जिसकी अदायगी के लिए भारत सरकार, भारतीय राष्ट्र की गारंटी होगी। लोकप्रिय स्वराज में इंग्लैंड के आर्थिक हितों का उस तरह संरक्षण नहीं होगा, जैसा कि अभी हो रहा है, भले ही यह एंपायर के भीतर ही क्यों न हो। परंतु एंपायर के भीतर इसका क्या मतलब होगा? इसका मतलब होगा कि कुछ वरीयता प्राप्त टेरिफ के लिए हमारे साथ कुछ समझौते। इंग्लैंड को हमारे बाजारों में उन शर्तों पर आना होगा, जो हम उस पर आरोपित करेंगे। यदि वह भारत में खुला दरवाजा चाहेगा और कुछ समय पश्चात्, जब हम अपने कुछ संसाधन बढ़ा लेंगे और अपने औद्योगिक जीवन को संगठित कर लेंगे, तब हम अपना दरवाजा सिर्फ इंग्लैंड के लिए ही क्यों, बल्कि संपूर्ण ब्रिटिश एंपायर के प्रत्येक अंग के लिए खुला रखेंगे। और क्या तुम यह समझते हो कि इंग्लैंड जैसे मुट्ठी भर आबादी वाले छोटे से देश, भले ही वह बहुत धनवान हो, के लिए भारत जैसे असीम प्राकृतिक संपदा वाले देश के साथ ईमानदारी और बराबरी से मुकाबला करना संभव होगा, जहाँ की आबादी बहुत ज्यादा है? यहाँ के लोग दुनिया के किसी भी भाग के लोगों की तुलना में सबसे ज्यादा सीधे-सचे और संयमी हैं।

यदि एंपायर के भीतर, वास्तविक रूप से हमारा स्वराज हो, यदि 30 करोड़ लोगों को एंपायर में वह आजादी मिल जाए, तो एंपायर ब्रिटिश नहीं रह जाएगा। यह भारतीय एंपायर हो जाएगा।

— बि.चं. पाल

न्यू स्प्रिट, 1907

\* नोट : बिपिनचंद्र पाल (1858-1932) स्वाधीनता संग्राम के दौरान बंगाल में एवं अन्यत्र स्वदेशी एवं विदेशी वस्तुओं के बहिष्कार आंदोलन के प्रमुख नेता। बाल गंगाधर तिलक, लाला लाजपत राय और बिपिन चंद्र पाल, यानी 'लाल-बाल-पाल' की तिकड़ी ने कांग्रेस में गरम दल का नेतृत्व किया।

276

*Sindhu Aṅgikā*

It may seem to us to present in many of its aspects an almost unthinkable combination of spiritualistic idealism and of gross materialism, of asceticism and of sensuousness, of overweening arrogance when it identifies the human self with the universal self and merges man in the Divinity and that Divinity in man, and of demoralising pusillanimity when it proclaims that life itself is but a painful illusion and that the sovereign remedy and end of all evils is non-existence.

Child. 26 p  
Sindhu Aṅgikā

*Educational Policy:-*

The main original object of the introduction of Western Education into India was in training of a sufficient number of young Indians to fill the subordinate posts in the public offices with English-speaking natives. P. 34

## हिंदू सभ्यता

हमें ऐसा लग सकता है कि अपने कई पक्षों की दृष्टि से यह एक ऐसा लगभग अकल्पनीय सा समुच्चय है, जिसमें एक तरफ आदृश्यात्मिक भाववाद है, तो दूसरी तरफ स्थूल भौतिकवाद भी है, एक तरफ इंद्रियनिग्रह तो दूसरी तरफ इंद्रिय लिप्तता भी है, एक तरफ यहा मानवीय आत्मा को वैचिक आत्मा के साथ एकाकार करने का दर्प भरा दावा करती है तथा मनुष्य की दैवीयता में और दैवीयता को मनुष्य में समाहित करती है, तो दूसरी तरफ वह हताश कर देने वाला निराशावाद भी है, जिसके तहत वह उपदेश देती है कि जीवन अपने आप में दुःखदायी प्रतीति के अलावा और कुछ नहीं है और इससे मुक्ति का एवं सभी बुराइयों के अंत का एकमात्र उपाय अस्तित्वहीन हो जाने में ही है।

शिरोल, पृ. 26  
इंडियन अनरेस्ट

## शिक्षा नीति

भारत में पश्चिमी शिक्षा लाने का मुख्य मूल उद्देश्य यह था कि अंग्रेजी बोलने वाले पर्याप्त संख्या में देशी युवा लोग तैयार किए जाएँ, जो सरकारी दफ्तरों में मातहत के रूप में काम कर सकें।

\* नोट : सर वैलेन्टन शिरोल (1858-1929) एक मशहूर ब्रिटिश पत्रकार, जिसने भारत का 17 बार दौरा किया, उसने भारत में संबंधित दो प्रमुख पुस्तकें लिखीं—‘इंडियन अनरेस्ट’ और ‘इंडिया : ओल्ड एंड न्यू’।

277

How many of the Western educated Indians who have thrown themselves into political agitation against the tyranny of the British bureaucracy have ever raised a finger to free their own countrymen from the tyranny of those social evils? How many of them are entirely free from it themselves, or, if free, have the courage to act up to their opinion?  
India Old & New D. 107

ऐसे कितने पश्चिमी शिक्षा प्राप्त भारतीय हैं, जिन्होंने ब्रिटिश नौकरशाही के जुलमों के खिलाफ राजनीतिक आंदोलन में भाग लिया हो और उन सामाजिक बुराइयों से अपने देशवासियों को मुक्त करने के लिए उँगली भी उठाई हो? उनमें से कितने लोग स्वयं इससे मुक्त हैं? अथवा, यदि मुक्त हैं तो क्या उनमें अपने अभिमत के अनुसार कार्य करने की हिम्मत है?

—इंडियन ओल्ड ऐड न्यू (पृ. 107)

278

No Indian  
Parliament  
can exist

The Indian National Congress assumed  
unto itself almost from the beginning  
the function of a Parliament. There was  
and is no room for a Parliament in  
India, so far as, so long as British  
rule remains a reality, the growth of  
India, as Lord Morley has plainly stated,  
must be an autocracy—benignaut  
and full of sympathy with Indian ideas,  
but still an autocracy 154. Unrest.

Aim of  
Indian  
Congress

The objects of the Indian National  
Congress are the attainment by their  
people of "a system of Govt.  
similar to that enjoyed by the self-  
governing members of the British  
Empire and a participation by  
them in the rights and responsibilities  
of the Empire on equal terms."

Making up from the Chair in 1907  
Lahore Session of the Congress

## किसी भारतीय संसद् की कल्पना नहीं

इंडियन नेशनल कांग्रेस ने प्रायः शुरू से ही संसद् का दायित्व अपने ऊपर मान लिया। भारत में संसद् के लिए न कोई गुंजाइश थी और न है, क्योंकि जब तक ब्रिटिश शासन एक हकीकत है, तब तक, जैसा कि लॉर्ड मोसली ने स्पष्ट कहा, भारत सरकार तानाशाही-परोपकारी रहेगी और भारतीय विचारों के साथ यह सहानुभूति से भरी रहेगी, लेकिन फिर भी यह स्वेच्छाचारी ही होगी।

— 154, अन्नरेस्ट

————— : \* : —————

## कांग्रेस का लक्ष्य अथवा उद्देश्य

इंडियन नेशनल कांग्रेस का उद्देश्य है—भारत के लोगों द्वारा शासन की ऐसी व्यवस्था हासिल करना, जो ब्रिटिश एंपायर के स्वराज सदस्यों को प्राप्त है और जिसमें एंपायर के अधिकारों तथा दायित्वों में उनकी बराबरी की सहभागिता हो।

— अध्यक्षता करते हुए मालवीयजी  
कांग्रेस का लाहोर सत्र, 1909

279

*Re: Constitution of Free India*

No one but the Mother herself will know  
can determine when once she comes to herself and stands  
free what constitution shall be adopted by her principles  
of her life after the revolution is over.... without going  
into detail we may mention: the most, that whether the  
head of the Imperial Govt of the Indian Nation be a President or a  
King depends upon how the revolution develops itself.... The  
Mother must be free, must be fair and upright, must  
make her will supreme. Then it may be that she gives out this  
She will either wear a simple crown on her head or a  
Republican mantle round her sacred form.  
*Forget not, O Princes! that a short account will*  
*be asked of your doings and non-doings, and a people ready-*  
*born will not fail to pay in the coin you paid. Everyone who*  
*shall have actively betrayed the trust of the people, shall incur*  
*his fate; and deserves his blood by disgracing himself*  
*against the Mother -- he shall be exposed to dust and ashes.*  
*... do you bold our give earnestness? If so rear the name of*  
*Shivaji and be humble. In the name of that master, O*  
*Indian princes, we ask you to think solemnly and deeply upon*  
*these words. Choose as you will and go with sleep, sleep you low.*  
*Choose whether you shall be the first of this nation's fathers*  
*or the last of nation's tyrants.*

*Republ.ian League  
Chair. of Province No.*

*In conclusion:*  
From the political point of view the conversion  
of so many millions of the population of India to the faith  
of their rulers would open the prospect of such numbers  
that I need not expect little upon them. P. 159

————— : \* : —————

## संदर्भ : स्वतंत्र भारत का संविधान

क्रांति संपन्न हो जाने के बाद कोई और नहीं बल्कि स्वयं माँ (भारत माँ) की आवाज ही यह निश्चित करेगी और कर सकती है कि आजाद होने के बाद उसके द्वारा अपने जीवन के मार्गदर्शन के लिए किस प्रकार का संविधान अपनाया जाए—विस्तार में जाए बिना हम इतना ही उल्लेख कर सकते हैं। इंपीरियल गवर्नरमेंट ऑफ इंडियन नेशन का प्रमुख कोई राष्ट्रपति होगा अथवा राजा, यह इस बात पर निर्भर करता है कि क्रांति क्या स्वरूप लेती है—माँ को स्वतंत्र होना है, समन्वित और संगठित होना ही है, उसकी इच्छा ही सर्वोंपरि होगी। उसके बाद यह हो सकता है कि वह इच्छा व्यक्त करे कि वह अपने सिर पर राजमुकुट पहनेगी अथवा अपने पवित्र शरीर पर गणतंत्र का बाना पहनेगी।

ओ राजाओ ! यह मत भूलो कि तुमने क्या किया और क्या नहीं किया, इसका सख्ती से हिसाब माँगा जाएगा, और नया जन्म लेने वाले लोग तुम्हारे साथ वही व्यवहार करने में चूक नहीं करेंगे, जो तुमने उनके साथ किया है। जिसने भी लोगों के साथ विश्वासघात किया है, अपने पिता को नकारा है, माँ के विरुद्ध जाकर अपने रक्त को कलंकित किया है—वह कुचला जाकर धूल और राख बन जाएगा—क्या हमारी सच्चाई में तुम्हें शक है? यदि हाँ, तो धींगरा का नाम सुनकर गूँगे हो जाओ। उस शहीद के नाम पर, ओ भारतीय राजाओ, हम तुमसे इस बात पर गंभीरता और गहराई से विचार करने का आग्रह करते हैं। तुमको जो अच्छा लगे, वह करो और तुम जो बोआओ, वही काटोगे। चुनाव करो कि तुम राष्ट्र के प्रथम जनक बनोगे या राष्ट्र के अंतिम अत्याचारी?

—इंडियन अर्नेस्ट  
'चूज ओ' प्रिंसेप

————— \* —————

## अछूत

राजनीति दृष्टि से इतने लाखों भारतीयों द्वारा अपने शासकों का धर्म अपना लेने से ऐसे परिणामों की संभावनाएँ खुल जाएँगी कि जिसके बारे में मुझे विस्तार से बताने की जरूरत नहीं है।

(प. 114)

280

*Harkishan Singh*

Tempted by god some native devils from India  
The devils of India — the police — arrested these gods  
new leaders Shanti and Bhagat who worked for the  
freedom of their country by sacrificing their  
relatives and dedicating their lives to the performance  
of the great ceremony of "Jagran" (ritual) performing  
would be greater if now devil's in human  
form Andholt British began to have too much  
harm to the army (to the gallery). Powerless  
(the murderer of Nature) all honour to your  
parents to glorify them, it shows the highest  
degree of courage disregarding the gallantry,  
short than life you removed the figure of  
that remove from the world, not long ago  
the while by force and trick falsehood  
from the Indians. Great mean crook  
Shameless — a man who exposed the  
Cause of the country of India in British  
Who put a stain on the name of us together  
for the taking field — today you have removed  
that find from the land of India.  
From Naren Singh to Tilot Chakravarti  
all hand offering through the machine  
machinism of that friendless wizard

## हत्या नहीं यज्ञ

सोने के लालच में इनसान के रूप में कुछ देशी शैतान पुलिसवालों ने, जो भारत के कलंक थे, बीरेंद्र घोष और अन्य महान् लोगों को गिरफ्तार कर लिया, जो अपने देश की आजादी के लिए अपने हितों का बलिदान करते हुए बम बनाने के पवित्र यज्ञ को संपन्न करने में जीवन समर्पित किए थे। मनुष्य के रूप में सबसे बड़े शैतान और आशुतोष विश्वास ने इन नायकों का फाँसी के फंदे का रास्ता बनाना शुरू कर दिया। शाबाश चार! (विश्वास की हत्या करनेवाला)। तुम्हारे माता-पिता की जय जयकार! वे धन्य हैं, जिन्होंने उच्चतम साहस का प्रदर्शन किया और छोटे से जीवनकाल की अवहेलना की। तुमने उस राक्षस को दुनिया से मिटा दिया। बहुत पुरानी बात नहीं है, जब गोरों ने ताकत और चालाकी से भारत को भारतीयों से हथिया लिया। उस नीच शैतान शम्स-उल-आलम को, जिसने उस आलमगार पादशा का रास्ता अपनाया, जिसने सोने की मुद्रा पाने के लालच में पूर्वजों के नाम को कलंकित किया। आज उस दुराचारी को तुमने भारत की इस पवित्र धरती से मिटा दिया है, जो सोने का लोभी था—तुमने भारत की पवित्र भूमि से हटा दिया। नरेन गोसाई से लेकर तलित चक्रवर्ती तक, सभी उन शैतानों की चालबाजियों के कारण

सरकारी गवाह बन गए।

\* नोट : (1) शम्स-अल-आलम की हत्या के तुरंत बाद निम्नलिखित अपील क्रांतिकारियों द्वारा कलकत्ते में जारी की गई—‘हत्या नॉव यज्ञ’ (हत्या नहीं यज्ञ)। नकद इनाम : एक यूरोपीय चांडे भेदियों का सिर काटने पर 50वाँ अंक कलकत्ता, रविवार, चैत्र अष्टमी 1361।

281

Shamas-ul-alam and by his torture had  
you not removed that ally of the monsters  
could there be any hope for India?  
many have raised the cry that  
to rebel is a great sin but what is  
rebellion. Is there anything in India, is  
rebel against? Can a Feringhi be  
recognised as the King of India  
whose very touch whose mere shadow  
compels Hindus to purify themselves.  
There are merely Western  
robbers looting India.... Extinguish them  
ye good sons of India! here ever you find them  
without mercy, and with them their spies  
and their secret agents. Last year  
nineteen lakh of men died of fever, small  
pox, cholera, plague and other diseases  
in Bengal alone. Think yourself fortunate  
that you were not counted amongst those but  
remember that plague and cholera may  
attack you tomorrow, and is it not better for  
attack you than heroes?  
When God has so ordained, think ye  
not that this auspicious moment is  
the duty of every good son of India to slay  
these white enemies? Do not allow yourselves

Shamas-ul-Alam and by his torture had you not removed that ally of monsters, could there be any hope for India.

Many have raised the cry that to rebel is a great sin, but what is rebellion? Is there anything in India to rebel against? Can a Feringhi be recognised as the King of India whose very touch, whose mere shadow compels Hindus to purify themselves?

These are merely Western robbers looting India. . . . Extinguish them, ye good sons of India! wherever you find them, without mercy, and with them their spies and secret agents. Last year, 19 lakh men died of fever, small pox, cholera, plague and other diseases in Bengal alone. Think yourself fortunate that you were not counted amongst those, but remember that plague and cholera may attack you tomorrow, and is it not better for you to die as heroes?

When God has so ordained, think ye not that at this auspicious moment, it is the duty of every good son of India to slay these white enemies? Do not allow yourselves.

P.342. notes }

to die of plague and cholera thus polluting  
the sacred soil of the Mother India. On Shabden  
are one pride for discrimination between  
virtue and vice. Om shantra has repeated  
till us and in killing of these who is  
feared and from others as sacrifices  
is equal to a great ceremonial sacrifice  
(asthamash yagna). Come one and  
all, let us offer our sacrifice  
before the altar in Chorus and  
pray and in this ceremony will  
Shankha elephant may perish in  
Honor as the vipers perished in  
the perfect slaying ceremony of  
ganga yagna, keep in mind that  
it is not murder but yagna; a  
sacrificial rite.

J. U.

Total electors in India 68,00,000 viz 2 $\frac{3}{4}$  lakhs  
Total population throughout India and in direct  
British administration, excluding the areas of  
which the 91% elect were not to be allowed.  
19 G.O.M.

- (2) वीरेंद्र धोष : अरविंद धोष के छोटे भाई और क्रांतिकारियों के मानिकतला युप के एक नेता, जो अलीपुर षड्यंत्र केस मई 1909 के अभियुक्त थे। वे 'युगांतर' नामक क्रांतिकारी पत्र भी प्रकाशित करते थे।
- (3) आशुतोष विश्वास : क्रांतिकारियों को सजा दिलाने के लिए तमाम गलत तरीके अपनाने वाला अंग्रेजपरस्त एक सरकारी वकील, जिसे अलीपुर पुलिस कोर्ट से बाहर क्रांतिकारी चारुचंद्र युहा ने गोली मारकर मौत के घाट उतार दिया।
- (4) चारुचंद्र युहा : एक वीर तरुण, जिसने जन्म से ही दाँह हाथ की हथेली न होने के बावजूद देशद्रोही सरकारी वकील आशुतोष विश्वास को गोली मार दी। उसे 10 मार्च, 1909 को अलीपुर सेंट्रल जेल में फाँसी दे दी गई।
- (5) शम्स-अल-आलम : बिटिश पुलिस का सी.आई.डी. इंस्पेक्टर, जो क्रांतिकारी की सुरागरशी करता था। उसे वीरेंद्रनाथ दत्त ने 24 जनवरी, 1910 को गोली से उड़ा दिया। इस नौजवान क्रांतिकारी को 21 फरवरी, 1910 को फाँसी दे दी गई।
- (6) आलमगीर पादशाह : मुगल बादशाह औरंगजेब, जिससे दिल्ली की बादशाहत पाने के लालच में अपने तीन भाइयों—दारा, शुजा और मुराद को मरवा डाला।

तुमने शम्स-उल-आलम और उसके जुल्म को मिटा दिया। अगर तुमने राक्षसों के उस साथी को नहीं मिटाया होता, तो क्या भारत के लिए कोई उम्मीद बची रह जाती?

अनेक लोग चिल्लाएं कि बगावत करना बड़ा पाप है, लेकिन बगावत क्या है? क्या भारत में ऐसा कुछ है, जिसके खिलाफ बगावत की जाए? क्या किसी फिरंगी को भारत का राजा माना जा सकता है; जिसे छू लेने और उसकी छाया पड़ जाने भर से हिंदुओं को स्वयं को पवित्र करने के लिए नहाना पड़ता है?

ये सिर्फ पश्चिमी डाकू हैं, जो भारत को लूट रहे हैं—ओ भारत के सपूतो, इन्हें जड़ से मिटा दो! वे जहाँ भी मिलें, उन्हें बिना किसी दया के, उनके जासूसों सहित खत्म कर दो। पिछले साल अकेले बंगाल में 19 लाख लोग बुखार, चेचक, हेजा, प्लेग और अन्य बीमारियों से मर गए। तुम स्वयं को भाग्यशाली समझो कि उनमें तुम शामिल नहीं थे, लेकिन याद रखो कि प्लेग और हेजा तुम पर कल आक्रमण कर सकते हैं, और क्या तुम्हारे लिए यह बेहतर नहीं होगा कि तुम वीरों की मौत मरो?

अगर भगवान् की ऐसी इच्छा है, तो इस शुभ क्षण में तुम यह मानो कि भारत के प्रत्येक ईश्वर पुत्र का यह कर्तव्य है कि वह इन गोरे दुश्मनों को खत्म करे।

खुद को प्लेग और हैंजा से मत मरने दो, जिससे भारत माता की पवित्र माटी दूषित हो जाएगी। गुण और अवगुण में भेद करने का विवेक हमारे शास्त्रों ने हमें दिया है। हमारे शास्त्र हमसे बार-बार कहते हैं कि इन गोरे शैतानों और उनके मददगारों तथा उन्हें उकसाने वालों को मारना एक महान् यज्ञ (अश्वमेध यज्ञ) के समान है। आओ, सभी आओ! हम सब मिलकर एक साथ यज्ञ करें, और इस समारोह में यह प्रार्थना करें कि सभी गोरे सर्प इसकी लपटों में उसी तरह जल जाएँ, जैसे जन्म (जय) यज्ञ में नाग जलकर भस्म हो गए थे। याद रखो कि यह हत्या नहीं यज्ञ है —एक अनुष्ठान!

—आई.यू. (पृ. 342)

“भारत में कुल निर्वाचक 62,00,000, अर्थात् भारत की कुल आबादी का 23/4 प्रतिशत, जो ब्रिटिश प्रशासन के सीधे अधीन है। इसमें वे क्षेत्र शामिल नहीं हैं, जहाँ 1919 का ऐक्ट लागू नहीं हुआ।”

— आई.ओ.एन. (पृ. 194)

*John D. & New - Ch. 2 v.*

282

"The British public will have to become  
used if they do not want to do justice to itself.  
Let us however study of every nation's history  
in Europe." Hartmann (Hannover City) 191

Revol. & Urbanization:

Some official investigations have been done  
and in Germany results have been gathered without  
any expense for geography, etc., to prevent  
countries under investigation from becoming  
candidates for the next. Countries having  
this kind of smaller towns and a dense  
population are naturally more difficult to observe  
and were not included in the first work.  
The people could be described as "good" and  
"thorough," our study being on the local level, and  
government not disturbing the "good" population

*John D. & New - Ch. 2 v.*

191

## भारत पुराना और नया : शिरोल वी.

“ब्रिटिश लोगों को सावधान हो जाना चाहिए कि अगर वे इनसाफ करना नहीं चाहते, तो एंपायर को खत्म करना प्रत्येक भारतीय का लाजमी फर्ज होगा।”

—महात्मा (नागपुर कांग्रेस) (पृ. 191)

————— : \* : —————

## ग्रामीण और शहरी प्रश्न

सरकारी चालाकी से, भूगोल की अनदेखी कर दूर-दराज शहरों के एक साथ समूह बना दिए गए, ताकि अवांछित रूप से प्रगतिशील राजनीति विचार से जुड़े शहरी लोग ग्रामीण निर्वाचन क्षेत्र से चुनाव नहीं लड़ सकें, जिनमें अनेक छोटे कस्बे स्वाभाविक रूप से विलीन हो जाते। इस पुराने विश्वास पर आधारित यह अंतिम प्रयास था कि पंजाब की आबादी को बकरों और भेड़ों में विभाजित किया जा सकता है। बकरियाँ ‘गद्दार’ शहरवासी और भेड़ें ‘वफादार’ किसान होंगे।

————— : \* : —————

खालसा कॉलेज 1802 में खोला गया

\* नोट : (1) शम्स-अल-आलम की हत्या के तुरंत

28<sup>th</sup>  
July 1947  
Sectarianism?

“Only the path of a 'Naked man' is difficult, and it is not surprising that Gandhi has recently tried to repudiate the title — and its responsibilities. His influence in India is steadily waning, but his ascetic pose and the vague impracticable 'Tolstoyan' theory which he so skillfully summarizes in great moral truths, seem to have deluded many well meaning but vacuous-minded people in semi-ruled England and to some even in logical France who are on the lookout for a new light from the east.” P. 65

Informant:  
The failure of the authorities in that case to conceal and protect the informer (or informer's son) Conroy who betrayed the Dierville gang of revolutionaries and due to those evidence Brady, Fitzgerald and Muller were hanged for the Phoenix Park Double Murder is a chief and under secretaries; so the informant was shot dead in broad day by a young revolutionary (O'Donnell) even though his assassin was brought to justice. Now I believe, one of the chief reasons why the supply of that contemptible useful class, previously so common in British Conspiracies, ran dry at the source. As Lieutenant Governor of Punjab, before and during the Great War, I had deal with many revolutionary Conspiracies, in unravelling which the Guru informer played a considerable role, and our precautions were so thorough that not in a single case did an informer come to any injury.

## भारत को जैसा मैंने जाना

“सचमुच ‘महात्मा’ का रास्ता कठिन है, और इसमें आश्चर्य की कोई बात नहीं है कि गांधी ने हाल ही में इस पदवी और इसकी जिम्मेदारियों को अस्वीकार करने का प्रयास किया। भारत में उनका प्रभाव लगातार कम हो रहा है, परंतु उनका वैराग्यपूर्ण आचरण और अस्पष्ट अव्यावहारिक टॉलस्टायवादी सिद्धांत, जिन्हें वह महान् नैतिक मूल्य घोषित करते हैं, से लगता है भावुक इंग्लैंड में बहुत से भले लेकिन कमज़ोर दिमाग के लोग और फ्रांस में कुछ विवेकशील लोग भ्रमित हो गए हैं, जो पूरब से किसी नई रोशनी आने की उम्मीद रखते हैं।

(पृ. 65)

## मुख्यबिर

उस मामले में मुख्यबिर (अथवा जेम्स केरी, जिसने क्रांतिकारियों के अजेय गिरोह को धोखा दिया और जिसकी गवाही के कारण ब्राडी, फिट्जहर्बर्ट और मुलेन को फोनिक्स पार्क दोहरी हत्या, अर्थात् चीफ और अंडर-सेक्रेटरी की हत्या के लिए फाँसी दी गई) मुख्यबिर को डरबन में एक युवा क्रांतिकारी ओ'गोनेल ने गोली मार दी, को छुपाने और बचाने में अधिकारी असफल रहे, हालाँकि उसके हत्यारे को सजा मिली। मेरा मानना है कि इस तरह की अवहेलना करनेवाले लेकिन उपयोगी वर्ग की, जो पहले आइरिश षड्यंत्रों में बहुत सामान्य रूप से पाए जाते थे, आपूर्ति स्रोत से ही सूख गई। महायुद्ध के पहले और इसके दौरान पंजाब के लोफिनेंट गवर्नर के रूप में मुझे अनेक क्रांतिकारी षड्यंत्रों का सामना करना पड़ा, जिनका पर्दाफाश करने में चतुर मुख्यबिरों की महत्वपूर्ण भूमिका थी। हमारे एहतियादी कदम इतने पक्के होते थे कि

(शेष अगले पृष्ठ पर)

————— : \* : —————

285

One can imagine how thoroughly the Indian conspirator, with his low cunning, abnormal vanity, intense aptitude for intrigue, and capacity for glossing over unpleasant facts, was at home in this atmosphere  
P. 187  
George Gissing

My Sanyasi  
In fact the Arya Samaj is a nationalised revival against Western influence; it urges its followers in the Self-Respect Broadsheet, the authoritative work of Dayanand, who was the founder of the sect, to go back to the Vedas, and to seek its golden future in the imaginary Golden East of the Aryas. The Self-Respect Broadsheet also contains arguments against non-Hindu rule, and a leading organ of the sect a few years ago claimed Dayanand as the real author of the doctrine of Swaraj.

However, the Arya Samaj in 1907 thought wise to publish a resolution to the effect that no mischievous people here and there spread rumors hostile to them, the organization in reflecting its old creed declared that it had no connection of any kind with any political body or with any political agitation in any shape. While accepting this declaration and dissociating the Samaj entirely from extraneous politics, it should be noted in fairness to the orthodox Hindus that while the Samaj does not include perhaps more than 5% of the Hindu population of the Punjab, an enormous proportion of the Hindus converted to Sikhism and other political offshoots from 1907 down to the present day are members of the Samaj.  
P. 188 2nd

एक भी मामले में किसी मुख्यिक को कोई नुकसान नहीं हुआ। कल्पना की जा सकती है कि भारतीय प्रश्न्यंत्रकारी ने अपनी घटिया धूर्ता, अहंकार, जन्मजात प्रश्न्यंत्रकारी प्रवृत्ति के कारण और अप्रिय तथ्यों पर परदा डाल कर किस तरह इस वातावरण में स्वयं को सुरक्षित रखा।

—इंडिया एज आई नो इट (पृ. 187)

: \* :

## आर्य समाज

वास्तव में आर्य समाज पश्चिमी प्रभाव के विरुद्ध एक राष्ट्रवादी पुनर्जागरण है। इसके संस्थापक दयानंद के प्रामाणिक ग्रंथ 'सत्यार्थ प्रकाश' में इसके अनुयायियों से वेदों की ओर लौटने तथा आर्यों के काल्पनिक स्वर्णिम अतीत में अपना भविष्य खोजने का आवान किया गया है। 'सत्यार्थ प्रकाश' में गैर-हिंदू शासन के विरुद्ध भी दलीलें दी गई हैं। कुछ वर्ष पहले इस पथ के एक प्रमुख अंग ने दावा किया कि स्वराज सिद्धांत के मूल जनक दयानंद ही हैं।

बहरहाल, 1907 में आर्य समाज ने इस आशय का संकल्प पारित करना उचित समझा कि चूँकि उनके विरोधी शाराती लोग यहाँ-वहाँ अफवाहें फैला रहे हैं, लिहाजा यह संगठन अपने पुराने धर्ममत को दोहराते हुए घोषणा करता है कि इसका किसी भी तरह के राजनीति संगठन अथवा राजनीति आंदोलन से कोई संबंध नहीं है। इस घोषणा को गरमपंथी राजनीति से समाज के विच्छेद को स्वीकार करते हुए कट्टरपंथी हिंदुओं के साथ ईमानदारी बरतते हुए यह माना जाना चाहिए कि समाज में जहाँ पंजाब की हिंदू आबादी के 5 प्रतिशत से ज्यादा लोग शामिल नहीं हैं, 1907 से अब तक जिन हिंदुओं को देशद्रोह तथा अन्य राजनीति अपराधों में सजा दी गई, उनमें से बड़ी संख्या में लोग इस समाज के सदस्य हैं।

: \* :

286

### Statistical figures about India:

In England & Wales  $\frac{4}{5}$  of people live in towns.

Standard of urban life  
begins when 1000 people  
live together. By year  
Municipal drainage,  
lighting & water supply  
can be guaranteed.

India (British)

Out of total  $264,000,000$ ,  
 $22,600,000$  live  
in villages.

England in normal times give  
to Industry 58% of people to Industry  
8% to agriculture.

India gives 71% to agriculture  
12% to Industry

5% to trade

2% to domestic service

1% to independent Professions

$1\frac{1}{2}$ % to Govt Service  
including Army.

In whole of India 226 millions out of 315 millions  
are supported by soil.

20.8 millions of them live or depend directly  
upon the agriculture.

(Montford Report)

## भारत के बारे में राजनीतिक आँकड़े

इंग्लैंड और वेल्स में 4/5 आबादी शहरों में रहती है। शहरी जीवन का मापदंड 1000 लोगों के साथ रहने से शुरू होता है। तभी म्यूनिसिपल डेनेज, बिजली और पानी की आपूर्ति की व्यवस्था हो सकती है।

भारत (ब्रिटिश) की कुल 244000,000 आबादी में से 226000,000 आबादी गाँवों में रहती है।

सामान्य समय में इंग्लैंड में आबादी का

58% उद्योगों में संलग्न रहता है,

8% कृषि क्षेत्र में,

भारत में 71% लोग कृषि में,

12% उद्योगों में,

5% व्यापार में,

2% घरेलू सेवा में,

1½% स्वतंत्र व्यवसाय में,

सेना सहित 1½% शासकीय सेवा में संलग्न है।

संपूर्ण भारत में, 315 मिलियन लोगों में से 226 मिलियन लोग अपना जीवन-यापन मिट्टी से जुड़े कामों से करते हैं। उनमें से 208 मिलियन कृषि करते हैं या सीधे उस पर निर्भर हैं।

— मैटफोर्ड रिपोर्ट

287

*Total Area . 1,900,000 square miles  
20 times of Great Britain  
700,000 square miles or more than  $\frac{1}{3}$  are under  
States' control. Indian States are less in number.  
Assam is greater than France.  
Madras & Poona are greater than Italy  
Separately.*

*Total population of India (1921 Census)*

*318,942,000*

*i.e.  $\frac{1}{5}$  of the whole human race.*

*247,000,000 are in British  
India and 71,900,000 in States.*

*2½ million persons were literate in  
English. 16 in every thousand males and 2  
in every thousand female.*

*Total Number of Venaculars is 222  
Total number of Villages 500,000*

\* नोट : मैटफोर्ड रिपोर्ट : भारतीय संवेधानिक सुधारों पर तैयार की गई रिपोर्ट। इसे मैटफोर्ड रिपोर्ट इसलिए कहा गया कि इसे सेक्रेटरी ऑफ स्टेट मॉण्टग्रू और गवर्नर जनरल चैम्सफोर्ड ने मिलकर तैयार किया था। यह रिपोर्ट 8 जुलाई, 1918 को प्रस्तुत की गई।

कुल क्षेत्र—1,800,000 वर्ग मील

ग्रेट ब्रिटेन से 20 गुना अधिक

700,000 वर्गमील, अथवा 1/3 से अधिक राज्यों के नियंत्रण में।

भारत में राज्यों की संख्या 600 है। बर्मा फ्रांस से बड़ा है।

मद्रास और बॉम्बे इटली से भी बड़े हैं।

#### भारत की कुल आबादी (1921 की जनगणना) —

318, 942, 000 अर्थात् पूरी मानव जाति का 1/5वाँ हिस्सा

247,000,000 ब्रिटिश भारत में और 71,900,000 राज्यों में हैं।

#### इंग्लिश में 2½ मिलियन लोग साक्षर थे—

प्रति हजार में 16 पुरुष और प्रति हजार में दो महिलाएँ।

देशी भाषाओं की कुल संख्या—222

गाँवों की कुल संख्या—500,000

288

*Suez Canal Opened in 1869.*

Total Export of India at that time was  
Rs. 80 crores = £ 80,000,000.  
1926-27 and preceding two years the average  
was £ 350 crores i.e. about £ 282,500,000.

Total population 319 millions out of which  
32½ millions i.e. 10.2% live in towns &  
Cities (urban) while in England the  
percentage is 79%.

And the most difficult part of the  
task will be to instil into the  
minds of the poor dwellers  
themselves the desire for  
something better.

P. 22  
*British Agent.*

□□□